16685

॥ श्रीजानकीवल्लभो जयति ॥

श्री १०८ श्री जानकीजीवन शरण जी कृत—

श्रीजानकी जीवन पदावली

जिसमें श्रीजानकी जीवन दर्पण, श्रीजानकी जीवन विनोद, श्रीजानकी जीवन रस माधुरी, श्रीजानकी जीवन पियूष, श्रीजानकी जीवन सुधा आदि का संग्रह है

प्रकाशकः—

श्री जानकीजीवन शरण जी महाराज

श्री लालसाहेब जी का दरबार

श्रीकनक भवन, अयोध्याजी

निछावर ६) रु०

श्रीराम विवाह पंचमी] सं० २०३४ [सप्तम बार १०००

॥ दो शब्द ॥

१९ वीं शती साम्प्रदायिक इतिहास में एक महत्वपूर्ण काल माना जाता है। इसी काल में रसिक भक्तों ने साधना परक प्राचीन साहित्य का मन्थन कर,उसका सुव्यवस्थित रूपदिया उन्होंने स्वयंभी अपने अपने भावानुसार अष्टयाम सेवा के पदोंको अथवा नित्य नैमित्तक और उत्सवों के पदोंको लिखकर साहित्य के भंडार को परिपूर्ण किया जिससे राम रसिक सम्प्रदाय की रेखाएं स्पष्ट हो गईं। वास्तव में अग्रदास बालअली, मधुराचार्य तथा रामसखे ऐसे तत्त्वस पूर्वाचार्यों द्वारा प्रवर्तित एवं पोषित रहष्य साधना का पूर्णतम विकास इसी काल में हुआ। इन्होंने साधना को सुबोध सुगम एवं सुरम्य बनाया।

जीवोद्धारक श्री१०८ स्वामी शीलमणिजी परमहंस के शिष्य श्री १०८ स्वामी सीताराम शरण परमहंस जी का जीवन चरित्र अद्भुद् घटनाओं से परिपूर्ण है। जब हमारे स्वामी जी का बालपन ही था तभी एक ब्राह्मण के वेश में श्री१०८ शीलमणिजी पधारे थे और कहा था कि "मैं निरंजनपुर का रहने वाला हूं। मैं साल भर से इस प्रान्त में इस बालक को खोजता फिरता हूं दैवयोग से आज अपेक्षित वस्तु प्राप्त हो गई।"

"पुत्रवती जुवती जग सोई। रघुपति भक्त जासु सुत होई॥"

इस रहस्यपूर्ण वचन को सुनकर वैराग्य की सीढ़ी पर चढ़ते हुए किस किस प्रकार आपने अपने लक्ष्य को प्राप्त किया यह एक लम्बी घटना है। परन्तु मुझे तो केवल यही कहना है कि सुयोग्य परिव्राजक श्री १०८ स्वामी सीताशरण परमहंस जी जिनके गुरु हों फिर शिष्य में गुरु परम्परा द्वारा जो जो सम्पतियाँ प्राप्त हुई हैं उनको जो जन रसलीन हैं वही समझ पायेंगे।

इसी परम्परा में श्री १०८ श्री जानकी जीवन शरणजी महाराज हैं जिन्होंने अच्छा खासा पदों का संग्रह किया है। आप

श्री लाल साहब दरबार श्री कनक भवन के महन्त हैं। इनके पदों में गुरु वन्दना, फूल बँगला, झूलन, रासलीला, विवाह, होली, बधाई, ज्योनार आदि समय–समय पर भावों के अनुसार अथवा उत्सवों पर माधुर्य्य रस में उद्वेलित होकर छन्द वद्ध किये हैं। आपके पदों में प्रसाद गुण कूट कूट कर भरा है। ऐसा ज्ञात होता है 'जनक लली' स्वयं पधार कर पदों को लिखवाती हैं। क्योंकि पदों में जो जो भाव आते हैं उससे अधिक भावों के बादल आकर मंडरातेहैं और एक अलीगढ़ निवासनी महिलाहै जो साक्षात माधुर्य्य भावों से ओत प्रोत है। यह आपके पदों में उपास्य के 'निज स्वरूप' का साक्षात्कार कर साकेत की अन्त:पुर लीलामें प्रवेश कर जाती है। मुझे तो यह ज्ञात होता है कि यह पद ही नहीं 'मन्त्र' हैं इसके गायन करने से 'जनक लली के भजन करते ही तुरत प्रभु अपनावेंगे' वास्तव में यही जादू इन पदों में है।

"आनन्द: परमं व्रह्म स एव हिरस स्मृत:" वास्तविकता यह है कि "चहियत कृपा लली सीता की" जब ही जीव भाव के रंग से दृष्टि को रंजित करके लीला में पदार्पण करता है। तभी लीला का आस्वादन करता है।

मुझ तुच्छ जीव ने स्वयं माँग कर पदों को छपवाने के लिये लिखने का भार लिया परन्तु आज पूरा वर्ष व्यतीत होने जा रहा है तब लिखकर भेजने की चेष्टा कर रही हूं इसकी मैं छमा याचना करती हूं।

'सन्त हृदय नवनीत समाना' इसी बल भरोसे पर अपनी इस धृष्टता की बारम्बार छमा चाहती हूं।

आपकी मनसा अनुरागनी

निकुञ्जबाला भाटिया एम०ए०

अलीगढ़

श्री जानकी जीवन पदावली की

-: अनुक्रमणिका :-

पद सं०	नाम पद	पृष्ठ सं०
१	श्री गुरु चरण कमल रज गहिये	१
२	प्रथम करूँ आचारज को ध्यान	,,
३	सुमिरि मन आचारज पद कंज	,,
४	मनुआ क्यों न गुरु पद ध्याता	,,
५	सुख सम्पति दातार हमारे गुरु	२
६	गुरु मेरे दीन बन्धु भगवान	,,
७	गुरु पद पदुम सजीवन मूरि	३
८	श्री गुरु चरण कमल चित लावो	,,
९	रे मन क्यों न गुरु पग ध्याये	,,
१०	रहब श्री जनकलली जू के साथ	४
११	प्रिय प्यारी सज धज बैठे सुमनों के सुन्दर बँगले में	,,
१२	मन तू कबहू थिर नहि रहतो	,,
१३	निरखो युगल रूप की झांकी अनुपम शोभा अतुल अपार	५
१४	प्रीतम प्रिया की अनुपम छवि जगमगा रही है	,,
१५	श्री गुरु चरण लौ लगाये हुए हैं	६
१६	रे मन गुरु के चरण चितलावो	,,
१७	श्री गुरु चरन कमल चित लावो	,,
१८	भजु मन गुरु के चरण सुख दानी	,,
१९	करो मन गुरु चरणन की आस	७
२०	रे मन क्यों न गुरु पद ध्याता	,,
२१	रे मन क्यों न गुरु पद ध्यावे	,,

पद सं०	नाम पद	पृष्ठ सं०
२२	आली फूल बँगला बना क्या बांका	८
२३	सुमन के बँगला मध्य राजै पिय प्यारी	"
२४	राजै फूल बँगला में सिया पिया प्यारी	"
२५	नवल दोउ ललित पुष्पों के भवन में आज बैठे हैं	९
२६	हमारी सिया पिया जू की झाँकी अद्भुत प्यारी	"
२७	सुमन के बँगला में राजे पिया प्यारी हो	१०
२८	सुमन सिंगार किये दोउ राजत रघुनन्दन सिया प्यारी	"
२९	सिया जू को राघव कीन्ह श्रृंगार	११
३०	ललित पुष्पों के बंगले में श्री हनुमत आज बैठे हैं	"
३१	ए पुष्पों का बना बंगला छटा अनुपम दिखाती है	"
३२	प्यारे की बाँकी झांकी निरख लो	१२
३३	पुष्प के बंगले में बैठे हैं रसिक वर देख लो	"
३४	हमारी सिया स्वामिनी की झांकी अनुपम बाँकी	१३
३५	देखो फूला के बंगला में सियाराम विराजे छे	"
३६	क्या ललित पुष्पों का बंगला, है छटा अनुपम अपार	१४
३७	किया पुष्प श्रृंगार राम ने किया पुष्प श्रृंगार	"
३८	बनी पुष्प बँगला की झांकी अनुपम	१५
३९	ललित पुष्पों के बंगले में अनूपम आज झांकी है	१६
४०	जुगलवर की छटा अनुपम सभी के मन को भाती है	"
४१	पुष्पों के बंगले में राजें जानकी बल्लभ सु राम	१७
४२	झांकी फूल बंगला की बांकी निरखो सुघर अपार	"
४३	ललित पुष्पों के बंगले में छटा अनुपम सु प्यारी है	१८
४४	युगल वर राजत करि श्रृंगार	"
४५	आई तीज सुहावनि प्यारी सिय जू पहिर लहरिया सारी	"
४६	सावन सलोनी तीज है झूलन की तइयारी	१९
४७	झूलत नवल किशोर सिया संग	"

पद संo	नाम पद	पृष्ठ संo
४८	झूलत जनकजा रघुवीर	२०
४९	झूलने बाँकी हमारे हिय बस गई	"
५०	आज दोऊ पट भीजत झूलै	"
५१	ललित पुष्पों के बँगले में अतुल अनुपम सु झाँकी है	२१
५२	रघुवर की सुखदानि हिंडोरे झूलै	"
५३	मन्द मन्द मुसकात हिंडोरे झूलै	२२
५४	हमारी प्यारी जू के प्यारे हिय में मोद वढ़ावैं	"
५५	झूलि रहे दोउ चन्द झूलन पर	"
५६	निरख लो सखी ये झूलन पर मनोहर कैसी जोड़ी है	२३
५७	हमारी स्वामिनी सिय को मुदित मन अलि झुलाती है	"
५८	हमारी स्वामिनी सिय जू सखिन संग झूलती झूला	२४
५९	हमारी सिया स्वामिनी को, राघव मोद बढ़ावै	"
६०	अब न झूलोंगी प्यारे तोरे संग डरपति जियरा हमार	"
६१	लालि लालन मुसुक्यात झुलन पर	२५
६२	जनक लली सुखदानि हिंडोरे झूलै	"
६३	हमारी सिया स्वामिनी को प्यारे जू मनावै	"
६४	हमारी सिया स्वामिनी को सखियां सब झूलावैं	२६
६५	सखियन संग मुसकात हिंडोरा झूलै	२७
६६	झूलि रहे दोउ चंद झूलन पर	"
६७	हमारे प्यारे लालजी को सखियां सब झुलावैं	"
६८	हमारी सिय स्वामिनी को, राघव जी झुलावैं	२८
६९	आरती अवध विहारी की सु रति पति मद के हारी की	"
७०	क्या ललित झूलन की झाँकी मन हरन बांकी है ये	२९
७१	झूलत राजीव नैन सिया संग	"
७२	हिंडोरा झूलत दोउ सरकार	"
७३	हमारी सिया स्वामिनी संग सखियां झूला झूलै	३०

पद सं०	नाम पद	पृष्ठ सं०
७४	सखिन संग झूलत सिय सुकुमारि	३०
७५	सिया संग झूलत श्याम सुजान	”
७६	धीरे धीरे झूलो रघुराज यार मेरे सावन में	”
७७	सिय अलबेली हिंडोरा झूलें	३१
७८	सखि सिय साजन हिंडोरा झूलें	”
७९	युगल सरकार झूलन पर मुदित मन हो बिहरते हैं	३२
८०	सिय जू झोंटा खाय बरसे बूंदरिया	”
८१	युगल वर आज सावन में मुदित हो झूलते झूला	३३
८२	किशोरी जू के संग झूलत रघुनन्दन	”
८३	झूलै सिय स्वामिनि सकल सुख ऐना	”
८४	झूला झूलें दोउ मुसकात सखिन संग सावन में	३४
८५	मनावत सिय जू के सुखदानी	”
८६	आई सावन की बहार परती बूंदन की फुहार	३५
८७	हिंडोरे झूलत दोउ हुलसाय	”
८८	झोंक न दीजै प्यारे रसिक विहारी	”
८९	छबीलो झुलवत पटरानी अनूपम झांकी सुख दानी	३६
९०	हिंडोरे झूलत मृदु मुसकाय	”
९१	सिय के संग बनिता झूलत उमंग हिंडोर	”
९२	पिया प्यारी हर्षात हिंडोरे झूलैं	३७
९३	सिया अलबेली हिंडोरा झूलैं	”
९४	आई तीज सुहावनि प्यारी सावन की बहार	”
९५	सिया राम की बांकी झूलन मुबारक	३८
९६	जानकी वल्लभ सखिन संग झूले हो	”
९७	हिंडोरा झूलत दोउ सरकार	३९
९८	हिंडोरा झूलत पिय प्यारी दोउ हंसि गलिबांही डारी	”
९९	हिंडोरे झूलत सिय रघुचन्द	”

पद सं०	नाम पद	पृष्ठ सं०
१००	श्री सरयू मध्य प्रिया प्रीतम जू नौका में विहरते हैं	४०
१०१	सिया स्वामिनी के संग रघुवर सु नौका में विहरते हैं	,,
१०२	सिया संग श्री राघव जी ललित क्रीड़ा सु करते हैं	४१
१०३	पिया को जगाय रही सिय सुख ऐना	,,
१०४	पिय प्यारी जगावति सहचरियाँ	,,
१०५	सखियाँ श्याम को जगावैं	४२
१०६	बालभोग करत सिया रघुराई	,,
१०७	बाल भोग करत दोउ हरषाय	,,
१०८	बालभोग करति हरषि पिय प्यारी	४३
१०९	सखि लखु लाल की मुसकान	,,
११०	जय जय २ जनक सुता महारानी	,,
१११	जिस मनको तुमने छीन लिया उसकी फिर सेहत क्या होगी	४४
११२	करजोर विनय कुछ करता हूँ सिय स्वामिन तेरे चरनों में	,,
११३	किशोरी तेरे पद पङ्कज की प्रीति	४५
११४	पिया के संग में सिय प्यारी सु नौका में विहरती हैं	,,
११५	नौका पर विहरत पिय प्यारी	,,
११६	अवध के छैल रघुनन्दन सिया के सँग विहरते हैं	४६
११७	हमारे श्री जनक लली को राज	,,
११८	श्याम सुन्दर से लागी नजरिया रे	४७
११९	रसिक शिरोमणि कनक मध्य	,,
१२०	हमारी सिय स्वामिनी संग निरतत रास विहारी	,,
१२१	आज दोउ उरझि उरझि मुसकात	४८
१२२	पिय प्यारी रास करत मुद सों	,,
१२३	किशोरी तेरे नयना मद सों भरे	४९

पद सं०	नाम पद	पृष्ठ सं०
१२४	जनक दुलारी रघुवर जेवत सखियां हिय हर्षाती है	४९
१२५	छैयल तेरी चितवन मदन कटार	,,
१२६	सिया जू स्वामिनी रघुवर मुदित मन रास करते हैं	५०
१२७	सिया जू अपनी सेवा में लगा लोगी तो क्या होगा	,,
१२८	पिय प्यारी दोउ रास करत	५१
१२९	सखी लखु सिया रमन चित चोर	,,
१३०	सिया जू मेरी राखि शरण मोहि लीजै	,,
१३१	सियाराम मुख से न कहते बनेगा	५२
१३२	पावस पराई ऋतु शरद अवाई जान	,,
१३३	कनक भवन मध्य सिय पिय छबि लखि	५३
१३४	लखो सखी दोउन को थिरकनियाँ	,,
१३५	सिय संग जीमो जी राजकुमार श्रीमुख कंज निहार	,,
१३६	पाओ प्रसादी गुरुदेव हमारे	५४
१३७	सिया स्वामिनि बना रघुवर की क्या अनुपम ये जोरी है	,,
१३८	सिया बनरे की छटा अति प्यारी	५५
१३९	छैला रसिक शिरोमणि रघुवर सुनो मधुर स्वर गारी जी	,,
१४०	ये अनुपम प्रेम की मूरति, सिया स्वामिनि का दूल्हा है	५६
१४१	बना की छवि प्यारी बनी	,,
१४२	प्रिया प्रीतम हँसि २ जीमि रहे रति मन्मथ कोटिक लाजि रहे	५७
१४३	भजु मन जानकी के चरन	,,
१४४	सिय बनरे की लखो छवि प्यारी	५८
१४५	सबन मिलि दूलह निरखोरी लाज सब मग में पटकोरी	,,

पद सं०	नाम पद	पृष्ठ सं०
१४६	अचल रहे ए सुहाग लड़ैती तेरा	५९
१४७	कृपा की कोर से भगवन निहारोगे तो क्या होगा	"
१४८	रघुनन्दन सुख सिन्धु दूलहा बने आज	६०
१४९	सिये बनरी को बना अति प्यारा	"
१५०	सिय बनरी का बना गरबीला	६१
१५१	प्यारे बने की सूरत लखियो सखी सहेली	"
१५२	बना और बनी की ये जोड़ी मुबारिक	६२
१५३	भोजन करत सिया रघुराई	"
१५४	बन्नाबनी के नैना बान लखो सखि	"
१५५	गारी गाऊं तुम्हें दिलदार यार मेरे सांवरिया	६३
१५६	जेंवत जनक दुलारी रघुनाथ कुंवर संग	६४
१५७	बनो की प्यारी प्यारी बनी	"
१५८	सिय बनरी की छबी अति नीकी	"
१५९	जेवन बैठे युगल रूप वर सखियां परसि पवाती हैं	६५
१६०	सुनिए रसिक शिरोमनि रघुवर प्रेम सहित प्रिय गारी जू	"
१६१	नौशा बबुआ हो राउर सुनिये बात हमार	६६
१६२	सिय बनरी का बना अति बांका	"
१६३	सुनिये श्री अवधेश कुमार छवि पर लाजत कोटिन मार	६७
१६४	दोउन की निरखत सुघराई	"
१६५	कनक महल में मोद भरे दोउ जीमत हैं पिय प्यारी जी	"
१६६	आरती अवध विहारी की श्रीरघुवर राजदुलारी की	६८
१६७	नख सिख छवि धर की, आरती करो रसिक वर की	"
१६८	जुगल वर के जिमाने की खुशी दिल में समाई है	६९

पद सं०	नाम पद	पृष्ठ सं०
१६९	दोउन पान खवावति अलियां	७०
१७०	हँसि हँसि पान खवावत अलियां	"
१७१	सुनिये रसिक राय रघुनन्दन 'प्रीति रीति रुचि गारी जी	७१
१७२	छयल दिल, लेके अवध जाते हो	"
१७३	अवध क्यों जाते हो मेरे यार	७२
१७४	सजे बसंती साज सिया वर त्रिभुवन के शृङ्गार	"
१७५	बने बसन्ती आज सिया वर	"
१७६	गेंदा गुलाब फूले लखि ऋतु अनुकूले	७३
१७७	आली छवि लखु प्रीतम प्यारे की	"
१७८	खेलत वसंत सिय रसिक राज	७४
१७९	सिय रघुवर खेलत फाग री	७५
१८०	खेलत वसंत सिय कान्त री	"
१८१	सिय जू कनक भवन में खेलत पिय संग फाग	७६
१८२	प्यारी निरखु छवी चित चोर की	"
१८३	प्यारी होली लखु रघुवीर की	"
१८४	रसिया मेरो आज खेलै होरी	७७
१८५	लाला को लली बनावो री	७८
१८६	अवध छैल होली में ऊधम मचाते	"
१८७	साँवरिया के गाल गुलाल लगी	"
१८८	अवध नगरिया की बजरिया हो रामा	७९
१८९	बिपिन प्रमोद बहरिया हो रामा	"
१९०	मारुत नन्दन जन्म महोत्सव आयो अति सुखदाई	८०
१९१	आंगनवां में खेलि रहे हैं रघुवर संग सब भइया	"
१९२	सखि गावो बधाई सब मिलि के	८१
१९३	बधाई बाजि रही घन घोर	"

पद सं०	नाम पद	पृष्ठ सं०
१९४	हमारी सिया स्वामिनी जू की गावो बधाई	८१
१९५	बधाई सब मिलि गावो आज	८२
१९६	बधाई गाइये हिल मिल, हैं जन्में राम रघुरैया	"
१९७	कौशल्या माँई सुत जायो अति बाँका	"
१९८	हमारी स्वामिनि श्री सीता	८३
१९९	बधाई बाजि रही घमसान	"
२००	चलो सखि देखन चारौ भाई	"
२०१	किशोरी किशोरी किशोरी जपा कर	८४
२०२	आओ प्यारे मानुष तन का जीवन सफल बनायें	"
२०३	मन्द हंसनि अति प्यारी किशोरी जी की	८५
२०४	श्री राम सुख धाम क्यों न भजे रे	"
२०५	जुगल छवि लखि दृग नहिं अघात	८६
२०६	कैसी झाँकी अजब दिलदार ये प्यारे रघुवर की	"
२०७	दशा इस दीन की भगवन सम्हालोगे तो क्या होगा	"
२०८	जादू सो कछु मोपर कीन्ही । श्री रघुनन्दन छलिया हे	८७
२०९	दृगन दृगन की चोट लखोरी	८८
२१०	तेरा सिया जी करेंगी बेड़ा पार उदास मन काहे को करे	"
२११	सिय जू है इक आस तुमारी	"
२१२	मेरे प्यारे दरश दिखला दे, सिया जू के सांवरिया	८९
२१३	माधुरि मूरति मनोहर दिल में मेरे बस गई	"
२१४	लखो ए आज की झांकी छटा अद्भुत दिखाती है	९०
२१५	मुसकनि में मन मोहे री सिया जू के सजनवां	"
२१६	सिया जू के नूपुर मोद भरे	९१
२१७	घर घर से पुर बनिता गावत मंगलाचार	"

पद. सं०	नाम पद	पृष्ठ सं०
२१८	तेरी झाँकी अजब दिलदार हो प्यारे सांवरिया	९१
२१९	किशोरी जू के चरण कमल की आस	९२
२२०	मेरी अर्जी सुनलो स्वामिनि सिया हमारी	"
२२१	सिया स्वामिनि की झाँकी करो सजनी	"
२२२	सांवली सूरत मनोहर नैन भर के देख लो	९३
२२३	श्रीराम प्यारे हैं हम तुम्हारे	"
२२४	सिय वर की छवि को लखु प्यारी	९४
२२५	किशोरी जी के अनुपम सोहत बाल	"
२२६	रघुनन्दन तेरे द्वार खड़ा, करुणा करके अपना लीजे	९५
२२७	निहारूं जहाँ मैं वहाँ राम रघुवर	९६
२२८	नयन तेरे बाँके रे साँवलिया	"
२२९	सिय की मृदु मुसकान श्रवत अमृत की धार	९७
२३०	प्रिय को निरखत प्यारी चितवन प्रिय बस कारी	"
२३१	सांवरे अनियारे तेरे नैन	"
२३२	राघो प्यारे जरा मुसका दो जिया मेरा माने नहीं	९८
२३३	गुनि गावत राग की रानी	"
२३४	दशा इस दीन की भगवन संभालोगे तो क्या होगा	९९
२३५	किशोरी जी से बतरावत रघुनन्द	"
२३६	रघुनन्दन दरश दिखादे, निज चरणन मोहि लगा ले	"
२३७	साँवरे के संग सोहे मेरी सिया स्वामिनी	१००
२३८	किशोरी जी के चरण कल्पतरु छांह	"
२३९	शीश पर शीश फूल चन्द्रिका मुकुट सोहे	१०१
२४०	क्या अजब सूरत मनोहर सांवरे दिलदार की	"
२४१	साँवरे मद के भरे तेरे नयन	"
२४२	भव सिन्धु पार कर दो रघुवीर मेरी नैया	१०२
२४३	जगत विदित पापी महा, अधम नीच मोहि जान	"

पद संं०	नाम पद	पृष्ठ सं०
२४४	अरे मन क्यों नहिं राम भजै	१०३
२४५	जाऊँ तोपै बलिहार, प्यारे मेरे साँवलिया	,,
२४६	किशोरी जी तेरो ही गुण गाऊँ	१०४
२४७	श्री सीते मुझे अपना ले. तू ही मेरी स्वामिनि	,,
२४८	सांवरिया के जादू भरे दोउ नैन	१०५
२४९	किशोरी तेरे चरन कमल की आस	,,
२५०	दया निधि क्यों नहिं दया करो	,,
२५१	स्वामी अवध बिहारी फिकर मोहे काहे की	१०६
२५२	रहव जी जनक लली के साथ	,,
२५३	जिस मन को तुमने छीन लिया	,,
२५४	मन तू क्यों न प्रभु गुण गाये	१०७
२५५	रे मन मान सिखावनि मेरी	१०८
२५६	हमारी सिया सुन्दरता की सींव	,,
२५७	जहां मैं निहारूं अवध का दुलारा	,,
२५८	सुकुमारी सिया प्यारी चन्द्र बदनी	१०९
२५९	बन्दौं चित चोरन राम श्याम	,,
२६०	सुख दायक रघुनन्द किशोरी जी के	११०
२६१	रे मन राम के गुण गाव	,,
२६२	राघव की प्यारी सूरत दिल में मेरे गड़ी है	,,
२६३	अङ्ग २ राम के मोहनियां	१११
२६४	सखी मेरे जीवन धन सिय पीय	,,
२६५	नैन दोऊ छबि निरखत अटके	११२
२६६	अरे मन क्यों नहिं राम भजै	,,
२६७	जाऊँ तो पै बलिहार, प्यारे मेरे सांवलिया	,,
२६८	किशोरी जी तेरे ही गुण गाऊँ	११३
२६९	सिया मेरी सुन्दरता की खानि	,,

पद. सं०	नाम पद	पृष्ठ सं०
२७०	किशोरी जी को राम जपत दिन रैन	११३
२७१	सांवलिया के जादू भरे दोउ नैन	"
२७२	दृग विच वसि गये राजीव नयन	११४
२७३	दृगन विच खटके री सजनी	"
२७४	दोउ की छवि अति सुषमा की सार	"
२७५	नाथ मैं सब अपराध भरो	११५
२७६	अनुपम झाँकी लखु सजनी	"
२७७	सिय के चरण में चित को लगाना	"
२७८	चितवनि में चित्त को चुरा लिया सरकार तुमारे नयनों ने	११६
२७९	मनोहर सांवली सूरत लगे दिल को सु प्यारी है	"
२८०	रसना राम नाम नहिं रटती	११७
२८१	अखियां राम रूप नहिं लखती	"
२८२	जाऊं मैं तोपै बलिहार सजनवां	"
२८३	सांवरी सांवरे के मन बसत	"
२८४	श्री रघुवर सारंग पांणी तू ही मेरा स्वामी है	११८
२८५	प्रभु मैं पतितन को सिर मौर	"
२८६	अगर आप हो दीन बन्धू कहाते	"
२८७	दशरथ राजकुमार हमारी गली आया करो	११९
२८८	सांवरी सांवरे मन बसी	"
२८९	प्रसादी पाओ हनुमत लाल	१२०
२९०	श्रृङ्गार पुष्पन कीन्हो सु प्यारो	"
२९१	किशोरी मेरी सांवरिया की प्रान	"
२९२	किशोरी तेरे चरनन की इक आस	१२१
२९३	रघुनन्दन प्यारे की प्यारी जाल फंद से बचियो री	"
२९४	सांवलिया के तीखे बड़े नैना बान	"

पद संं०	नाम पद	पृष्ठ सं०
२९५	सांवलिया को देखे बिना नहिं चैन	१२२
२९६	जनक लली के भजन करत ही तुरत प्रभु अपनायेंगे	,,
२९७	सिया जू मेरी अर्ज सुनो चित लाय	,,
२९८	तन मन सब अर्पण करता हूँ	१२३
२९९	सांवरी सूरत नैना बसी	,,
३००	सुन्दर नयन तिहारे	१२४
३०१	ललन तेरी लागत प्रिय मुसकानि	,,
३०२	सिया जू स्वामिनी मेरी हैं राघव जी की पटरानी	,,
३०३	ललन हँसि हेरो हमरी ओर	१२५
३०४	जाऊँ मैं तोपे बलिहार साँवलिया	,,
३०५	किशोरी जी मैं पतितन शिर मोर	१२६
३०६	श्री राम को रूप विलोकत ही	,,
३०७	सिया जू मेरी करनी चित न धरो	,,
३०८	छबि लखियो राज किशोर की	१२७
३०९	सुन्दर राम शरीर सु श्याम	,,
३१०	किशोरी लीनो राघव को मन छोर	१२८
३११	किशोरी तेरी चहत कृपा की कोर	,,
३१२	जुलुम करै राम तेरी छबि मोहनियां	,,
३१३	नवेली अलबेली सिया जू हमारी	,,
३१४	लखोरी सखि सांवरिया चित चोर	१२९
३१५	श्याम तेरी नजरिया जुलुम कीनो	,,
३१६	जुलुम करे राम तेरी टेढ़ी चितवनियां	,,
३१७	किशोरी जू की चितवनि ललित महान्	१३०
३१८	ए हो मेरे दिलदार हमारी गली आया करो	,,
३१९	सिया स्वामिनि विरद अपना संभालोगी तो क्या होगा	१३१

पद संख्या	नाम पद	पृष्ठ सं०
३२०	प्रभु दर्शन करने को तेरे अति भक्ति हृदय से आया हूँ	१३२
३२१	बिनु देखे पियरवा जिया तरसे	"
३२२	सखी मेरे जीवन धन सिया राम	"
३२३	मनुज तन को पाय के मन, कुछ तो करना चहिये	१३३
३२४	पिय दर्शन के माते नैनवां	"
३२५	पिय प्यारी छबी से लगे नीके	१३४
३२६	भई सांवरि सूरत पर बावरी	"
३२७	रघुबर की मुसकान लखोरी	१३५
३२८	तेरे नैना हैं तीखे बड़े नीके	"
३२९	रसिकन के सिरताज सांवरे	"
३३०	तोहि देखे पियरवा जिया हर्षे	"
३३१	तेरे नयना के घायल परे लाखो	१३६
३३२	युगल वर राजत कर शृङ्गार	"
३३३	सिया जू मेरे अवगुण चित न धरो	"
३३४	अनूपम सिय जू के पद कंज	१३७
३३५	सिया मेरी रघुनन्दन की जान	"
३३६	नैना भरि २ निरखो आली प्यारा सिया सजनवा है	"
३३७	अनुपम दूलह लखु सजनी	१३८
३३८	जादू भरे दोउ नैन किशोरी जी के	"
३३९	सिया जू के नैनन में कछु टोना	"
३४०	किशोरी जी हों पतितन शिर मौर	१३९
३४१	रे मन सिय जू के गुण गावो	"
३४२	आरती रसिक विहारी की स्वामिनि सिया हमारी की	"
३४३	वारूँ मैं तोपे जीवन प्राण हो रघुवंशी छैला	१४०
३४४	आरती राम लला की. कीजे सुन्दर रूप दृगन लखि लीजे	१४१

पद संं०	नाम पद	पृष्ठ सं०
३४५	श्री रघुनन्दन हो, राउर चितवन मदन कटार	१४२
३४६	बना बनी की छबी लखु प्यारी	,,
३४७	सिय स्वामिनि का अनूपम दूल्हा कैसा सुघर सलोना है	,,
३४८	कुछ ध्यान जरा सा रहता है	१४३
३४९	सांवलि सूरत पै बिकान हो मन मोहन छैला	१४४
३५०	प्रभु जी हौं पतितन में नामी	,,
३५१	मनुवा क्यों नहिं गुण गाता	१४५
३५२	किशोरी जी की सूरत पै बलिहारी	,,
३५३	आओ प्यारे मेरे दिलदार वारि जाऊँ सूरत पै	,,
३५४	प्रभुजी मैं पतितन सरदार	१४६
३५५	हमारी स्वामिनि पै रघुवर बलि २ जावें	,,
३५६	किशोरी जी एक अरज सुनि लीजे	१४७
३५७	अवध के छैल छलिया रघुनन्दन जादू सो कछु कीना री	,,
३५८	लखो सखि युगल रूप की झाँकी	,,
३५९	सांवरे के नैनन में कछु टोना	१४८
३६०	नाम जपत रघुनन्दन किशोरी जी को	,,
३६१	प्यारी री तेरी तिरछी नजरिया	१४९
३६२	छयल चितवनियां अजब दिलदार	,,
३६३	ललन तेरी मुसकनि जुलुम करे	,,
३६४	नयन तेरे बांके रे सांवलिया	१५०
३६५	प्यारे रे तेरे नयना रसीले	,,
३६६	देखो झाँकी ये बांकी कैसी बनी	,,
३६७	युगल छबि बांकी आज बनी	१५१
३६८	दीन दयाल प्रणति आरति हर	,,
३६९	पतित पतित-पावन के आगे बार बार कर जोरि रहा	१५२

पद संं०	नाम पद	पृष्ठ संं०
३७०	विनय हमारी सुनो दयानिधि	१५२
३७१	रे मन शरण सिया जू की गहिये	१५३
३७२	दशरथ जी के आंगनवां में, खेलत चारो भइया हे	,,
३७३	शरण तेरी आयों जानकि नाथ	१५४
३७४	जनक किशोरी कृपा अब कीजै	,,
३७५	करो रे मन गुरु चरणन की आस	१५५
३७६	करते नहीं दया तो दयानिधि न कहावो	,,
३७७	कैसी है अनुपम ए झांकी, बांकी झाँकी देख लो	,,
३७८	देखु री मोरी गुइयां जुगल वर	१५६
३७९	हमारी सिया स्वामिनि संग राजत राघव प्यारे	,,
३८०	जुगल रूप को ध्यान करो रे मन	१५७
३८१	सिया वर के चरणों में चित्त लगा ले जिसका जो चाहे	,,
३८२	छटा आज की प्यारी प्यारी मुबारक	,,
३८३	मैं तोपै बलिहारी जाऊं सिया रघुरैया	१५८
३८४	छबि लखि रघुवर मन्द हँसन की	१५९
३८५	प्यारे राघव से नयना लगाय आई	१६०
३८६	जोड़ी जुगल मनोहर सजनी निरखहु भरि २ नयना हे	,,
३८७	लोक लोचन की सुख देनी युगल सरकार की झांकी	,,
३८८	दीन दयाल दया करि के	१६१
३८९	पिया प्यारे की छबि पर मैं वारी	,,
३९०	हे रघुनन्दन कृपा अब कीजै	१६२
३९१	सियवर की ये अनुपम झांकी निरखो री सहेलियां	,,
३९२	रघुनन्दन घनश्याम भजो रे मन	१६३
३९३	युगल छबि बांकी आज बनी	,,

पद सं०	नाम पद	पृष्ठ सं०
३९४	सिया राम की अनुपम झांकी, निरखत ही बन जाये रे	
३९५	किशोरी जी की छबि निरखत रघुनन्द	१६३
३९६	संवलिया के नयना बड़े रतनार	१६४
३९७	किशोरी जी के लागत प्यारे नैन	,,
३९८	बसो मेरे हिय में सिय रघुलाल	,,
३९९	लखो छबि प्यारी बारम्बार	१६५
४००	भजो रे मन सिया रमन सुख धाम	,,
४०१	किशोरी जी की, कृपा करत दुख दूर	,,
४०२	राघव निरखत नयन किशोरी जी के	१६६
४०३	सिय सुकुमारी जनन सुख दैनी	,,
४०४	जानकी नाथ कृपा अब कीजै	,,
४०५	मन्द हंसनि अति प्यारी किशोरी जी की	१६७
४०६	ललकि लखु प्यारी हो चारौं ललना	,,
४०७	किशोरी जी के नयनन की बलिहारी	१६८
४०८	श्री रघुवर राज किशोर प्रणत हितकारी	,,
४०९	लाल लली की छबि निरखु सहेली आज	,,
४१०	किशोरी जी की लागत प्रिय मुसकानि	१६९
४११	प्यारी छबि लखु श्री रघुवीर की	१७०
४१२	किशोरी जी शरण मोहि रख लीजे	,,
४१३	वारी जाऊं अनेक बार प्यारे तेरी सूरत पै	,,
४१४	रघुवर तुमही सांचो मीता	१७१
४१५	भजु मन राम नाम सुख दाता	,,
४१६	छबि लखियो री मन भावन की	,,
४१७	छबि लखियो री सिय स्वामिनि की	१७२
४१८	सुमिर मन नाम शिरोमणि राम	,,
		१७३

पद सं०	नाम पद	पृष्ठ सं०
४१९	आनन्द कन्द राम ने चित को चुरा लिया	१७३
४२०	ललन तेरी जुल्फैं नागिन कारी	"
४२१	अवध छैल छलिया है ए री	१७४
४२२	अवलोकहु भरि नयन सखी री	"
४२३	सदा मुझको रघुवर रुलाता रहेगा	१७५
४२४	नहिं कोउ प्रभु समान उपकारी	"
४२५	जनक की किशोरी जपाकर जपाकर	१७६
४२६	रघुवर शरण मोहिं रख लीजै	"
४२७	किशोरी जी मोहिं अपनो कर लीजे	"
४२८	सांवरी सूरत छबि की खानि	१७७
४२९	दया निधि क्यों नहिं दया करो	"
४३०	किशोरी तेरे चरन कमल की आस	१७८
४३१	संवरिया के नयनों में जादू भरी	"
४३२	नाथ मैं हूँ पापिन सरदार	"
४३३	सिय दुलहे की छबि लखु आली	१७९
४३४	रक्षक सिया हमारी फिकर मोहि काहे की	"
४३५	छबीली छबी पर छबीले रंगे	१८०
४३६	सिया मुख चन्द के ऊपर श्री राघव जी लुभाने हैं	"
४३७	मंगल मोद निधनवा सिरी सिय जू के सजनवां	१८१
४३८	सिय बनरी का दुलहा निरखो सुन्दर श्याम सलोना री	"
४३९	रंगीला बना मन्द मन्द मुसकात	१८२
४४०	तेरी मुसकनि मन लागा रे बनरा	"
४४१	बना तेरी अखियन में कछु टोना	१८३
४४२	मन्द मन्द मुसकान बना तेरी	"
४४३	रघुवर श्याम सुजान लखो सखि	१८४

पद सं०	नाम पद	पृष्ठ सं०
४४४	बनि आया बना दिलदार यार मेरा सांवलिया	१८४
४४५	सिय बनरी का बना अति बांका	१८५
४४६	लाल तेरी मृदु मुसकनि में टोना	,,
४४७	आज दोउ ब्याह उमंग भरे	१८६
४४८	दोउन की छबि पर बलि बलि जइये	,,
४४९	सखि सब गावत गारी प्रभु हिय में हर्ष अपारी	,,
४५०	जेवन बैठे जुगल रूप वर हँसि २ सखी पवाती हैं	१८७
४५१	रघुवर जेंवत जानि महल में हँसि २ सखियां बोली जी	१८८
४५२	सखि सब गावत गारी रघुनाथ कुंवर के	१८९
४५३	जेवत जनक दुलारी रघुनाथ कुंवर संग	,,
४५४	दम्पति कुंवर फलेऊ कीजै	१९०
४५५	राम प्रसादी पावो पवन सुत	१९१
४५६	सखियन संग मुसकात हिंडोरा झूलैं	,,
४५७	आज दोऊ उमंगि २ झूलैं	१९२
४५८	निरखो छबि प्यारी सखियन संग	,,
४५९	भजु मन सिया सहित रघुवीर	१९३
४६०	लखो सुमनों के बंगला में अतुल अनुपम सु जोड़ी है	,,
४६१	हिंडोरे झूलत दोउ सरकार	१९४
४६२	किये श्रृङ्गार पुष्पों के जुगल वर आज बैठे हैं	,,
४६३	प्रीतम प्रिया की झूलन दिल में समा रही है	१९५
२६४	गजब की झांकी बनी प्रिया की	,,
४६५	नाथ मेरी करनी चित न धरो	१९६

पद सं०	नाम पद	पृष्ठ सं०
४६६	कुछ जादू सा है भरा हुवा सिय प्यारी तेरे नयनों में	१९६
४६७	राघव कैसे हैं तेरे नयनवां	१९७
४६८	लखो प्यारी सखिन के संग सिय प्यारी हमारी हैं	,,
४६९	श्रीराम प्यारे नयनों के तारे बनो हमारे तो हम भी जाने	१९८
४७०	घुसा है आके दिल अन्दर जो खुद दिलवर कहाता है	१९९
४७१	प्रभू मेरी विनती क्यों न सुनो	,,
४७२	छबि निरखत ही बेहाल किया सरकार तुमारे नयनों ने	२००
४७३	किशोरी जी अर्ज एक सुनि लीजै	,,
४७४	मन तू क्यों नहिं राम सुमिरता	,,
४७५	प्रभू मेरे अवगुन चित न धरो	२०१
४७६	किशोरी तेरो विरद जगत से न्यारो	,,
४७७	छबीले तेरी छबि पर भई मतवारी	२०२
४७८	रे मन क्यों न हरी को भजता	,,
४७९	नाथ मोहिं भव से पार करो	,,
४८०	लखि बांकी श्याम सुरतिया हो	२०३
४८१	भजु मन राम नाम सुखदाता	,,
४८२	प्रभु मैं पतितन का सरदार	,,
४८३	क्या अद्भुत अनुपम शक्ती है सरकार तुमारे चरनों में	२०४
४८४	नाथ मैं अधमन में सरनाम	,,
४८५	किशोरी तेरे पदरज की इक आस	२०५

पद सं०	नाम पद	पृष्ठ सं०
४८६	कर जोर नाथ तुमसे यह दीन कह रहा है	२०५
४८७	बैठ पावत पान जुगल वर	२०६
४८८	अधमों को तारते हैं ऐसा जो सुन लिया	"
४८९	तनक हँसि हेरो हो मम जीवन प्राण अधार	२०७
४९०	सिया जू मेरी अब तो कृपा करो	"
४९१	दोऊ की छबि पै जाऊं बलिहार	"
४९२	जो पापी से रघुवर तू डरता रहेगा	२०८
४९३	राघो बिहारी लगी तुमसे यारी	२०९
४९४	झांकी ललित मनोहर बनी न जा रही है	"
४९५	आरती करो रसिक वर की	"
४९६	सांवरिया मुसकानि लखो सखि	२१०
४९७	शोभा सुख की खानि सिया मोरी	२११
४९८	लखो सखि जुगल रूप सुख धाम	"
४९९	जादू भरी मुसकानि संवरिया की	"
५००	सिय जू को सजनवां बड़ो रगरी	२१२
५०१	नोकें हैं तीखी जहरीली सरकार तुमारे नैनों की	"
५०२	छबि निरखत ही बेजार किया सरकार तुमारे नयनों ने	२१३
५०३	तेरे मिलने की खातिर जिया तरसे	"
५०४	रघुवर है तूने मुझको क्या खूब सताया	२१४
५०५	लखो सखि सांवरा अलबेला	"
५०६	सिया जू तेरे पद पंकज की आस	२१५
५०७	नैना बड़े अरुझैन संवरिया के	"
५०८	छयलवा के देखे बिना नहिं चैन	"

पद सं०	नाम पद	पृष्ठ सं०
५०९	करजोर विनय कुछ करता हूं सरकार तुमारे चरनों में	२१६
५१०	दिल लेके नयनवां मारि चले	"
५११	सिया जू शरण मोहि रख लीजे	२१७
५१२	तेरी अदा के ऊपर बिन मोल विक गई	"
५१३	हरी तुम क्यों नहिं दया करो	२१८
५१४	सखी मेरो जीवन एक सिया	"
५१५	बे दाम सभी को मोल लिया सरकार तिहारी मुसकन ने	"
५१६	सखी मेरे एकहि धन श्रीराम	२१९
५१७	राघव तिहारे रूप पर बिन मोल बिक गई	"
५१८	किशोरी तेरी पायल की झनकार	२२०
५१९	सखि लखु शरद चन्द्र उजियारी	"
५२०	सिया मुख कंज के ऊपर भ्रमर रघुवर बने रहते	२२१
५२१	लखो सखि लाल की थिरकनियां	२२२
५२२	भगवान इस अधम पर दृष्टी को डार देना	"
५२३	राघव जी से नयनवां लड़ गये	२२३
५२४	विवुध तिया गावती हैं बधाई	"
५२५	बधाई गावती मृगनैनी	२२४
५२६	निरखो छवि सजनी फुलबंगला में दोउ आज विराजे छे	"
५२७	श्याम के फागुन में कुछ औरहि भाव लखात	२२५
५२८	निरखो ए अवध छैल का दरबार बसन्ती	"
५[illegible]	[illegible] ऐसी होली मचाई	२२६
५३०	अवध छैल रघुराई आज मोसे करत ढिठाई	"

पद सं०	नाम पद	पृष्ठ सं०
५३१	होरी खेलत दोऊ बीर री प्राणन के प्यारे	२२७
५३२	घोरि २ घोरि रंग गोरी २ सखी लिये	२२८
५३३	लाल के गाल गुलाल लगी	"
५३४	दम्पति खेलत होरी उमंगि दुइ चन्द मनो री	२२९
५३५	आंगने में बधइया बाजै	"
५३६	नई सखियां खेलन लागी होरी	२३०
५३७	जन्म लियो रघुरइया अवधपुर बाजै बधाई	२३१
५३८	गोरी २ गोरी नारि घोरि २ रंग लिये	"
५३९	किशोरी तेरी समता को नहिं और	"
५४०	सीते सीते कहिये रे मन	२३२
५४१	प्रिया की मन्द मुसकन को सु प्यारे जू निरखते हैं	"
५४२	सीताराम सीताराम सीताराम कहिये	२३३
५४३	सीते २ सीते २ सीते २ कहिये	२३४
५४४	हे स्वामिन जनक लली मेरी	२३५
५४५	पाप से भरा शरीर नाथ मोहि कैसे तारोगे	२३६
५४६	सांवरिया के नयना बड़े कजरार	२३७
५४७	मेरे मन मृग को मोह लिया सरकार तुमारे नयनों ने	"
५४८	किशोरी मेरी सब सुख की आगार	"
५४९	गोरी २ गोरी सखि सांवरे के संग सोहै	२३८
५५०	बिन मोल सभी बिक जाते हैं सरकार तुमारे बैनों में	"
५५१	क्यों नाथ इस पतित पर नहिं ध्यान हो रहा है	२३९
५५२	किया ललित श्रृङ्गार सखिन ने किया ललित श्रृङ्गार	२४०

पद सं०	नाम पद	पृष्ठ सं०
५५३	प्यारे तेरी मुसकनि पे जाऊँ बलिहार	२४१
५५४	किशोरी जी की पद रज सब सुख खानि	”
५५५	क्या जादू सा कुछ भरा हुवा सरकार तुमारी जुल्फों में	”
५५६	सियराम भजन नहिं करता है	२४२
५५७	नौका में विहरत सियवर पावत आनन्द जुगल वर	२४३
५५८	आज जुगल वर नौका में विहरत	”
५५९	सरयू मध्य ललित नौका पर दम्पति छवि नहिं थोर री	२४४

श्री सीतारामाभ्यां नमः

श्रीमते रामानन्दाय नमः

श्रीमद् गोस्वामी तुलसीदासाय नमः

❀ श्री जानकी जीवन पदावली ❀

❀ श्रीगुरु वन्दना १ ❀

श्री गुरु चरण कमल रज गहिये।
सुमिरन करत बढ़त सिय पदरति, अविचल भक्तिसुलहिये।
अमिय मूरि गुण खानि जानि जिय पाप ताप सब दहिये॥
सियवर कृपा कटाक्ष होत ही, आनन्द सिन्धु में रहिये।
त्रिविध ताप संताप दूरि करि, जानकी जीवन कहिये॥

❀ पद २ ❀

प्रथम करूँ आचारज को ध्यान।
जाको ध्यान धरत अघ नाशत, पूरन होत सकाम।
सिय पद प्रेम बढ़त सुमिरन ते, करत कृपा श्रीराम।
जानकी जीवन शरण प्राप्त हो जो सब सुख की खान॥

❀ पद ३ ❀

सुमिरि मन आचारज पद कंज।
जिनको सुमिरत ध्यान धरत ही, होत दूर दुख द्वन्द।
सकल विघ्न दूरि जात तुरत ही, ऐसे आनन्द कन्द।
जानकी जीवन गुरु कृपा ते अपनावत रघुनन्द॥

❀ पद ४ ❀

मनुआ क्यों न गुरु पग ध्याता।

त्रास सकल मिट जात तुरत ही, आनद सिन्धु समाता।
खल कामादि निकट नहि, आते मुदमंगल अधिकाता॥
सकल कामना पूरन करिके सियवर के गुन गाता।
पद पंकज रज नैन लगाके दृष्टी दिव्य वनाता।
जानकी जीवन शरण में रहिके अघ अवगुनहि नसाता।

❀ पद ५ ❀

सुख सम्पति दातार हमारे गुरु।
पद पंकज रज नैनन लाये मेटत तिमिर विकार।
सियवर चरण कमल रति उपजत भरत भक्ति भंडार।
भव वाधा को नाशत छण में नाम प्रभाव अपार।
जमके दूत निकट नहि आवें राम करत रखवार।
शोक शमन दुख दवन विरद है गुरु कृपा आगार।
ब्रह्मा विष्णु महेश गुरु है पर ब्रह्म अवतार।
निश दिन गुरु की महिमा वर्णत शेष न पावत पार।
आनन्द सिन्धु जानकी जीवन वांछित फल दातार॥

❀ पद ६ ❀

गुरु मेरे दीन बन्धु भगवान।
त्रिविध ताप संताप दूरिकरि, मन्त्र सु करत प्रदान।
भव सागर के पार करन को चरण कमल सुख दान।
पद पंकज रज नैनन लाये दृष्टी होत महान॥
विमल भक्ति रघुपति की देकर दूरि करत अज्ञान।
जानकी जीवन रूप हिये में दर्शत आठों याम।

❀ पद ७ ❀

गुरु पद पदुम सजीवन मूरि ।
चरण रेणु हिय ध्यान धरत ही पाप होत सब दूरि ।
जन्म मरण के संकट नाशत भव बन्धन को तूरि ।
रघुपति चरण सुभक्ति दान करि, करत कृपा अति भूरि ।
जानकी जीवन निश दिन चाहत पद पंकज रज धूरि ॥

❀ पद ८ ❀

श्री गुरु चरण कमल चित लावो ।
पद रज हिये सुनैन लगाके दृष्टी दिव्य बनावो ।
बिनु गुरु कृपा द्रवत नहि रघुपति उर अनुराग बढ़ावो ॥
निर्मल मन से ध्यान हिये धरि, अघ अवगुनहि नसावो ।
सीताराम चरण रति उपजै, निश दिन हरि गुण गावो ।
जानकी जीवन शरण में रहिके मन बांछित फल पावो ॥

❀ पद ९ ❀

रे मन क्यों न गुरू पग ध्याये ।
ध्यान करत हिय को तम नाशे ज्ञान भक्ति उर आये ।
होय प्रकाश हिये के भीतर जुगल रूप दर्शाये ।
जन्म मरन को संकट नाशे अन्त अमर पद पाये ।
पद पंकज रज परस करत ही पातक पुन्ज नशाये ।
सीताराम चरन रति उपजे उर अनन्द अधिकाये ।
जानकि जीवन शरण में रहिके जीवन सफल बनाये ।

❀ पद १० ❀

रहव श्री जनकलली जू के साथ ।
मंगल मय विधु वदन विलोकव गाउव सिय गुन गाथ।
पद पंकज नित सेवा करि लखि-२ होव सनाथ।
शेश प्रसादी मिलिहै निश दिन सुर मुनि जाहि ललात।
स्वामिनि कृपा दया की मूरति श्रुति पुराण विख्यात।
अरुनारे तरवा दर्शन करि गाउव सिय गुन गाथ।
जानकि जीवन महिमा वर्णत शारद हू सकुचात ॥

❀ पद ११ ❀

प्रिय प्यारी सज धज बैठे सुमनों के सुन्दर बँगले में।
अलियाँ बहु पुष्पों की माला है खड़ी लिये कर कमलों में।
क्या अतुल अनूपम पुष्पों का खिड़की छज्जा अरु महल बना
वेला गुलाव अरु जूही की उड़ती सुगन्ध है सुमनों में।
चल रहे फुहारे सुख कारे खस केवड़ा गुलाब के जल के।
हिमरितु की शोभा दर्शाती गीषम रितुगवनी भवनों में।
लखि जानकि जीवन की झांकी वर्षाते हैं सुहर्षि सुमन।
जप-२ की ध्वनि है छाय रही आकाश सेदेव विमानों में।

❀ पद १२ ❀

मन तू कबहू थिर नहि रहतो ।
छाड़ि जाल जंजाल जगत के सीताराम जु कहतो।
जमकी त्रास सकल मिट जाती सुख समुद्र में बहतो।
लोभ मोह कामादिक नाशत क्रोध अग्नि नहि दहतो।

सियवर कृपा कटाक्ष होत ही चारों फल को लहतो ।
जानकि जीवन सबतोहि मिलतो जोई २ चहतो ॥

❀ पद १३ ❀

निरखो युगल रूप की झाँकी अनुपम शोभा अतुल अपार ।
पुष्पों के बँगले में बैठे दम्पति लाजि रहे रतिमार ॥
झीने वसन मलय तन लेपन कीन्हे सुमन शृंगार ।
क्रीट चन्द्रिका अरु पुष्पों के भूषण विविध प्रकार ॥
इतर गुलाब के चलत फुहारे बहती त्रिविधि बयार ।
मानहु हिम रितु करन पहुनई आई ग्रीषम द्वार ॥
कलियन की अलियां वह ठाढ़ी लेकर सुमनके हार ।
देव सुमन वर्षावत हर्षित बोलत जय जयकार ॥
लीजे निरखि नयन भरि जोड़ी करि तन मन बलिहार ।
जानकि जीवन प्रेम भरे दोउ छवि गुनके आगार ॥

❀ पद १४ ❀

प्रीतम प्रिया की अनुपम छवि जगमगा रही है ।
बँगले की शोभा न्यारी वर्नी न जा रही है ॥
कुण्डल मुकुट मनोहर भूषण वसन सुमन के ।
प्रमुदित सखी सहेली माला पिन्हा रही है ॥
वर्णन करूं कहां तक घन श्याम की छटायें ।
दामिन सिया हमारी शोभा बढ़ा रही है ॥
वर्षत प्रसून नभ से होकर मगन विबुध गन ।
जय २ जानकि जीवन की धुनि सुना रही है ॥

❀ पद १५ ❀

श्रीगुरु चरण लौ लगाये हुए हैं
त्रिविधि ताप संतापताये हुए हैं।
दुसह दुःख दूषण हरण पद सरोरुह,
की आशा हिये में लगाये हुए हैं॥
हूँ पापी कुटिल जीव अधमी अलायक,
दयालू के पद माथ नाये हुए हैं।
देंगे शरण जानकी जीवन कभी तो,
जो पद रज को नैनों में लाये हुए हैं॥

❀ पद १६ ❀

रे मन गुरु के चरण चित लावो।
पद पंकज को हृदय बसा कर अघ के पुंज नशावो।
पग की धूलि सुनैन लगा कर दृष्टी दिव्य बनावो॥
युगल रूप के दर्शन करिके मन में मोद बढ़ावो।
जानकी जीवन शरण में रहिके मन वांछित फल पावो॥

❀ पद १७ ❀

श्रीगुरु चरन कमल चित लावो।
सुमिरन करत सकल अघ नाशे, दृष्टी दिव्य सुपावो।
पद रज नैन हिये में लाकर पातक पुंज नशावो॥
दम्पति रूप की झाँकी लखिके जीवन सुफल बनावो।
जानकी जीवन शरण में रहिके, मन वांछित फल पावो॥

❀ पद १८ ❀

भजु मन गुरु के चरण सुख दानी।

जिनकी रज अति अतुल अनूपम मेटत पाप निशानी ।
ध्यान धरे हिय को तम नाशत प्रगटति भक्ति भवानी ॥
युगल रूप की झाँकी दर्शत, जो सब सुख की खानी ।
जानकी जीवन गुरु की महिमा बेद पुराण बखानी ॥

❀ पद १९ ❀

करो मन गुरु चरणन की आस ।
पद रज अंजन नैनन लाये होत तिमिर को नाश ।
सिय वर रूप हिये में झलकै, अनुपम होय प्रकाश ॥
सीताराम चरण रति उपजै, मिटै सु भव की त्रास ।
जानकी जीवन गुरु पद पंकज, सकल सिद्धि की राश ॥

❀ पद २० ❀

रे मन क्यों न गुरु पद ध्याता ।
भव की त्रास सकल मिट जाती, आनन्द सिन्धु नहाता ।
खल कामादि निकट नहिं आते, सुख सम्पति अधिकाता ॥
मन की इच्छा पूरन करिके, सिय वर के गुन गाता ।
पद पंकज रज नैन लगाके, दृष्टी दिव्य बनाता ॥
जानकी जीवन शरण में रहिके, अघ अवगुनिन नशाता ।

❀ पद २१ ❀

रे मन क्यों न गुरु पद ध्यावे ।
ध्यान करत हिय के तम नाशे, ज्ञान भक्ति उर आवे ।
ज्योती जागे हिय के भीतर, जुगल रूप दर्शावे ॥
जन्म मरन के संकट नाशे, अन्त अमर पद पावे ।

जानकी जीवन शरण में रहिके जीवन सफल बनावे ॥

❀ फूल बँगला पद २२ ❀

आली फूल बँगला बना क्या बांका ।
छिति छत पुष्प कलिन की प्यारी,
चलत फुहार अतर केवड़ा का ।
सुमन कली की अली खड़ी बहु,
शोभा अमित न उपमा ताका ॥
सुमन शृंगार किए प्रिय प्रीतम,
लाजत कोटि काम छवि जाका ।
जानकी जीवन सुमन बिजन ले,
करत बयार त्रिविधि सुषमा का ॥

❀ फूल बँगला पद २३ ❀

सुमन के बँगला मध्य राजै पिय प्यारी ।
ललित सुमन के भूषण अद्‌भुत क्रीट चन्द्रिका शिर परधारी।
सुमन शृंगार किये बहु बनिता सुमन विजन ले चत्र संवारी॥
सर्वेश्वरी श्रीचारुशीलाजी सिय स्वामिनी की प्राण प्यारी।
हंसि २ पान खवावत दोउन निरखत रूप चंद उजियारी ॥
करत विहार सुमन बंगला में रतिपति कोटि २ बलिहारी ॥

❀ फूल बंगला पद २४ ❀

राजै फूल बगला में सिया पिया प्यारी ।
सुमन सिंहासन तापर आसन सुमन सखी लिये छत्र सुधारी।
पुष्पन के बहु वसन विभूषण दम्पति तन शोभित सुखकारी॥

बेली कलियन की बहु अलियां ठाढ़ी दोउदिशि बिजन संवारी
छज्जा खिरकी ललित मनोहर जंगला गोखा अति मन हारी।
जानकीजीवन झांकी लखिके हरषि मदन रति तन मन वारी॥

❀ फूल बँगला पद २५ ❀

नवल दोउ ललित पुष्पों के भवन में आज बैठे हैं।
किये शृंगार सुमनों के रसिक सिरताज बैठे हैं॥
वसन भूषन प्रसूनन के सुदम्पति अङ्गमें अद्भुत।
मुकुट अरु चन्द्रिका शीशन सुधारे आज बैठे हैं॥
असित सित पीत फूलों की कली की बहुअली ठाढ़ी।
सुमनों के बिजन चामर सु जिन पर भ्रमर बैठे हैं॥
चमेली रायबेली की बनी अनुपम कलाकारी।
झरोखों और छज्जों पर बिपुल पक्षी सु बैठे हैं॥
इतर केवड़ा गुलाबन के फुहारे चल रहे प्यारे।
सर मध्य ,नीर निर्मल में खिले बहुकंज बैठे हैं॥
करेगा कौन कवि वर्णन छवी यह जानकी जीवन।
दरश कर शारदा अरु शेष हर्षित आज बैठे हैं॥

❀ फूल बँगला पद २६ ❀

हमारी सिया पिया जू की झाँकी अद्भुत प्यारी।
कोटि काम छवि रघुनन्दन की सिय छवि पै बलिहारी।
दोउन के सिर क्रीट चन्द्रिका कुंडल की छवि न्यारी।१।
इतर गुलाब के चलत फुहारे उड़त सुगन्ध सुभारी।
त्रिबिध सुगन्ध बहत सुखदाई चहुदिसि पुष्पन क्यारी।२।

जानकी जीवन जन सुख दायक भक्तन के हितकारी।
लीजे निरखि नयन भरि जोड़ी करि तन मन बलिहारी॥

❀ फूल बंगला पद २७ ❀

सुमन के बँगला में राजे पिया प्यारी हो।
फूलन की भीति सोहें छीति छत फूलन की,
ताहि मध्य राजत श्री युगल बिहारी हो ॥१॥
फूलन को मुकुट सुचन्द्रिका हु फूलन की,
फूलन के भूषन वसन छबि न्यारी हो ॥२॥
चारुशिला आदि सखी सुमन शृङ्गार किये,
राजत सिय संगे शोभा अति भारी हो ॥३॥
इतर फुहारन की त्रिविध समीर बहैं,
फूलन की चहु दिशि फूली फुलवारी हो ॥४॥
जानकी जीवन जी को सुमन शृङ्गार लखि,
बरसि सुमन सुर करैं जय जयकारी हो ॥४॥

❀ फूल बँगला पद २८ ❀

सुमन सिंगार किये दोउ राजत रघुनन्दन सिया प्यारी।
नील पीत बहुरंग प्रसूनन धवन अनुपम अति सुखकारी।
पंकज सिंहासन पर दम्पति सखिन संग शोभा मनिहारी।
अङ्ग२ राजत ललित लुनाई कोटिन घन दामिनि दुतिवारी॥
छुटत फुहारे अति सुखकारे त्रिविध सुगंध सु वहत बयारी॥
भरे उमंगन दोउ हर्षित मृदु मुसकानि महा वशकारी॥
जानकी जीवन छवी विलोकत तन की सुरति बिसारी।

❀ फूल बँगला पद २९ ❀

सिया जू को राघव कीन्ह श्रृङ्गार ।
सुमन को लहंगा सुमन कन्चुकी सिर पै सारी धारि ॥
पुष्पन भूषन वसन विभूषित पुष्पन के गले हार ।
सर्वेश्वरी श्री चारुशिला जी गावत राग मल्हार ॥
सुमन श्रृंगार दोउन को अनुपम शोभा अमित अपार ।
जानकी जीवन नयनन लखिये जोड़ी परम उदार ॥

❀ फूल बँगला पद ३० ❀

ललित पुष्पों के बंगले में श्री हनुमत आज बैठे हैं ।
अभय वर सबको देने को मुदित मन आज बैठे हैं ॥
मुकुट कुंडल सुमन का है गले बिच हार फूलों का ।
सभी श्रृंगार पुष्पों से सुसज्जित आज बैठे हैं ॥
सिया रघुवर के प्यारे हैं कृपालू हैं दयालू हैं ।
जितिन्द्रय बुद्धि के आकर सुधा के सिन्धु बैठे हैं ॥
कल्पतरु सम सुभक्तों के हैं करते कामना पूरन ।
दरश कर जानकी जीवन प्रफुल्लित आज बैठे हैं ॥

❀ पद ३१ ❀

ए पुष्पों का बना बँगला छटा अनुपम दिखाती है ।
प्रिया प्रीतम छटा अद्भुत न वर्णत ही सराती है ॥
जुही कलियों की साड़ी है सु जामा है चमेली का ।
मुकुट अरु चन्द्रिका कुन्डल छवि बनीं न जाती है ॥
बना है भव्य सिंहासन कलाकारी है कलियों की ।

ए छज्जा और खिड़की की सजावट मन को भाती है॥
बिराजे हैं मुदित मन हो जुगल वर हर्ष युत दोऊ।
अली गन अति मुदित होकर विजन लेकर डुलाती है॥
अमित जल जन्त्र चलते हैं सु केवड़ा इत्र के अनुपम।
सुगन्धी उड़ती है जिनकी छटा अनुपम दिखाती है।
विबुध गन हर्ष युत होकर सु नभ जयकार करते हैं।
सु सुरतिय ले प्रसूनों की झरी पुनि २ लगाती है॥
करेगा कौन कवि वर्णन छवी ए जानकी जीवन।
स्वयं जब शेश अरु शारद न वर्णत पार पातो है॥

❀ फूल बँगला पद ३२ ❀

प्यारे की बांकी झांकी निरख लो।
तन घनश्याम अनोखे चितवन,
मन्द हंसनि छवि अमिय सु चखलो।
क्रीट चन्द्रिका की छवि अद्भुत,
तड़ित विनिन्दित कुंडल लख लो॥
बंगला सुमन मध्य दोउ राजत,
पुष्पन के श्रृंगार सु लख लो।
जानकी जीवन मन के भावन,
मूरति दोउ हिय भीतर रख लो॥

❀ फूल बँगला पद ३३ ❀

पुष्प के बंगले में बैठे हैं रसिक वर देख लो।
प्यारी अनुपम युगल जोड़ी नैन भर कर देख लो॥

हैं बसन भूषन सुमन के उड़ रही जिनकी पराग ।
कर रही सखियां विजन सुन्दर सुमन का देख लो ॥
कीजिये तन मन निछावर प्यारे के इस रूप पर ।
माधुरी जोड़ी मनोहर सुखद सुन्दर देख लो ॥
जानकी जीवन की छवि है लाजते कोटिक मनोज ।
संत जन के प्राण धन दोऊ परस्पर देख लो ॥

❀ फूल बँगला पद ३४ ❀

हमारी सिया स्वामिनी की झाँकी अनुपम बांकी ।
कोटिन काम लजावनि हारी, छवि अवधेश लला की ॥
सुमन शृँगार किये दोउ राजत, नहि कोउ पट तर जाकी ।
सर्वेश्वरी श्री चारुशिला जी द्युति मयंक सम ताकी ॥
दम्पति रुचिकर विजन डुलावति, त्रिविध समीर सुबांकी ।
प्यारी का मुख प्यारो निरखत, अद्भुत छवि दरसाती ॥
ताकी शोभा को कवि वर्णे, शारद की मति थाकी ।
प्रमुदित देव सुमन झरि लावत, हर्षि अपसरा गाती ॥
जानकी जीवन जोवन लखि के, सुर तिय हिय हुलसाती ॥

❀ पद ३५ ❀

देखो फूला के बंगला में सियाराम विराजे छे ।
तन श्याम गोर छवि छलके ज्यो बादल बिजली चमके ।
सुन्दर छवि अवलोकि के रति पति शरमावे छे ॥
क्या कली खिली अलबेली बेला अरु जुही चमेली ।
अगणित प्रकार के पुष्पों की शोभा नहिं वरणि सिरावे छे ॥

जल जंत्र चलति हैं प्यारे क्या, अतुल सुगंधी वारे ।
शीतल मन्द सुगंध बयार की शोभा नहिं वर्णी जावे छे ॥
सुमनों का दिव्य सिंहासन राजत हैं प्यारी प्रीतम ।
दोऊ दिशि सखि अलबेली मनमें अति मोद बढ़ावे छे ॥
प्रिय पवन चलत पुरवाई शीतल सुगंध सुखदाई ।
दम्पति छवि अवलोकि के सब हर्षित गावे छे ॥
सुर देखि हिये हर्षाते पुष्पों की झरी लगाते ।
जानकी जीवन को अवलोकि के सुख सिन्धु समावे छे ॥

❀ फूल बँगला पद ३६ ❀

क्या ललित पुष्पों का बंगला, है छटा अनुपम अपार ।
कौन कवि वर्णन करे छवि निधि स्वयं करते विहार ॥
सुमन की कलियां खिली हैं, उड़ रही जिनकी पराग ।
इतर केवड़ा की चहुँ दिसि चल रही प्यारी फुहार ॥
पुष्पों का अद्‌भुत सिंहासन, चंवर छत्र है सुमन के ।
दोउ दिसि सखियां सुमन का लै विजन करती बयार ॥
राजते हैं दम्पती, गुच्छा लिये सुमनों का कर ।
बह रही मारुत त्रिविधि विधि हेम ऋतु सम है बहार ॥
जानकी जीवन मुदित है स्वामिनी छवि को लखैं ।
पुष्प ले कर कंज में सिय की रहे आरति उतार ॥

❀ फूल बँगला पद ३७ ❀

किया पुष्प शृंगार राम ने किया पुष्प शृंगार ।
ए जी रसिकन प्राण अधार राम ने किया पुष्प शृंगार ।

बेला जुही गुलाब कली के भूषण विविध प्रकार ।
प्यारो प्यारी छवि अवलोकत पहिरावत गले हार ॥
सब सुख धाम श्याम सुन्दर वर सिय छबि पै बलिहार ।
क्रीट चन्द्रिका वसन सुमन के शोभा अमित अपार ॥
बंगला सुमन मध्य दोउ राजत हंसि गल वहियां डार ।
भरी प्रमोद सखी सब सोभित किये सुमन शृङ्गार ॥
नवल नवेली सिय अलबेली सब सुख की दातार ।
प्यारी रूप सुधा के लोभी श्रीअवधेश कुमार ॥
विवुध विमान चढ़े नभ ऊपर वर्षत सुमन अपार ।
जानकी जीवन छवि के ऊपर लाजत कोटिन मार ॥

❀ फूल बँगला पद ३८ ❀

बनी पुष्प बंगला की झाँकी अनुपम,
सुदम्पति की अद्भुत छटा छा रही है ।
कीन्हे हैं शृङ्गार पुष्पों के प्रियवर,
सुशोभा अमित नहिं कही जा रही है ॥
मुकुट चन्द्रिका और कुंडल सुमन के,
सुमन की कली भी खिली जा रही है ।
दोउ दिशि खड़ी है विजन ले सुमन का,
सहेली सिया का गुण गा रही है ॥
छटा जानकी जीवन करै कौन वर्णन,
मदन की रती ही लजी जा रही है ॥

❀ फूल बंगला पद ३९ ❀

ललित पुष्पों के बंगले में अनूपम आज झाँकी है।
प्रिया प्रीतम के सज धज की छटा अद्भुत दिखती है॥
सभी शृङ्गार फूलों के बसन भूषण सुमन के हैं।
सुमन की सहचरी इत उत विजन लेकर डुलाती है॥
प्रसूनों की बनी छत है दरो दीवार फूलों की।
बनी खिड़की सु कलियों की कलाकारी दिखाती है॥
सुमन का ही सिंहासन है सु तकिया और गद्दा भी।
सुमन की माल लै सहचरि सु दम्पति को पिन्हाती है॥
करेगा क्या कवी वर्णन ये शोभा जानकी जीवन।
इन्हीं की छवि इन्हीं से है न समता और आती है॥

❀ पद ४० ❀

जुगलवर की छटा अनुपम सभी के मन को भाती है।
प्रिया प्रीतम की झाँकी की छबी बर्नी न जाती है॥
तन घनश्याम जामा पीत पुष्पों के वसन भूषण।
सिया की छवि प्रिया जू से नहीं वर्णत सिराती है॥
विविध जल जंत्र चलते हैं इतर केवड़ा गुलाबों के।
महँक उड़ती है पुष्पों की सो सबके चित चुराती है॥
ललित पुष्पों के बंगला में बनी अनुपम कलाकारी।
ए छज्जा और खिड़की की छटा प्यारी सुहाती है॥
ए बंगला मध्य रचना की करूँ क्या मैं छवी वर्णन।
सु दम्पति संग मृगनैनी मुदित मन हो के गाती है॥

ललीजी ने ललाजी का है हँस कर चित्त को छीना ।
दोउन के चित्त की चोरी ए वर्नी कापै जाती है ॥
करेगा क्या कवी वर्णन छवी ए जानकी जीवन ।
स्वयं ही शारदा जिनको न बर्णत पार पाती है ॥

❀ फूल बँगला पद ४१ ❀

पुष्पों के बंगले में राजें जानकी वल्लभ सु राम ।
जिनकी प्यारी छबि के ऊपर लाजते हैं कोटि काम ॥
दोउ दिशि पुष्पों की सखियां हैं खड़ी. लेकर विजन ।
बहु अली दम्पति निरखि के, कह रही जय श्यामा श्याम ॥
देवगन वर्षत सुमन मन मुदित होकर जय जयकार ।
माधुरी मूरति मनोहर कैसी है जोड़ी ललाम ॥
जानकी जीवन की झाँकी कौन कवि वर्णन करे ।
इनकी दुति इनही से है ए दोउ हैं शोभा के धाम ॥

❀ फूल बँगला पद ४२ ❀

झाँकी फूल बंगला की बाँकी निरखो सुघर अपार ।
दे गल बांही दम्पति बैठे रसिकन के सरकार ॥
मुकुट चन्द्रिका पुष्पन के अरु जुही कली कतार ।
सुमन सिंगार किये बहु बनिता सेवा सौज सुधार ॥
ललित लुनाई अति सुघराई इकटक रही निहार ।
अतर गुलाब के चलत फुहारे बहत सुत्रिविध वयार ॥
नवल नवेली सुन्दरताई लाजि रही रति मार ।
हर्षित देव छवी अवलोकत बोलत जय जयकार ॥

जानकी जीवन रूप के ऊपर करि तन मन बलिहार ॥

❀ फूल बँगला पद ४३ ❀

ललित पुष्पों के बंगले में छटा अनुपम सु प्यारी है ।
पिया के संग में राजें सिया स्वामिनी हमारी है ॥
वसन सुन्दर सु मन के हैं मुकुट अरु चन्द्रिका कुंडल ।
सकल त्रिभुवन की सुन्दरता दोउन की छवि पे वारी है ।
विजन अरु माल ले कर में खड़ी हैं सहचरी इत उत ।
मधुर मुसकानि के ऊपर बिकी बिन मोल सारी है ॥
खिलाती पान दम्पति को हिये में हरषती अलियां ।
बलइया ले कहें सखियां कि ए सम्पति हमारी है ॥
अतुल अनुपम मनोहरता सु लखि के जानकी जीवन ।
विबुध चढ़ि २ विमानों पर सु करते जय जयकारी है ॥

❀ फूल बंगला पद ४४ ❀

युगल वर राजत करि शृङ्गार ।
पुष्प चन्द्रिका प्यारी के सिर पिय निज कर सों धार ।
बँगला सुमन मध्य दोउ बैठे शोभा अमित अपार ।
अगणित खड़ी अली अलबेली सेवा सौंज सुधार ।
प्रीतम प्यारी पगे प्रेम में हँसि गलि बहियां डार ॥
जानकी जीवन रूप अनूपम लाजत कोटिन मार ।

❀ झूलन पद ५४ ❀

आई तीज सुहावनि प्यारी सियजू पहिरि लहरिया सारी ।
झूलन पिय के संग सिधारी श्रीजनक लली ॥१॥

जयति जय जानकिवल्लभलाल सखी सब होती है रिझवार ।
अलिगन गाती प्रिय मल्लार शोभा ललित बनी ॥२॥
बूंदन परती है फुहार बिजलिया चमके बारम्बार ।
युगलवर रतिपति के मदहार अति छवि छवनी ॥३॥
जानकी जीवन छबी निहार कीजिये तन मन को बलिहार ।
दम्पति प्रिय सुखमा के सार श्री रसिक मनी ॥४॥

❀ झूलन पद ४६ ❀

सावन सलोनी तीज है झूलन की तइयारी,
जानकी वल्लभ के हिय में हर्ष है भारी ।
शिरपेच पाग चुनरी प्यारे के शीश पै,
सारी लहरिया दार है सिय जू ने सँवारी ॥
बैठे उमंग रंग में झोंका वढ़ावते,
दोउ दिशि सखी खड़ी रहै सुसोज संवारी ।
भृकुटी हैं वंक नयना प्यारे के मदभरे,
जुवती जनी को बेधने कोई ए कटारी ॥
सुन्दर बदन मनोहर शोभा अनूप है,
वर्णन करे ए कौन छवि मन्मथ के मदहारी ।
लीजे विलोकि जोड़ी ए जानकी जीवन,
सारे सुखों की मूल ए सम्पति हमारी ॥

❀ झूलन पद ४७ ❀

झूलत नवल किशोर सिया संग ।
श्री कनक भवन हिंडोर कुंज में, हरित छटा चहुं ओर ।

नील पीत दोउ मिलत हरित छवि, सुन्दर जुगलकिशोर ॥
बदन इन्दु अम्भोरुह लोचन हंसि हेरत मुख मोर ।
ललित सखी सब हित मिल गावत सरस राग हिंडोर ॥
जानकी जीवन छवि को वर्णे शारद मति भई भोर ॥

❀ झूलन पद ४८ ❀

झूलत जनकजा रघुवीर ।
हेम गृह में रुचिर झूलन सखिन की अति भीर ।
मुदित होय दम्पति सु झूलत वहत त्रिविध समीर ॥
जानकी जीवन दरस कर मिटी भव की पीर ।

❀ झूलन पद ४९ ❀

झूलने बाँकी हमारे हिय बस गई ।
घन दामिनि वर बरन युगल छवि,
हरित छवि की छटा में सुप्यारी छवि लस गई ।
चन्द्र बदन सरसीरुह लोचन,
दुति दामिन में सिय प्यारी लाल मन वसि गई ।
मृग नयनी पिक बयनी सहचरि,
छवि लखि रति सुलजात गरूरत खसि गई ॥
जानकी जीवन छवि को वर्णे,
शारद हू सकुचात प्रेम में फँस गई ॥

❀ झूलन पद ५० ❀

आज दोऊ पट भीजत झूलैं ।
कदम की डारी परो हिंडोला श्री सजू के कूलैं ।
रिमिझिमि २ मेहा वर्षत कोयल करत किलोलैं ॥

अलिगन गावत झोंक बढ़ावत देह गेह भूलै ।
सोह नवल तन ललित लुनाई मुद मंगल मूलै ॥
विबुध विमान चढ़े हिय हर्षत वर्षावत फूलै ।
शोभा अतुल अनूपम जोड़ी इन सम कोऊ नहिं तूलैं ॥
जानकी जीवन दम्पति झाँकी हरति हिये शूलै ॥

❀ झूलन पद ५१ ❀

ललित पुष्पों के बँगले में अतुल अनुपम सु झाँकी है ।
करूं वर्णन कहां तक और सुन्दरता न आती है ॥
किया शृङ्गार सुमनों का परस्पर आज दम्पति ने ।
छबी लखि है सकुचता काम अरु रति भी लजाती है ॥
खिली बेला की कलियां हैं चहूं दिशि से उड़ती पराग ।
मुदित मन होके सखियां सब सुमाला को पिन्हाती है ॥
छबी लखि जानकी जीवन विबुध तिय हर्षती हिय में ।
लगा कर झरि प्रसूनों की न फूली अंग माती है ॥

❀ झूलन पद ५२ ❀

रघुवर की सुखदानि हिंडोरे झूलै ।
कनक भवन हिंडोर कुंज में, सुन्दर ललित बितान ।
रत्न जटित मणि परो हिंडोरा जगमग ज्योति महान ॥
मृदु मुसकानि सिय प्यारी की निरखत राम सुजान ।
हृदय लगाय महा सुख पावत घन दामिनि लपटान ॥
अलिगन झमकि झुलावत दोउन देत सुमुख में पान ।
जानकी जीवन के यहि रस को रसिक बिना को जान ॥

❀ झूलन पद ५३ ❀

मंद मंद मुसकात हिंडोरे झूलें ।
चितवन चारु सिया जू लखि के रघुवर हिय हुलसात ।
प्यारे पान खवावत प्यारिहि निरखि मनोहर गात ॥हिंडोरे॥
झोंका देत दोउ दिशि अलियां अनुपम छवि दरसात ।
दम्पति प्रेम सु दे गलबांही मन ही मन बतरात ॥हिंडोरे॥
अरस परस दोउ हिल मिल झूलत, शोभा किमि कहि जात ।
जानकी जीवन झाँकी निरखत आनन्द उर न समात ॥हिंडोरे॥

❀ झूलन पद ५४ ❀

हमारी प्यारी जू के प्यारे हिय में मोद बढ़ावैं ।
चन्द्र वदन मुख कंज निरखि के तन की सुधि बिसरावैं ।
कृपा कटाक्ष विलोकनि के हित बार २ गुन गावैं ॥
नैन सैन में अरुझि रहे दोउ मन्द २ मुसकावैं ।
निरखि नवल तनकी सुघराई हिय में अति हर्षावैं ॥
अतुल अनूपम झाँकी प्यारी रति पति कोटि लजावैं ।
प्रेम सुधा रस भरे वचन कहि आनन्द सिन्धु समावैं ॥
विहंसि युगल वर दे गलबाहीं अति ही सुख सरसावैं ।
जानकी जीवन दर्शन करि के देव सुमन झरि लावैं ॥

❀ झूलन पद ५५ ❀

झूलि रहे दोउ चंद झूलन पर ।
कनक भवन में पर्यो हिंडोरा जगमग ज्योति अमंद ॥झू०॥
अलिगन गावत पियहि रिझावति उमगत उर आनंद ॥झू०॥

झूलन झूलत हिय में फूलत, निरखत सिय मुख चन्द ।
जानकी जीवन झाँकी निरखत, होत दूरि दुख द्वन्द ॥झू०॥

❀ झूलन पद ५६ ❀

निरख लो सखी ये झूलन पर मनोहर कैसी जोड़ी है ।
करूं वर्णन कहां तक छवि ये सुन्दरता न थोड़ी है ॥
दामिनि वरण सिय प्यारी, बने घनश्याम श्री रघुवर ।
तड़ित घन सी जुगल जोड़ी सभी के चित्त चोरी है ।
सिया मुख कंज को इक टक निरखते हैं सु रघुनन्दन ।
बिके बिन मोल ही प्यारे भई सुधि बुधि सु भोरी है ॥
ये छवि बांकी ललित झांकी निरख लो जानकी जीवन ।
अतुल प्यारी नवल जोड़ी मदन रति को लजोरी है ॥

❀ झूलन पद ५७ ❀

हमारी स्वामिनी सिय को मुदित मन अलि झुलाती है ।
मुदित मन हंसि के झोंका दे सरस हिंडोर गाती है ॥
कदम की डार में झूला लगी है डोर रेशम की ।
जुही बेला के फूलों की भी रचना प्रिय दिखाती है ॥
वसन भूषण सु धारे हैं जगामग जोति मनियों की ।
ललित शृङ्गार पुष्पों के अतुल शोभा दिखाती है ॥
झमकि झुकि हर्षयुत दम्पति परस्पर दे रहे झोंका ।
छटा प्यारी सु प्यारे की मदन रति को लजाती है ॥
चढ़ी सुरतिय विमानों पर सुमन की कर रहीं वर्षा ।
छवी लखि जानकी जीवन की सब बलिहार जाती है ॥

❀ झूलन पद ५८ ❀

हमारी स्वामिनी सिय जू सखिन संग झूलती झूला ।
करै कवि क्या छवि वर्णन जो हैं छवि सिंधु सुख मूला ॥
किए शृङ्गार सखियां सब सु दम्पति को झुलाती हैं ।
सरस हिंडोर गाती हैं मुदित होकर के हिय फूला ॥
सिया मुख कंज श्रम कण लखि डुलाते हैं विजन रघुवर ।
निरखि अँग अंग की शोभा, सुरति पति देह सुधिभूला ॥
बसाकर हिय में अनुपम छवि मुदित हो जानकी जीवन ।
ये मन मन्दिर रहें निस दिन सदा ही झूलते झूला ॥

❀ झूलन पद ५९ ❀

हमारी सिया स्वामिनी को, राघव मोद बढ़ावै ।
झोका देत मदन छवि निरखत नयन से नयन मिलावै ।
बदन इन्दु श्रम बिन्दु सु लखिके, प्यारे विजन डुलावै ॥ह०॥
अवलोकत भरि नयन मधुर छवि, आनन्द सिंधु समावे ।
बिधु बदनी मृग नयनी सहचरि बार बार बलि जावे ॥ह०॥
कनक भवन हिंडोर कुंज में पिय प्यारी सुख पावे ।
सुषमा निरखि विबुध तिय हरषै सुमन बृष्टि झर लावै ॥ह०।
जानकी जीवन शरन मुदित हो सिय चरनन चित लावै ।
दम्पति शोभा को कवि वर्णै शेषो पार न पावै ॥हमारी॥

❀ झूलन पद ६० ❀

अब न झूलोंगी प्यारे तोरे संग डरपति जियरा हमार ।
झुकि २ झोका न दीजै फहरत साड़ी हमार ॥

सुन अवधेशी छैला वहियां गले नहि डार ।
लपटि झपटि झक भोरत गिर जइहै वेसर हमार ॥
रुख लखि सिय को आई सखियां हजार ।
बोली नवल नवेलिया सुनु सांवर सरदार ॥
होली की कसर चुकइहों नाहि तो मान लीजे हार ।
तुम सन आज गवइहौं हिल मिल राग मलार ॥
नयनन को फल पइहौं रूप हिये विच धार ।
जानकी जीवन छवि पर जइहौं सब बलिहार ॥

❀ झूलन पद ६१ ❀

लालि लालन मुसुक्यात झुलन पर ।
बय किशोर सुकुमार मनोहर छवि घनश्याम लखात ॥झू०
चन्द्रवदनि सिय स्वामिनि मोरी दुतिदामिनि दरसात ।
सर्वेश्वरी श्री चारशिला जी दम्पति सों बतरात ॥झू०
हर्षि झुलावहिं शान गुमाननि सखियां हिय हुलसात ।
जानकी जीवन झाँकी निरखत रति पति कोटि लजात॥झू०

❀ झूलन पद ६२ ❀

जनक लली सुखदानि हिंडोरे झूलै ।
मृग नयनी शशि बदनी सिय जू, रघुवर श्याम सुजान ।
दम्पति के हिय सुख उपजावत लेत नई नई तान ॥
जानकी जीवन तन मन वारत लखि मधुरी मुसुकान ॥

❀ झूलन पद ६३ ❀

हमारी सिया स्वामिनी को प्यारे जू मनावै ।

मुख मयंक अवलोकि छिनहि छिन तनकी सुधि विसरावै ।
प्राण प्रिया जीवन धन कहि २ आनंद सिन्धु समावै ॥
वेगि पधारे प्यारो झूलन सखियां अति सुख पावै ।
शीतल मन्द बहत पुरवाई ललित लता लहरावै ॥
दम्पति हँसि २ दे गलबाही नैनन सों बतरावै ।
सुमुखि सुनैनी कोकिल बैनी झूलन झोंक बढ़ावै ॥
सर्वेश्वरि श्री चारुशिला जी राग मलार सुनावै ।
अतुल जुगलवर झांकी लखि के रति पति कोटि लजावै ॥
विवुध विमान चढ़े हिय हर्षत जय की ध्वनि उपजावै ।
जानकी जीवन शोभा वर्णत शेषहु पार न पावै ॥

❀ झूलन पद ६४ ❀

हमारी सिया स्वामिनी को सखियां सब झुलावें ।
सावन तीज सुहाई आई आनन्द उर अधिकावें ।
नवल नवेली सखि अलबेली झुन्ड २ मिलि धावें ॥
झूलन झोंक बढ़ावत प्रीतम हिय में अति हर्षावें ।
जूथेश्वरि संग प्यारो प्यारी प्यारी सखी सुहावें ॥
हिम मिल गावत सुख उपजावत कोकिल कंठ लजावैं ।
बहुतक खड़ी अली अलबेली रुचिकर बिजन डुलावैं ॥
रूप अनूपम निरखि २ के नयनन को फल पावें ॥
सुर प्रसून वर्षावत हर्षत आनन्द उर न समावें ।
कहि जय ३ जानकी जीवन बिन ही मोल बिकावैं ॥

❀ झूलन पद ६५ ❀

सखियन संग मुसकात हिंडोरा झूलै ।
श्याम गौर दोउ रूप मनोहर अनुपम छवि दरसात ।
सिय स्वामिन मुख चन्द्र निरखि के आनंद सिन्धु समात ।
कनक भवन हिंडोर कुंज की छवि नहिं वरणि सिरात ॥
अलिगन गावत पैंग बढ़ावत कोकिल कन्ठ सुहात ।
घन दामिनवर वरन जुगल छवि मदन रती सु लजात ॥
जय धुनि पूरि रही नभ ऊपर सुरतिय हिय हर्षात ।
विबुध पुष्प वर्षावत हर्षत कहि जय जानकि नाथ ॥
जानकी जीवन रूप अनूपम शोभा किमि कहि जात ॥

❀ झूलन पद ६६ ❀

झूलि रहे दोउ चंद झूलन पर ।
विधु बदनी सिय स्वामिनि मोरी रघुनन्दन जनु इन्दु ॥
अंग अंग अगणित अनंग छवि, शोभा सुख के कंद ।
जानकी जीवन अनुपम जोड़ी, घन दामिनि इक संग ॥

❀ झूलन पद ६७ ❀

हमारे प्यारे लालजी को सखियां सब झुलावैं ।
झुकिझुकि झमकि झुलावहि झूलहिं सियजू अति सुख पावैं ।
प्यारी को मुख निरखि सु प्यारो, पुनि पुनि कंठ लगावैं ॥
विहंसि झुलावत सिय को प्यारो मन में मोद बढ़ावैं ।
श्रम लखि विजन डुलावत सहचरि बार बार बलि जावैं ॥
कनक भवन हिंडोर कुंज में दम्पति अति सुख पावैं ।

झूलन झूलत दे गलबांही उर आनन्द न समावैं ।
जानकी जीवन झाँकी लखि के कोटि मनोज लजावैं ॥
कहि जय जय जय रसिक शिरोमणि देव सुमन झरिलावैं ॥

❀ झूलन पद ६८ ❀

हमारी सिय स्वामिनी को, राघव जी झुलावें ।
झुकि झुकि प्यारी को मुख निरखत रुचि सों पेंग बढ़ावें ।
दोउन के श्रम सीकर लखि के सखियां विजन डुलावें ॥
सर्वेश्वरि श्री चारुशिला जी राग मलार सु गावें ।
कोकिल कंठ लजावनि हारी, अनुपम भाव बतावें ॥
दम्पति की झाँकी को निरखत रति पति कोटि लजावें ।
ताकी शोभा को कवि वरणै शेषौ पार न पावें ॥
कनक भवन हिंडोर कुंज लखि आनन्द उर न समावें ।
कहि जय जय जय जानकी जीवन देव सुमन झरिलावें ॥

❀ आरती पद ६९ ❀

आरती अवध विहारी की सु रति पति मद के हारी की ॥
मुकुट कुंडल की छवि छलके, अपारन नाशा मनि परसे,
मणिन की माल हिये झलके, छबी अति अनुपम प्यारी की ॥
लिये कोउ छत्र चँवर ठाढ़ी, सु प्रीतम छबि पर मतवारी,
सु करती तन मन बलिहारी, कहैं जय सीय हमारी की ॥
सु अङ्ग २ में भूषण सोहै, सु रसिकन के मनको मोहै,
न कोई जग पटतर को है अतुल छबि अवध विहारी की ॥
व्योम से देव सुमन वर्षे, जानकी जीवन छबि निर्खे,
निछावर कर हिय में हर्षे, छटा लखि प्रीतम प्यारी की ॥

❀ झूलन पद ७० ❀

क्या ललित झूलन की झाँकी मन हरन बांकी है ये ।
प्रेम के रस में पगी छबि सब के मन भाती है ये ॥
दे रहे झोंका सुप्यारे प्यारी को मुख कंज लखि ।
कर दिया तन मन निछावर सखियां हर्षाती है ये ॥
रूप दोनों का मनोहर निरखि सुर नर मुनि ठगे ।
ले लिया चित को चुरा, चित चोर कहलाते हैं ये ॥
जानकी जीवन को लखि २ करते हैं सुर जय २ कार ।
पुष्प बरसाते मुदित मन अप्सरा गाती है ये ॥

❀ झूलन पद ७१ ❀

झूलत राजीव नैन सिया सँग ।
सहचरि हरषि झुलावत झूलत, लखि लखि सिय की शयन ।
सिय मुख चन्द्र चकोर सु प्रीतम रसिकन के सुख दयन ॥
जानकी जीवन छबि को लखि के लाजत कोटिक मयन ॥

❀ झूलन पद ७२ ❀

हिंडोरा झूलत दोउ सरकार ।
हँसि हँसि झोंक बढ़ावत प्यारे प्यारी पै रिझवार ।
तन मन वारत लेत बलइया पहिरावत गले हार ॥
अगणित खड़ी अली अलबेली गावत राग मलार ।
प्रीतम प्यारी पगे प्रेम में शोभा अमित अपार ॥
देव सुमन हर्षावत हर्षत बोलत जय जय कार ।
जानकी जीवन रूप अनूपम रति पति लाजनि हार ॥

❀ झूलन पद ७३ ❀

हमारी सिया स्वामिनी संग सखियां झूला झूलैं ।
रत्न जड़ित मणि परो हिंडोरा जगमग ज्योति अतूलैं ।
प्यारी झूलत पिया झुलावत अलिगन हिय में फूलैं ॥
झोंका देत वदन छवि निरखत सुख समुद्र की मूलैं ।
सर्वेश्वरि श्री चारुशिला जी गावत राग हिंडोलैं ॥
मन मोहनी माधुरी मूरति हरत हिये की शूलैं ।
विवुध विमान चढ़े अवलोकत पुनि २ वर्षत फूलैं ॥
कहि जय जय जय जानकी जीवन जय रसिकन सुख मूलैं ॥

❀ झूलन पद ७४ ❀

सखिन संग झूलत सिय सुकुमारि ।
झोंका देत श्री जानकी जीवन सिय रुचि के अनुहारि ।
गावत राग श्री चारुशिला जी सखियन की शिरदारि ॥
सिय को वदन विलोकत प्रीतम, देत सु तन मन वारि ।
झूलन कुंज अनूपम झाँकी शोभा अमित अपार ॥

❀ झूलन पद ७५ ❀

सिया संग झूलत श्याम सुजान ।
झोंका देत दोउ दिसि अलियां, शोभा ललित ललाम ।
मन्द मन्द मुसकात परस्पर लखि लाजत रति काम ॥
अलिगन गावत पियहि रिझावत छवि निरखत सुखधाम ।
जानकी जीवन झाँकी लखि के होत सु पूरन काम ॥

❀ झूलन पद ७६ ❀

धीरे धीरे झूलो रघुराज यार मेरे सावन में ।

अवलोको भरि नयन लली छवि,
मंद मंद मुसकान अमिय बर सावन में ॥
तुम कठोर चित चोर सांवरे,
सिय जू अति सुकुमार दया दर सावन में ।
लाजत कोटि मनोज रूप लखि,
चितवनछवि सु महान तड़ित सर सावन में।
जानकी जीवन झाँकी निरखत,
विबुध हिय हरषान सुमन झरि लावन में ॥

❀ झूलन पद ७७ ❀

सिय अलबेली हिंडोरा झूलैं ।
झोंका दै २ हिय में हर्षत रघुनन्दन सुख मूलैं ।
जुत्थ २ मिलि अगणित सहचरि गान करत अनुकूलैं ।
अरस परस दोउ झोंक बढ़ावत सखियन के हिय फूलैं ।
प्रमदा प्रमुदित नाचत गावत सुर वर्षावत फूलैं ॥
छवि अवलोकत जानकी जीवन तन मन की सुधि भूलैं ॥

❀ झूलन पद ७८ ❀

सखि सिय साजन हिंडोरा झूलैं ।
झूलन कुंज अनुपम झाँकी श्री सरजू के कूलैं ।
बादल गर्जें बिजली चमकै कोयल करत किलोलैं ॥
श्यामा झूलत श्याम झुलावत छवि निरखत सुख मूलैं ।
अलिगन गावत पियहि रिझावत गावत राग हिंडोलैं ॥
अरस परस दोउ दे गलबांही सुख पावत अनुकूलैं ।

दम्पति हर्षित पगे प्रेम में हरति हिये की शूलै ॥
एक से एक छबी दोउन की समता कोउ न तूलै ।
जानकी जीवन झाँकी लखि के सुख पावत फूलै ॥

❀ झूलन पद ७९ ❀

युगल सरकार झूलन पर मुदित मन हो विहरते हैं ।
करोड़ों काम की शोभा को लज्जित आज करते हैं ॥
जटित मणियों से कंचन का बना अनुपम ये झूला है ।
झुलाती हैं सखी अगणित विजन चांवर सु ढरते हैं ॥
है गाती राग सहचरियां सुस्वर है कंठ कोकिल का ।
ये पिक वयनी के गायन सुन मुनिन के ध्यान टरते हैं ॥
ललित है कुंज झूलन की छटा छाई है हरियाली ।
मयूरादिक सु पत्ती गण मुदित हो नृत्य करते हैं ॥
अमित छबि जानकी जीवन करेगा क्या कवी वर्णन ।
निरखि के देवगन हरषित सुमन की बृष्टि करते हैं ॥

❀ झूलन पद ८० ❀

सिय जू झोंटा खाय, वरसे बूंदरिया ।
कदम की डरिया परो हिंडोला सरजू कूल सुहाय ।
बादल गर्जें बिजली चमके अनुपम छवि दर्शाय ॥
प्यारी झूलत पिया झुलावत सखियां हिय हर्षाय ।
लालन झूलत सिय जू डरपति हरषि गले लपटाय ॥
झुन्ड २ मिलि सखि सब गावत कोकिल कन्ठ सुहाय ।
झूलन कुंज अनूपम झाँकी ललित लता लहराय ॥

प्यारो प्यारी की छबि निरखत नैना नहीं अघाय ।
अलिगन नाम लेवावति पिय को सिय जू मृदु मुसकाय ॥
झीने बसन मलय तन लेपन साड़ी अति फहराय ।
जानकी जीवन छबी अनूपम निरखत ही बनि जाय ॥

❀ झूलन पद ८१ ❀

युगल वर आज सावन में मुदित हो झूलते झूला ।
झुलाती हैं अमित सखियां सु देकर प्रेम का हूला ॥
सुनाई श्रीलली मुख की श्रीराघव जी निरखते हैं ।
झमकि झुकि झोंक दे प्यारे सु छवि लखि देह सुधि भूला ॥
करे कवि क्या छबी वर्णन, हैं दम्पति रूप के आगार ।
निरखि छबि जानकी जीवन विबुध नभ वर्षते फूला ॥

❀ झूलन पद ८२ ❀

किशोरी जू के संग झूलत रघुनन्दन ।
अवलोकत भरि नयन सिया मुख, फंसे रूप के फंद ।
मृदु मुसकान विलोकत सिय की, रघुवर आनन्द कन्द ॥
छवि को निरखि हिये में हरषत गान करत सखि वृन्द ।
दम्पति मुदित दिये गलबांही पावत अति आनन्द ॥
जानकी जीवन झाँकी निरखत पावत परमानन्द ॥

❀ झूलन पद ८३ ❀

झूलौ सिय स्वामिनि सकल सुख ऐना ।
श्रीरघुवर को प्राण पियारी नव सरोज लोचन सुख दैना ।
सहज सलौनी सुठि सु कुमारी उमा रमा इन सम कोउ हैना ॥

ललित लुनाई प्यारी को लखि रघुनन्दन के फंसे दोउ नयना।
मृदु मुसकान माधुरी मूरति बिनु देखे जी को नहिं चैना॥
जानकी जीवन झाँकी निरखत उपमा कोउ देत बनैना॥

❀ झूलन पद ८४ ❀

झूला झूलें दोउ मुसकात सखिन संग सावन में।
श्रीसरजू तट परो हिंडोला छबि नहिं वरनि सिरात॥
बादल गर्जत बिजली चमकत मोर नचत हर्षात।
नान्हीं २ बूंदन मेहा वर्षत सिय जू झोंटा खात॥
अलिगन गावत पेंग बढ़ावत अनुपम छबि दर्शात।
सिय डरपति पिय मानत नाहीं डरपि गले लपटात॥
प्यारे रूप सुधा के लोभी नैनन सों बतरात।
झूलन झूलत ललित कुन्ज में ललित लता लहरात॥
रस बस प्रेम भरे दोउ भीजत पकरत पट फहरात।
जानकी जीवन रूप अनूपम छवि नहिं वरनि सिरात॥

❀ झूलन पद ८५ ❀

मनावत सिय जू के सुखदानी।
नख शिख हेरत प्यारी छवि को रघुनन्दन चक्रपाणी।
उमा रमा ते अधिक छबी लखि बोले हंसि मृदु बानी॥
जनक सुता मम प्राण पियारी रघुकुल की पटरानी।
झूलन झूल ताप मम हरिये कृपा रूप कल्याणी॥
सुनि मृदु वचन प्रिया प्रीतम के सब सखियां मुसकानी।
दम्पति झूलत दे गलबांही हरषि हिये सुख मानी॥

जानकी जीवन छबि को बरनै, मति सुख सिंधु समानी ॥

❀ झूलन पद ८६ ❀

आई सावन की बहार परती बूंदन की फुहार,
झूलैं स्वामिनी श्री सरकार शोभा अमित बनी।
झुलावैं रघुनन्दन सरदार सिया को कन्ज मुख निहार,
हिये में हरषै बारम्बार रघुकुल के मनी ॥
सखी सब गाती हैं मल्हार कन्ठ कोकिल है स्वर अपार,
सिया स्वामिनी हमार मिथिलेश के धनी।
दम्पति छवि के हैं आगार सभी ये सुषमा के हैं सार,
देवगन करते जय जय कार बजावें दुन्दुभी घनी ॥
जानकी जीवन हर्ष अपार जोड़ी अद्भुद् परम उदार,
सुवरनत पावै शेष न पार जिनके सहस्र फनी ॥

❀ झूलन पद ८७ ❀

हिंडोरे झूलत दोउ हुलसाय।
घन दामिनि वर वर्ण दोउन को अद्भुत छबि दरशाय।
अङ्ग अङ्ग अगणित अनंग छबि चितवत मनहिं लुभाय ॥
अमित निकाई सिय के मुख की लालन मनहिं रिझाय।
जानकी जीवन सखियन के संग झोंका दे सुख पाय ॥

❀ झूलन पद ८८ ❀

झोंक न दीजै प्यारे रसिक विहारी।
सिय डरपति मोरी फहरति सारी,
तुम तो निठुर मोरी स्वामिनि सुकुमारी।

सुनि पिय सखी के बैन गले बांह डारी,
रघुनन्दन सुख कन्द वदन निहारी ॥
प्यारी की छबि लखि आनन्द भारी,
जानकी जीवन झाँकी निरखि कै।
वरसै सुमन देव करि जय जयकारी ॥

❀ झूलन पद ८९ ❀

छबीलो झुलवत पटरानी अनूपम झाँकी सुख दानी।
झोंका देत बदन छबि निरखत चितवनि मुसकानी ॥
अलिगण गावत अति मन भावति कोकिल सम वाणी।
कनक वरन श्री जनकनन्दनी रघुकुल महारानी ॥
जानकी जीवन छबि अवलोकत सुखद सु मन मानी ॥

❀ झूलन पद ९० ❀

हिंडोरे झूलत मृदु मुसकाय।
प्यारी झूलत पिया झुलावत परम प्रीति दरसाय।
मंद हसनि प्यारी लखि लखि रघुवर अति सुख पाय ॥
नैन सैन में दोउ बतरावत अनुपम भाव बताय।
भरी उमंग अली बहु गावत कोकिल कन्ठ सुहाय ॥
कनक भवन हिंडोर कुन्ज की रचना वरणि न जाय।
जानकी जीवन झाँकी अनुपम निरखत ही बन जाय ॥

❀ झूलन पद ९१ ❀

सिय के संग बनिता झूलति उमंग हिंडोर।
लखि प्यारी सुख पावत रघुनन्दन चित चोर।

चितवनि में दोउ उरझे मानहु चंद चकोर ।
जानकी जीवन दम्पति बंधे प्रेम की डोर ॥

❀ झूलन पद ९२ ❀

पिया प्यारी हर्षात हिंडोरे झूलैं ।
घन दामिनि बर दोउन की छबि अनुपम दरसात ।
वदन विलोकि मथन सत लाजत शोभा किमि कहि जात ॥
मृदु मुसकानि विलोकनि प्यारे पान खवावत खात ।
दोउ दिशि अली झुलावति हर्षत नयनन सों बतरात ।
कोकिल कंठ लजावहिं गावति मृग नयनी मृदु गात ।
जानकी जीवन जोड़ी लखि के रति पति कोटि लजात ॥

❀ झूलन पद ९३ ❀

सिया अलबेली हिंडोरा झूलैं ।
झोंका देत बदन छबि निरखत रघुनन्दन हिय फूलैं ।
सोह नवल तन ललित लुनाई प्यारी छबि की मूलैं ॥
विधु वदनी बहु कोकिल बैनी गान करत अनकूलैं ।
उमा रमा इन्द्राणी आदिक इन सम एक न तूलैं ॥
हेरनि हंसनि विलोकनि प्यारी एकौ निमिष न भूलैं ।
जानकी जीवन मोहनि मूरति हरति हिये की शूलैं ॥

❀ झूलन पद ९४ ❀

आई तीज सुहावनि प्यारी सावन की बहार ।
सिय जू पहिरि लहरिया सारी करि अनुपम शृङ्गार ।
पिय के संग हिंडोर कुन्ज में शोभा अमित अपार ॥

अगणित सहचरि छकी प्रेम में गावत राग मलार ।
दम्पति झूलति दे गलबांही छबि गुण के आगार ॥
कोकिल बैनी अरु मृग नैनी रही सुरूप निहार ।
जानकी जीवन जोड़ी अद्भुत रतिपति लाजन हार ॥

❀ झूलन पद ८५ ❀

सिया राम की बांकी झूलन मुबारक ।
अनुपम छटा सरजू कूलन मुबारक ॥
झुलाती अली देके दम्पति को झोंका ।
सिया के संग में बहु सहेली मुबारक ॥
परस्पर गले बांह दीन्हे सिया वर ।
सु मुसकानि ये चित की चोरी मुबारक ॥
मुदित गान करती सु सुमुखी सु नैनी ।
सखिन संग में श्री किशोरी मुबारक ॥
वर्णत बने ना छबी जानकी जीवन ।
सुभग सांवरे संग गोरी मुबारक ॥

❀ झूलन पद ८६ ❀

जानकी वल्लभ सखिन संग झूले हो ।
झूलन कुन्ज सुहाई अनुपम श्री सरजू के कूले हो ।
इक ओर राजदुलारी नवल तन सोहे हो ॥
सुन्दर श्याम छबी पर मदन रति मोहे हो ।
झोंका देत प्रिया छबि निरखें आनंद सो हिय फूले हो ॥
प्रीतम प्यारी पगे प्रेम में मङ्गल मोद अतूले हो ॥

दम्पति झाँकी अति प्रिय बांकी मेटत भव की शूले हो।
सुर दुन्दभी बजावत हर्षत पुनि २ वर्षत फूले हो।
जानकी जीवन जोड़ी अद्भुत एक निमिष नहिं भूले हो॥

❀ झूलन पद ६७ ❀

हिंडोरा झूलत दोउ सरकार।
श्रावण शुक्ला तीज सुहाई सखियन मोद अपार।
दम्पति की झाँकी अति बांकी रति पति लाज निहार॥
बिबिध भाँति के वसन विभूषण जगमग ज्योति अपार।
देव सुमन वर्षावत हर्षत बोलत जय जय कार॥
विधु वदनी पिक बैनी हर्षत करि तन मन बलिहार।
जानकी जीवन छबि को वर्णे शेष न पावत पार॥

❀ झूलन पद ६८ ❀

हिंडोरा झूलत पिय प्यारी दोउ हंसि गलिवांही डारी।
झोंका देत झुलावति अलियां फहरति सिय सारी॥
प्यारे कर सों बसन संवारत हर्षत हिय भारी।
मन्द हंसनि में अमृत वर्षत चितवनि वश कारी॥
प्रीतम पान खवावत छबि लखि तन मन बलि हारी।
जानकी जीवन जोड़ी सुन्दर भक्तन हित कारी॥

❀ झूलन पद ६९ ❀

हिंडोरे झूलत सिय रघुचन्द।
रत्न जड़ाऊ परो हिंडोरा जगमग ज्योति अमन्द।
झोंका देत बिलोकत मुख छवि रघुवर आनन्द कन्द॥

श्याम गोर शोभा को वर्णे घन दामिनि इक संग ॥
नवल नवेली प्यारी के संग गान करत सखि वृन्द ।
जानकी जीवन दर्शन करि के पावत अति आनंद ॥

❀ नौका बिहार पद १०० ❀

श्री सरजू मध्य प्रिया प्रीतम जू नौका में विहरते हैं ।
करोड़ों काम की छवि को ए लज्जित आज करते हैं ॥
सुमन शृङ्गार दम्पति का अनूपम अति मनोहर है ।
तकनि तिरछी व मुसकान मंद से चित को ये हरते हैं ॥
विजन करती हैं सहचरियां दोउन के लख के श्रम कण को ।
सिया रघुवर की शोभा देख, सुर जय जय उचरते हैं ॥
सिया मुख कंज को लखि के बने मधुकर हैं रघुनन्दन ।
करै कवि कौन छवि वर्णन जो छवि सिंधु विहरते हैं ॥
निरखि छवि जानकी जीवन सु दीजे वारि तन मन धन ।
दिखाकर चन्द्र मुख छवि को ये अपने वस में करते हैं ॥

❀ नौका बिहार पद १०१ ❀

सिया स्वामिनी के संग रघुवर सु नौका में विहरते हैं ।
श्री सरजू जी मुदित होकर सुपथ की धार बहती हैं ॥
बसन भूषन सुमन के हैं किये शृङ्गार सब सखियां ।
परस्पर मिल के रति पति को ए लज्जित आज करते हैं ॥
अतुल अनुपम मनोहर है सु नख शिख रूप के आगार ।
करें कवि क्या छवी वर्णन जो छवि निधि ही विहरते हैं ॥
है करती गान युवती जन मुदित होकर के बारम्बार ।

दर्श कर जानकी जीवन विबुध जय जय उचरते हैं ॥

❀ नौका बिहार पद १०२ ❀

सिया के संग श्रीराघव जी ललित क्रीड़ा सु करते हैं ।
श्री सरजू मध्य नौका पर मुदित होकर विहरते हैं ॥
हैं अगणित सहचरी संग में किये शृङ्गार फूलों का ।
लिये कर सौंज सेवा की विजन चांवर सु ढरते हैं ।
सिया मुख कन्ज के ऊपर है रघुवर श्याम घन छाये ।
ये छवि घन विज्जु की लखि के विबुध जय २ उचरते हैं ॥
करूं वर्णन कहां तक ये अमित छबि जानकी जीवन ।
दरस देकर सु भक्तों के ये तीनों ताप हरते हैं ॥

❀ जागरण पद १०३ ❀

पिया को जगाय रही सिय सुख ऐना ।
भोर भयो जागहु मेरे प्यारे रस में बीति गई सब रैना ।
सुनि मृदु वचन उनींदे नैनन उठि बैठे छवि कहत बनैना ॥
प्यारी को भरि अङ्क प्रेम सों मुख मयंक अवलोकि छकेना ।
सखियां वसन संवारत गावत मधुरे स्वर कल कोकिल बैना ॥
सेवा सौंज लिये सहचरि गण भाव भरी तन सुधि कछु हैना ।
जानकिजीवन दम्पतिझाँकी लखि लाजत कोटिन रतिमैना ॥

❀ जागरण पद १०४ ❀

पिय प्यारी जगावति सहचरियाँ ।
कोउ बीन बजावत निरखति प्रेम भरी मद की अंखियां ।
मृदु मुसकात जँभात परस्पर, लखि तन वसन संवारत अलियां ॥

पंलगा पर बैठे प्रिय दम्पति,
छवि लाजत कोटिन रति पतियां ।
जानकि जीवन शरण मुदित ह्वै,
सिया स्वामिनि के पग चपियाँ ॥

❀ जागरण पद १०५ ❀

सखियाँ श्याम को जगावैं ।
मधुरे स्वर बीन बजावैं पग नूपुर ठनकावैं ।
जागे प्रीतम प्यारी आलस बस जमुहावैं ॥
जानकी जीवन हेम थार में मंगल दृश्य दिखावैं ॥

❀ बालभोग पद १०६ ❀

बालभोग करत सिया रघुराई ।
कञ्चन थारी रुचिर संवारी सखियन हिय हर्षाई ॥
सेव अनार दारु अरु पिस्ता मेवा सरस मिठाई ।
मोहन खीर आदि बहु व्यंजन स्वाद वरणि नहिं जाई ॥
अलिगन अंचवावत मुख पोछत आनंद उर न समाई ।
जानकी जीवन छवी निरखि के रति पति कोटि लजाई ॥

❀ बालभोग पद १०७ ❀

बाल भोग करत दोउ हरषाय ॥
बैठे कनक भवन सिंहासन, संतन के सुख दाय ।
कञ्चन थार मधुर व्यंजन बहु मेवा सरस सुहाय ॥
फल अंगूर सेव अरु दाड़िम रंभा फल मन भाय ।
पावत पिय प्यारी अति रुचि सों नैनन सों बतराय ॥

सखियां अचवावति मुख पोछत अतर सुगंध लगाय ।
जानकी जीवन छवि अति प्यारी निरखति ही बनि जाय ॥

❀ बालभोग पद १०८ ❀

बालभोग करति हरषि पिय प्यारी ।
हेय थार में सरस मिठाई परुसी सखिन संवारी ।
रतन कटोरिन खीर आदि बहु व्यञ्जन अति रुचिकारी ॥
सेव अंगूर संतरा केला मेवा आदि सुधारी ।
पावत दम्पति हिय हर्षावत स्वाद अमित सुखकारी ॥
छवि लखि लाजत कोटि मदन रति बारहिं बार निहारी ।
जानकि जीवन ललित लुनाई लखि तन मन बलिहारी ॥

❀ पद १०९ ❀

सखि लखु लाल की मुसकान ।
चारु चिबुक कपोल सुन्दर नयन को अभिराम ।
वंक भृकुटी मन्द मुसकन वदन छवि सु महान ॥
क्रीट कुन्डल की महा दुति कौन करे बखान ।
लोचननि को लाहु लीजे छाड़ि कुलकी कानि ॥
रूप अनूपम देखि विसरत पाठ पूजा ध्यान ।
जुगल छवि की छटा वर्णत शारदा सकुचानि ॥
विबुध हर्षत सुमन वर्षत करत जय जय गान ।
जानकी जीवन की जोड़ी सकल मुद की खानि ॥

❀ पद ११० ❀

जय जय २ जनक सुता महारानी ।

विवुध वन्दिता जग अनंदिता सकल सिद्धि की दानी ।
करुणा कृपा दया की मूरति आगम निगम बखानी ॥
सखियन की सुख दायक सब विधि रघुकुल की पटरानी ।
अर्थ धर्म कामादिक दायनि सकल सुकृत की खानी ॥
सन्त जनन की इष्ट देवता राम प्रिया जग जानी ।
जानकि जीवन जिनको ध्यावत गणपति शम्भु भवानी ॥

❀ पद १११ ❀

जिस मनको तुमने छीन लिया उसकी फिर सेहत क्या होगी ।
पलछिन है पड़ता चैन नहीं फिर और मुसीबत क्या होगी ॥
हंसता अरु रोता घबराता दर २ की ठोकर खा करके ।
तुम देख उसे मुसकाते हो फिर और मुहब्बत क्या होगी ॥
तेरी छवि का दीवाना बन जंगल में फिरता मस्ताना ।
तुम मन्त्र वशीकर सीखे हो फिर जादू टोना क्या होगी ॥
कुछ तरस नहीं दिल लाते हो झट चित्त चुरा भग जाते हो ।
दुख देना ही अच्छा लगता है फिर और हिफाजत क्या होगी
जानकि जीवन कहला करके निज भक्तों को तड़पाते तुम ।
गर ऐसा ही नित हाल रहा फिर तेरी इबादत क्या होगी ॥

❀ पद ११२ ❀

करजोर विनय कुछ करता हूं सिय स्वामिन तेरे चरनों में ।
तन मन को अर्पन करता हूं सिय स्वामिन तेरे चरनों में ॥
पद पंकज में स्नेह रहे बढ़ता अनुदिन नव नेह रहे ।
घर या बाहर यह देह रहे रहे प्रेम तुम्हारे चरनों में ॥

तेरा नाम जपूं गुन गान करूं अरु चरनों का नित ध्यान धरूं।
हरदम ही मेरा चित्त रहे सिय स्वामिन तेरे चरनों में ॥
मद क्रोध लोभ ने घेरा है पर एक भरोसा तेरा है।
मिले शरण जानकी जीवन को सिय स्वामिन तेरे चरनों में ॥

❀ पद ११३ ❀

किशोरी तेरे पद पङ्कज की प्रीति।
भव भेषज तव चरन कमल रज श्रुति पुराण कह गीत।
पाप ताप संताप दूरि करि मेटत भव की भीति ॥
रघुनन्दन से प्रेम बढ़ावत खल कामादिक जीत।
बिनु तव कृपा मिलत नहिं रघुवर ए है परम प्रतीति ॥
जीवन को प्रभु सन्मुख करतीं यही तुम्हारी नीति।
जानकि जीवन दुख को मेटत यही सदा की रीति ॥

❀ नौका बिहार पद ११४ ❀

पिया के संग में सिय प्यारी सु नौका में विहरती हैं।
मुदित होकर श्री सरयू जी सु जय जय कार करती हैं ॥
जटित मनियों से नौका में बना है रत्न सिंहासन।
सु दम्पति संग में अलियां छबी रति को निदरती हैं ॥
मधुर मुसकानि दोउन की अतुल अनुपम मनोहर है।
सकल सुर बाम लखि २ के मुदित मन गान करती हैं ॥
छबि यह जानकी जीवन बसा लो दृगन के अन्दर।
निमिष पल छिन बिना देखे न अंखियां धीर धरती हैं ॥

❀ नौका बिहार पद ११५ ❀

नौका पर विहरत पिय प्यारी।

संग में सोहत सखी सहेली शोभा अति भारी ।
सरयू लहर लेत अति मुद सो बोलत जय २ कारी ॥
त्रिविध बयार चलत सुखदाई दम्पति सुखकारी ।
राम सिया दोउ पगे प्रेम में गल बहियां डारी ॥
जानकी जीवन जोड़ी अनुपम मुद मंगल कारी ॥

❀ नौका विहार पद ११६ ❀

अवध के छैल रघुनन्दन सिया के सँग विहरते हैं ।
रती और काम की शोभा को लज्जित आज करते हैं ॥
जटित मनियों की सुन्दर ए बनी अति भव्य नौका है ।
जड़े हैं नग अतुल अनुपम जगामग जोति करते हैं ॥
है सरजू दूध की धारा मुदित होकर के बहती हैं ।
सखिन के मधुर गायन सुनि मुनिन के ध्यान टरते हैं ॥
प्रिया प्रीतम की प्यारी छवि निरखि के जानकी जीवन ।
विबुध हर्षे विमानन चढ़ि सु जय २ धुनि उचरते हैं ॥

❀ पद ११७ ❀

हमारे श्री जनक लली को राज ।
जिनके आयसु के अधिकारी ब्रह्मादिक सुरराज ।
निश दिन विनय करत करजोरे सुरतिय सहित समाज ॥
अष्ट सिद्धि मुख कमल विलोकत नव निधि सन्मुख आज ।
कृपा विलोकनि चाहत रघुवर रसिकन के सिरताज ॥
देवी देव की आस छाड़ि के सिय चरनन अनुराग ।
जानकि जीवन दर्शन करिके देव सराहत भाग ॥

❀ पद ११८ ❀

श्याम सुन्दर से लागी नजरिया रे ।
जब से लखी मोहनी मूरत बुद्धि भई बावरिया रे ।
अनियारे कजरारे नैना चितवनि जुलुम जहरिया रे ॥
ललित लुनाई अति सुघराई मन्मथ को मदहरिया रे ।
लोक लाज कुल कानि जगत की विसरी प्रेम डगरिया रे ।
जानकि जीवन छवि के ऊपर करि तन मन बलिहरिया रे ॥

❀ रास झपताल पद ११९ ❀

रसिक शिरोमणि कनक मध्य,
राजत सिय संग अति सुखदाई ।
अङ्ग अङ्ग अगणित मदन बिमोहा,
छवि लखि प्यारी रतिहु लजाई ॥
प्यारी सुख दायक रघुवर संग,
चारुशिला सर्वेश्वरि गाई ।
सकल कलनयुत उदित मयंक से,
अनुपम छवि लखि हिय हरषाई ॥
जानकि जीवन शरन सिया की,
सखियन के संग सुख अति पाई ॥

❀ रास पद १२० ❀

हमारी सिय स्वामिनी संग निरतत रास विहारी ।
कनक भवन श्री रास कुन्ज में भीर सखिन की भारी ।
अगणित सहचरि नाचत गावत दम्पति की सुखकारी ॥

घन दामिनि वर वरन दोउन छवि शरद चंद उजियारी ।
लचकनि मचकनि रति पति लखि के दीन्ह सुतन मन वारी॥
नभ प्रसून बरसत सुर हर्षित बोलत जय जय कारी ।
जानकी जीवन छवि को वरने शारद की बुधि हारी ॥

❀ रास पद १२१ ❀

आज दोउ उरझि उरझि मुसकात ।
कर कपोल गहि अरस परस दोउ नैनन सों बतरात ।
अंश भुजा दिये प्यारी प्यारे शोभा किमि कहि जात ॥
दम्पति अधर सुधा रस लोभी पीवत नहि अघात ।
मद के भरे सांवरे अरुझे उर कठोर दरसात ॥
अगनित सहचरि सुख समुद्र में उमगत गोता खात ।
जानकि जीवन शरण दरश करि आनन्द उर न समात ॥

❀ रास पद १२२ ❀

पिय प्यारी रास करत मुद सों,
संग चारुशिला गुण आगरिया ।
बहु भाव कटाच्छ सों नृत्य करैं,
पिय के संग में नव नागरिया ॥
कर कंज गहे मुख कंज विलोक,
सिया सुख सिंधु की आगरिया ।
बहु प्रेम प्रमोद सों रास करे,
श्री दम्पति आनन्द सागरिया ॥
छबि जानकी जीवन को वरनै,
भई शारद की बुधि बावरिया ॥

❀ रास पद १२३ ❀

किशोरी तेरे नयना मद सों भरे ।
चितवति ही मोहिं घायल कीन्ही कुछ नहिं सूझि परे ॥
मदन कृशानु व्यथित कर दीन्ही शिथिल अंग सबरे ।
गद गद कन्ठ बचन नहिं आवत, बदन सों स्वेद झरे ॥
मार दर्द की औषधि प्यारी हिय लगि पीर हरे ।
जानकि जीवन प्यारी छवि को प्यारो ध्यान करे ॥

❀ गारी १२४ ❀

जनक दुलारी रघुवर जेवत सखियां हिय हर्षाती है ।
हेमथार मनि जटित कटोरा व्यंजन सरस सजाती है ॥
मिश्री माला खुरचन पेड़ा घेवर फेनी लाती है ।
मालपुवा तसमई इमरती रसगुल्ला सरसाती है ॥
दाल सेव नमकीन कचौड़ी पूड़ी गरम स हाती है ।
सोंठ अचार मुरब्बा चटनी पापड़ दही मंगाती है ॥
आलू परवल सेम करेला अगणित साग गिनाती है ।
भांति २ के बहु पकवाने वर्णत पार न पाती है ॥
निजकर कमल पवावति दम्पति छवि निर्खत हर्षाती है ।
जुगल रूप वर रुचि सो जेवत लखि मनमोद बढ़ाती है ॥
जानकि जीवन छवि के ऊपर बार २ बलि जाती है ।

❀ रास पद १२५ ❀

छयल तेरी चितवन मदन कटार ।
चितवत मोहि कतल कर दीन्हों रही न देह सम्भार ॥

मन्मथ व्यापेउ सकल अङ्ग अङ्ग कम्पित गात अपार।
बांणी प्रगट होत नहि मुख से नयननि झरत सुवारि॥
जानकि जीवन हृदय लगाले तू ही मेरा दिलदार।

❀ रास पद १२६ ❀

सिया जू स्वामिनी रघुवर मुदित मन रास करते हैं।
ललित अङ्ग लखि सु प्यारी के, मदन रति को निदरते हैं॥
करैं वर्णन परस्पर दोऊ सकल अंग अंग की शोभा।
हंसनि हेरनि सु लखि सिय की छवी का ध्यान करते हैं॥
वदन सुन्दर मनोहर है शरद शशि पूर्ण आभा के।
करे प्रकाश क्या चन्दा जो जुग चन्दा बिहरते हैं॥
हैं अगनित सहचरी संग में सर्वेश्वरि चारुशीला जी।
रुचि को लखि सु दम्पति की परस्पर रास करते हैं॥
निरखि छवि जानकी जीवन युगल छवि की लुनाई को।
विबुध हर्षे बिमानन चढ़ि सुमन की वृष्टि करते हैं॥

❀ पद १२७ ❀

सिया जू अपनी सेवा में लगा लोगी तो क्या होगा।
अनेकों जन्म की बिगड़ी बना दोगी तो क्या होगा॥
पड़ा भव सिंधु में अटका न कोई संग साथी है।
पकड़ कर बांह हे स्वामिन निकालोगी तो क्या होगा॥
कृपा सागर दया की खानि तुमको वेद हैं कहते।
दया करके विरद अपना सम्हालोगी तो क्या होगा॥
तेरी करुणा की दृष्टी को है निश दिन चाहते रघुवर।

दया की दृष्टि दुखियों पर जो डालोगी तो क्या होगा॥
महा अघखानि वासव सुत पै तुमने है कृपा कीनी।
सु चितवनि चारु दृष्टी की पसारोगी तो क्या होगा॥
शरण हो जानकी जीवन तुम्हारे द्वार पर आया।
पकड़ कर अपने चरनों में बिठालोगी तो क्या होगा॥

❀ रास पद १२८ ❀

पिय प्यारी दोउ रास करत।
कनकभवन मध्य सखिन संग, निरतत हैं दोउ गान करत॥
आनन प्रसन्न मृदु मंद हंसनि दम्पति रति को मान हरत।
सिय मुख चन्द्र सुधा रस लोभी, राम रसिक रस पान करत॥
जानकि जीवन सिय के पग को, नूपर को नित ध्यान धरत।

❀ रास पद १२९ ❀

सखी लखु सिया रमन चित चोर।
शरद पूर्णिमा चन्द्र चांदनी, छिटक रही चहुं ओर॥
कनकभवन श्री रास कुन्ज में निरतत युगल किशोर।
श्रीचारुशिला संग अलि बहु गावत राग रागिनी कर कलशोर
दम्पति मुख मयंक को रतिपति निरखि दृगन की कोर।
कहि जय जय जानकि जीवन, जय रसिकन चित चोर॥

❀ पद १३० ❀

सिया जू मेरी राखि शरण मोहि लीजै।
दीन मलीन महा अपराधी अवगुन चित नहि दीजै॥
प्रणत पाल करुणा की मूरति वेद पुराण भनीजै।

कृपा रूपिणी नाम तिहारो अपनो विरद रखीजै ॥
हूं तव कृपा रूप की प्यासी दे दर्शन सुख दीजै ।
महल टहल की सेवा देकर सुफल मनोरथ कीजै ॥
जानकि जीवन शरण राखिके चरन कमल रज दीजै ।

❀ पद १३१ ❀

सियाराम मुख से न कहते बनेगा ।
तो जम जातना कैसे सहते बनेगा ॥
किये तुमने हैं पाप हंसकर जगत में ।
सो बदले में उसके तो रोना पड़ेगा ॥
अगर हो पतित फिर भी मन में तो सोचो ।
स्वयं पापी अपने को कहते बनेगा ॥
जगत में जो है दीन बन्धू कहाता ।
करोगे विनय तो न क्यों कर सुनेगा ॥
शरण जानकी जीवन की जो तू रहेगा ।
तो भव सिन्धु दुस्तर न क्यों कर तरेगा ॥

❀ शरद पद १३२ ❀

पावस पराई ऋतु शरद अवाई जान,
उदित अगस्त पंथ जल को सुखाते हैं ।
फूले बन कांस बहु बिमल प्रकाश लखि,
पथिक समाज निज काजन को जाते हैं ॥
मालती के फूलन पर अलिगन गूंज रहैं,
खंजन सु नृत्य सिय पिय को दिखाते हैं ।

कनक भवन मध्य जानकी जीवन आज,
जुग अरविन्द मुख इन्दु को लजाते हैं ॥

❀ शरद पद १३३ ❀

कनक भवन मध्य सिय पिय छबि लखि,
सकल कलन युत कियो है प्रकाश इन्दु ।
रास को समय जानि सिय रुख पहिचानि,
चारुशिला आदि दिव्य रूप सोहत अमंद ॥
कोई करे गान बहु नृत्य सु करन लागि,
अलिन के मध्य सोहे एक एक रघुनन्द ।
जानकी जीवन सुरतिय बनि निरखत,
सिय मुख इन्दु आगे फीको है शरद चन्द ॥

❀ रास पद १३४ ❀

लखो सखी दोउन को थिरकनियाँ ।
नूपर रव जनु सामवेद धुनि मुनि मन को मोहनियां ।
भृगनैनी पिकबैनी आदिक दम्पति संग कामनियाँ ॥
रास मध्य पिय प्यारी शोभा शेषहु वर्णि सकनियाँ ।
विबुध वधू लखि भाग सराहत सुफल करत लोचनियाँ ॥
मधुर मनोहर सुन्दर जोड़ी रति पति कोटि लजनियाँ ।
जानकी जीवन झाँकी निरखत तन की सुधि भूलनियाँ ॥

❀ जेवनार १३५ ❀

सिय संग जीमो जी राजकुमार श्रीमुख कंज निहार ।
कंचन थारी सखिय सवांरी व्यंजन विविध प्रकार ॥

अलिगन परसत हिय में हरषत प्रेम प्रमोद अपार।
खीर मलाई रबड़ी खुरचन मेवा सरस सुधार॥
पेड़ा बर्फी हलुआ फेनी रसगुल्ला रसदार।
दाल सेव नमकीन कचौड़ी पापड़ और अचार॥
सोंठ मुरब्बा रइता चटनी नव रतनी रुचिकार।
भांति भांति के बहु पकवाने किये सखिन तैयार॥
देत परस्पर कौर सु मुख में हो छवि पर बलिहार।
धनि तव भाग राम जी रघुवर सखियन के सरदार॥
विवुध विमान चढ़े सुर हर्षत वर्षत पुष्प अपार।
प्रीतम प्यारी पगे प्रेम में शोभा अमित अपार।
जानकि जीवन अनुपम झांकी लाजत कोटिन मार॥

❀ पद १३६ ❀

पाओ प्रसादी गुरुदेव हमारे।
सियवर हनुमत शेश प्रसादी जीमो मम नैनन के तारे।
पाइ प्रसादी जूठनि दीजे जन्म जन्म के पातक टारे॥
अचवनि करि वीरी मुख लीजे पूरे सब अभिलाष हमारे।
जानकि जीवन यह वर दीजे पद पंकज से होब न न्यारे॥

❀ विवाह पद १३७ ❀

सिया स्वामिनि बना रघुवर की क्या अनुपम ये जोरी है।
सकल अङ्ग अङ्ग की शोभा करों वर्णन सो थोरी है॥
मनोहर मौर मौरी की अमित छवि क्या करूं वर्णन।
जटित भूषन वसन सुन्दर सु द्युति दामिनि लजोरी है॥

हँसनि हेरनि व मृदु मुसकान अतुल अनुपम मनोहर है।
सुघरता श्री लली जू की लला के चित को चोरी है ॥
हरषि हिय जानकी जीवन, निरखते छवि हैं वारम्बार।
लगाकर नेह सिय जू से जगत का नाता तोड़ी है ॥

❀ बिवाह पद १३८ ❀

सिया वनरे की छटा अति प्यारी।
केकि कंठ दुति ललित सकल अंग,
तिरछी तकनि कतल करि डारी।
मन्मथ कोटि लजावन हारी,
सुन्दरता अखियां रतनारी ॥
जनक नगर नर नारिन के,
चित चोरन के हित बने शिकारी।
सिया मुख चन्द सुधा अवलोकत,
दृग चकोर भये सुधि बुधि हारी ॥
जानकि जीवन गृह सुधि भूली,
लगी ललित मिथिला ससुरारी ॥

❀ गारी १३९ ❀

छैला रसिक शिरोमणि रघुवर सुनो मधुर स्वर गारी जी।
प्रेम सुधा रस भरे व्यंग कहि गावत सरहज सारी जी ॥
बहिन तुमारी अति गुनवारी नव जोवन मतवारी जी।
मिलो न राजकुमार जोग वर कोऊ सोच हिये में भारी जी ॥
भृङ्गी रिषि तपसी के साथे भगी सुभाव विचारी जी।

एक बात हम औरो पूछत रुचि कर परम पियारी जी॥
एक पिता है अगणित माता कौन करे रखवारी जी।
मन भावती मौज तब करती रघुकुल की उजियारी जी॥
तव कुल की मर्याद अनोखी गावत है श्रुति चारी जी।
दशरथ गोर गोर कौशिल्या गोरी बहिन तुमारी जी॥
तुमको सांवर कस जनमायो मइया करतव वारी जी।
सखि सब गावत मृदु मुसकावत हिय में हर्ष अपारो जी॥
देव विमान चढ़े हिय हर्षत बोलत जय २ कारी जी।
जानकि जीवन जीमत रुचि सो व्यंजन स्वाद उचारी जी॥

❀ विवाह पद १४० ❀

ये अनुपम प्रेम की मूरति, सिया स्वामिनि का दूल्हा है।
सु नीरज नयन घन दामिनि की जोड़ी क्या अतूला है॥
जटित मणियों से मंजुल मौर है शोभित ललित माथे।
बसन भूषन व जामा पीत, सुन्दर छवि का मूला है॥
युगल छवि जानकी जीवन वसा लो हिय के अन्दर में।
ये दम्पति की मधुर झांकी दृगन के बीच झूला है॥

❀ विवाह पद १४१ ❀

बना की छवि प्यारी बनी।
श्याम सरोज वदन रघुवर को सिय चम्पक वदनी॥
माथे मौर मनोहर सोहत मौरी जटित मनी॥
प्यारो बना बिलोकि बनी को भूली सुधि अपनी।
एक से एक छवी दोउन की शोभा अमित घनी॥

जानकी जीवन शरन दरस करि जय जय देवन भनी ॥

❋ पद १४२ ❋

प्रिया प्रीतम हँसि २ जीमि रहे रतिमन्मथ कोटिक लाजि रहे।
व्यंजन विविधि परोसति हर्षति सखियन के हिय हुलशिरहे॥
सुनिये रसिक शिरोमणि रघुवर एक बात हम पूछि रहे।
दशरथ गोर मातु सब गोरी तुम साँवर कस प्रकट भये॥
कोऊ श्याम भूप की सेवा मइया के चित लागि रहे।
तव कुल की मर्याद निराली हम पूछित सकुचात हये।
शांता बहिन तुमारो प्यारी करती नित शृङ्गार नये।
जोगी जती रिषी मुनि जनकी सेवा में चित्त लागि रहे॥
समय पाइ शृङ्गी रिषि के संग प्रेम प्रमोद सु प्रगट भये।
राजकुमारी रूप उजारी तपस्विन के चित चोर लये॥
सखि सब गावत मृदु मुसकावत सुख उपजत नहिं जातकहे।
जानकि जीवन सिय स्वामिन के पद पंकज चित लागि रहे॥

❋ पद १४३ ❋

भजु मन जानकी के चरन।
मृदुल शीतल भय विनाशक आपदा के हरन।
पाप ताप निबृत्त कारक राम सन्मुख करन॥
अष्ठ सिध नव निधि के दाता दुख दारिद्र दवन।
करत सदा प्रकाश हिय में दीन जन उद्धरन॥
जानकि जीवन हूं चाहत आपही की शरण॥

❀ विवाह पद १४४ ❀

सिय बनरे की लखो छवि प्यारी ।
सोहत मौर मनोहर माथे सेहरे की लटकनि क्या न्यारी ।
वयस किशोर मार मद मोचन चितवनि चितकी चोरनिहारी॥
सीय राम दोउन की छवि पर रति पति कोटि २ बलिहारी ।
जानकी जीवन अवध बने से लगा प्रेम भूल्यो घर वारी ॥

❀ विवाह पद १४५ ❀

सबन मिलि दूलह निरखोरी । लाज सब मग में पटकोरी ॥
दोहाः—छवि निरखत भइ बावरी,
जनक पुरी की नारि ।
सिय को देखत पिय बिके,
दीन्हो तन मन वारि ॥
बदन लखि हिय अति हुलसोरी ॥सबन॥
दूल्हा आलिन मन हर्यो ।
नयनन शयन चलाय ॥
प्रेम की मूरति निरखि के ।
सबहि लियो अपनाय ॥
भयो सिय मन को भायोरी ॥सबन॥
श्याम बने घनश्याम छवि ।
सिय जू तड़ित लखाय ॥
प्यारे की अद्भुत छटा ।
शोभा अति दरसाय ॥

छवि अति प्यारी अनुपम री ॥सवन॥
ब्याह विभूषन साज को ।
वरणन का पै होय ॥
जानकि जीवन मद भरे ।
उपमा जाय न जोय ॥
भयो सुख हिय अति हरष्योरी ॥

❀ पद १४६ ❀

अचल रहे ए सुहाग लड़ैती तेरा ।
अचल श्रीदशरथ अचल कौशिल्या अचल सुसखिन समाज ।
देवर भरत लखन रिपुसूदन अचल सखी संग आज ।
अचल मांडवी अचल उर्मिला श्रुति कीरति सुख साज ।
पुरजन परिजन अचल रहे सब मन्त्री नृप युवराज ॥
अचल अयोध्या अचल जनकपुर भूपन के सिरताज ।
अचल जानकी जीवन निश दिन करे अवध को राज ॥

❀ पद १४७ ❀

कृपा की कोर से भगवन निहारोगे तो क्या होगा ।
पड़ा हूँ द्वार पर तेरे सम्हालोगे तो क्या होगा ॥
महा अधमी अलायक हूं सभी पतितों का नायक हूं ।
कठिन कलिमल ग्रसित जनको उधारोगे तो क्या होगा ॥
सुना है तुमने तारा है महा पापी से पापी को ।
उन्हीं के साथ में मुझको मिला लोगे तो क्या होगा ॥
पड़ा भव घोर निधि में हूं फकत तेरा सहारा है ।

पकड़ कर बाँह हे रघुवर निकालोगे तो क्या होगा ॥
दयालू दीन बन्धू भी तुम्ही को लोग कहते हैं ।
समझ करके विरद अपना बचालोगे तो क्या होगा ॥
दयानिधि भक्त वत्सल भी आगम अरु निगम कहते ।
पतित पावन जो प्रण अपना निभालोगे तो क्या होगा ॥
नहीं कुछ कामना मन में नहीं निर्वाण की इच्छा ।
शरण में जानकी जीवन लगा लोगे तो क्या होगा ॥

❀ विवाह पद १४८ ❀

रघुनन्दन सुख सिन्धु दूलहा बने आज ।
शोभा के ऐन सुबदन मधुर बैन,
मंद हंसिन से ये चित कोहरत आज ।
मौर मनोहर शोभित माथे,
भूषण जटित जोति जगमग करत आज ॥
नील कमल दुति श्यामल अङ्ग में,
पीत वसन चमक चपला हरत आज ।
जानकी जीवन लखि के निकाई,
सुमन वर्षि देव जय जय भनत आज ॥

❀ पद १४९ ❀

सिये बनरी की बना अति प्यारा ।
शोभा अतुल सांवरे अङ्ग की रति पति कोटि लजावनि हारा।
मनिमय मौर शीशपर राजत कुंडल जगमग जोति उजारा ।
भांति २ के वसन विभूषण नाशामनि दमकनि दुति न्यारा।

भृकुटी वंक सरोरुह लोचन प्रिय चितवनि जनु जादू डारा ॥
अङ्ग अङ्ग की छवि है न्यारी मृदु मुसकानि मोहनी वारा ।
अमित निकाईं की कवि वर्णे शेष शारदा वर्णत हारा ॥
लीजे निरखि नयनभरि जोड़ा करिके तन मन धन बलिहारा ।
विवुध विमान चढ़े हिय हर्षत बोलत जय जय कारा ॥
जानकि जीवन छटा निरखि के वर्षत सुमन अपारा ॥

❀ पद १५० ❀

सिय बनरी का बना गरबीला ।
केकि कन्ठ दुति श्याम अङ्ग पर रति पति कोटि लजीला ।
अधर अरुन मुसकान मनोहर नाशामनि अद्भुत दमकीला ॥
अङ्ग अङ्ग प्रति अमित निकाई तापर सोहत है पट पीला ।
नैनन सैन चलावत हंसि २ ऐसा गजब हठीला ॥
जानकि जीवन हिये बसालो रघुवर छैल छबीला ॥

❀ विवाह पद १५१ ❀

प्यारे बने की सूरत लखियों सखी सहेली ।
मूरति परम मनोहर वरनी न जात हेली ॥
तन श्यामपीत जामा लाजत है कोटि कामा,
इनसे अधिक ललामा स्वामिनि सियां नवेली ।
राघव की प्राण प्यारी मेरी जनक दुलारी,
अनुपम बनी बना की मन भावती है जोरी ॥
लीजे वसा हिये में जानकी जीवन दम्पति,
विसरे न एक पल भी झाँकी नवल नवेली ॥

❀ विवाह पद १५२ ❀

बना और बनी को ये जोड़ी मुबारिक ।
दोउ शीश पै मौर मौरी मुबारिक ॥
सिया सुन्दरी संग ए श्याम सुन्दर,
सु घन दामिनी की अंजोरी मुबारक ।
वसन और भूषण की शोभा अनूपम,
व मुसकान में चित की चोरी मुबारक ।
लजाते हैं सतकोटि रति पति छवी पर,
सदा जानकि जीवन उन्हीं संग मुबारक ॥

❀ जेवनार पद १५३ ❀

भोजन करत सिया रघुराई ।
कञ्चन थार विविध पकवाने मेवा और मिठाई ।
रसगुल्ला रसभरी इमरती मोदक खीर मलाई ॥
खाजा खुरमा सोहन पपड़ी घेवर बालूशाही ।
मालपुवा नमकीन कचौड़ी दाल सेव मन भाई ॥
परवल आलू सेम करेला तरकारी बहुताई ।
रइता चटनी आदि मुरब्बा नाम वरणि नहिं जाई ।
जेंवत पिय प्यारी अति रुचि सों स्वाद सुधा सम गाई ।
अतर लगावत जानकि जीवन तन की सुधि बिसराई ॥

❀ पद १५४ ❀

बन्नाबनी के नैना बान लखो सखि ।
मद के भरे अनोखे अनुपम तीखी धरी है तापै शान ।

शेहरा की ओट में चोट करत दोउ पावत सुख सु महान ॥
श्याम गौर शुभ अङ्ग मनोहर लखि लाजत रति काम ।
ललित कपोल नासिका मोती मन्द मन्द मुसकान ॥
दम्पति शोभा अतुल अनूपम को करि सके बयान ।
अलिंगन विवश भई लखि दूल्हा बिन ही मोल बिकान ॥
जानकि जीवन छटा निरखि के शारद हू सकुचान ॥

❀ जेवनार पद १५५ ❀

गारी गाऊं तुम्हें दिलदार यार मेरे सांवरिया ।
शशि वदना सुकुमार मनोहर,
शान्ता बहिन तुम्हार सरूप उजागरिया ॥
अवध शहर में निश दिन विहरत,
चञ्चल चपल अपार नवल तन नागरिया ।
अति कामिनि कामहु हिय हारे,
लखि के तन बेहाल भई बुधि बावरिया ॥
छैल छबीले राजकुमारन प्यार कियो,
बहु बार परी नहि भांवरिया ।
एक दिवस शृंगी ऋषि आए,
सेवा कीन्ह अपार बनी ऋषि नागरिया ॥
हुई प्रसन्न ऋषि के संग गवनी,
मानि लियो भर्तार सकल सुख सागरिया ।
जानकी जीवन यह यश तुमरो,
तुमही जानति हार ज्ञान गुन आगरिया ॥

❀ जेवनार पद १५६ ❀

जेंवत जनक दुलारी रघुनाथ कुंवर संग ।
व्यञ्जन परसि हिये में हरषत सखी सब गावत गारी ॥
कुंवर कुंवरि दोउ रघुकुल निमिकुल व्याह सकुल अनुहारी ।
तुम घनश्याम सिया दुति दामिनि जोड़ी मङ्गल कारी ॥
एक बात हम पूछति लालन कहिये सत्य विचारी ।
शृंगी ऋषि की नारी सुनियत शान्ता बहिन तुम्हारी ॥
ये तपसी वे राज कुमारी यह अचरज अति भारी ।
प्रेम सुधा रस भरे व्यंग सुनि सिय जू हँसि दे तारी ॥
जानकि जीवन भगिनी तुमरी सब गुण जाननि हारी ॥

❀ पद १५७ ❀

बनी की प्यारी प्यारी बनी ।
शशि वदनी सुकुमारि मनोहर शोभा अमित घनी ।
शेहरा सोहत मन को मोहत हीरा जटित मनी ॥
सिय मुख निर्खत अति सुख पावत श्रीअवधेश धनी ।
उमा रमा ब्रह्मानी मोहति सुन्दर छवि छवनी ॥
जानकि जीवन रूप विलोकत हर्षित सुर रमनी ॥

❀ पद १५८ ❀

सिय वनरी की छबी अति नीकी ।
शेहरा सोहत मुख मयंक पर चपला चमकनि फीकी ।
सोह नवल तन ललित लुनाई शारद वर्णन थकीसी ॥
भूषण वसन अङ्ग में शोभित मुसकनि भावत जीकी ।

प्रीतम प्यारे पगे प्रेम में चितवनि चारु अमीकी ॥
उमा रमा ब्रह्मानी आदिक करत दरश सियपीकी ।
जानकि जीवन रूप विलोकत पूरत आसा जीकी ॥

❀ जेवनार पद १५९ ❀

जैवन बैठे युगल रूप वर सखियां परसि पवाती हैं ।
कनक थार में विञ्जन अगणित सरस सुगंध मिलाती हैं ॥
घेवर फेनी पूड़ी कचौड़ी मोदक मुद सों लाती हैं ।
खाजा खुरमा तब जलेबी रसगुल्ला सरसाती हैं ॥
मालपूवा तस्मई इमरती मोहन खीर सुहाती हैं ।
षट रस व्यञ्जन विविध भाँति के परसि परसि हर्षाती हैं ॥
जानकी जीवन सहचरि लखि के बार २ बलि जाती हैं ॥

❀ जेवनार पद १६० ❀

सुनिए रसिक शिरोमनि रघुवर प्रेम सहित प्रिय गारी जू ।
भाव भरे रस भरे सखिन के मधुर बचन रुचिकारी जू ॥
शान्ता शान्ति स्वरूप तुमारी भगिनी पर उपकारी जू ।
अवध शहर के छैल छबीले प्यार कियो वहु बारी जू ॥
तदपि नाहि सन्तोष भयो उर नव यौवन मतवारी जू ।
समय पाय शृङ्गी ऋषि के संग भगी सुभाव बिचारी जू ॥
रूप शील गुण खानि बहिन तब कियो सुयश विस्तारी जू ।
जानकि जीवन कीरति तुम्हरी कीन्ही कुल उजियारी जू ।

❀ गारी पद १६१ ❀

नौसा बवुआ हो राउर सुनिये बात हमार ।।
तुम हो रघुकुल कमल दिवाकर श्रीअवधेश कुमार ।
तव कुल की मर्यादा रीती जानत सब संसार ॥
नौसा बवुआ हो राउर सुनिये बात हमार ॥१॥
शान्ता बहिन तुम्हारी प्यारी अति सुन्दर सुकुमार ।
ज्ञानी ध्यानी शृङ्गी ऋषि नित करते जिनका प्यार ॥
नौसा बवुआ हो राउर सुनिये बात हमार ॥२॥
राजमहल की राजकुमारी ऐसी परम उदार ।
सूर्य वंश उजागिर कीनी हुई तपसिन की नार ॥
नौसा बवुआ हो राउर सुनिये बात हमार ॥३॥
प्रेम सुधा रस भरे व्यंग सुनि सिय मन हर्ष अपार ।
जानकि जीवन भगिनि के गुन मन में लेहु बिचार ॥
नौसा बवुआ हो, राउर सुनिये बात हमार ॥४॥

❀ वनरा पद १६२ ❀

सिय वनरी का बना अति बांका ।
मनिमय मौर मनोहर शोभित रवि शशि कोटि प्रभाका ।
ललित कपोल नयन रतनारे चितवनि डारत डाका ॥
वसन विभूषण की छवि अद्भुत नहि कोउ पटतर जाका ।
प्रेम मगन हो अलिगन हर्षत निरखत छवि दुलहाका ॥
जानकि जीवन रूप अनूपम रति पति कोटि लजाका ॥

❀ गारी पद १६३ ❀

सुनिये श्री अवधेश कुमार छवि पर लाजत कोटिन मार ।
कैसे बची होयगी नार प्यारे घर वारी जी ॥प्यारे ॥
दूजे शान्ता बहिन तुम्हार, फिरती जोवन की मतवार ।
त्यागी तपसी करते प्यार ऐसी गुनवारी जी ॥प्यारे॥
जिनके घर की ऐसी रीति, बाहर कौन करे परतीति ।
दुनिया गावे घर घर गीत ऐसी कीर्ति तुम्हारी जी ॥
हमारी स्वामिनि के सरकार, विनती सुनलो मेरे यार ।
जानकी जीवन लेहु बिचार बातें सुखकारी जी ॥प्यारे॥

❀ अचवन पद १६४ ❀

दोउन की निरखत सुघराई ।
हेम पात्र में सरजू जल ले अचवन करवाई ॥दोउ॥
अधर अरुण मुख कंज सु पोंछति जनु सम्पति पाई ।
अतर लगावत अङ्ग को परसत तन सुधि बिसराई ॥दोउ॥
जानकि जीवन सिय स्वामिनि की शेष प्रसादी पाई ॥दोउ॥

❀ पद १६५ ❀

कनक महल में मोद भरे दोउ जीमत हैं पिय प्यारी जी ।
मणिमय हेम कटोरा शोभित कञ्चन थार सुधारी जी ॥
पूड़ी गरम कचौड़ी गुझिया पापड़ सेव सोहारी जी ।
दालमोट नमकीन समोसा काजू पिस्ता न्यारी जी ॥
आलू लौकी भिन्डी परवल भांति २ तरकारी जी ।

रसगुल्ला रसभरी इमरती रबड़ी खुर्चन प्यारी जी ॥
मालपुवा अरु मिश्री मावा मोदक प्रिय रुचिकारी जी ।
घेवर फेनी हलुआ सोहन नुक्ती वर्फी प्यारी जी ॥
सोट अचार मुरब्बा चटनी नौरतनी रतवारी जी ।
विविधि भांति पकवान मिठाई वर्णत पार न पारी जी ॥
दम्पति पावत मृदु मुसकावत सखिन के मुदकारी जी ।
देव सुमन वर्षावत हर्षत बोलत जय जय कारी जी ॥
लीजे निरखि नयन भरि जोड़ी कर तन मन बलिहारी जी ।
जानकि जीवन रूप अनूपम वर्णत शारद हारी जी ॥

❀ आरती पद १६६ ❀

आरती अवध विहारी की श्रीरघुवर राजदुलारी की ।
वदन की द्युति मयंक दमकै, दामिनी घन में ज्यों चमकै,
मुकुट कुन्डल की छवि छलकै, सुरति पति मद के हारी की ।
अनुपम सुन्दर जोड़ी है, सुचितवन चित्त को चोरी है,
सखी संग लाख करोरी है, प्रिया प्रीतम सुखकारी की ॥
लिये कोई छत्र विजन ठाढ़ी, सु दम्पति छवि पर मतवारी,
है करती तन मन बलिहारी, सु छवि लखि रासविहारी की ।
छवी लखि जानकी जीवन की, न कोई पटतर है जिनकी,
सु वरसत सुमन हिये हरषी, बिवुध गन जय २ कारी की ॥

❀ आरती पद १६७ ❀

नख सिख छवि धर की, आरती करो रसिक वर की ।
श्याम तमाल जलद तन सोहै, भाल तिलक दुस्कन मन मोहै,

उपमा खोजत कवि सकुचो है,
मुकुट चन्द्रिका कुन्डल की।
अरुण कंजें दल लोचन शोभित,
पीत वसन भूषन छवि अद्भुत ॥
जगमग करत हरत दामिनि द्युति,
अरुण चरण पङ्कज नख की।
कोटिन सहचरि नृत्य करति हैं,
बहु तक ठाढ़ी छवि निरखति हैं ॥
मधुरे स्वर बहु यंत्र बजति हैं,
मुनि मन मोद बढ़ावन की।
अनुपम छबि बर्णी नहिं जाती,
दम्पति लखि लखि बलि २ जाती ॥
सु रति पति हर्षि सुमन बरसाती,
कहि जय जानकी जीवन की ॥

❀ पद १६८ ❀

जुगल वर के जिमाने की खुशी दिल में समाई है।
सरस व्यञ्जन परस करके सखीजन थार लाई है ॥
प्रिया प्रीतम मुदित मन हो हैं बैठे जीमने दोऊ।
सखी गण प्रेम से हर्षित सिया के पास आई हैं ॥
फंसी सब प्रेम में सखियां सु प्यारे की छबी ऊपर।
सुनाऊं लाल को गारी सभी के मन में भाई है ॥

गये तुम संग मुनियों के बने चेला रहे बन में ।
बहिन शान्ता को शृङ्गी ऋषि ने तुमसे कैसे पाई है ॥
हो तुमतो राज रघुवंशी के जीजा जी जटा धारी ।
परम प्यारी बहिन तुमरी ऋषी के मन को भाई है ॥
अनोखी बात तव कुल की कहां तक मैं करूं वर्णन ।
तुमारे बाप गोरे हैं छबी कहँ श्याम पाई है ॥
सु अपने कुल की मर्यादा तुम्हीं हो जानते रघुवर ।
सुना हमने जो था कुछ भी उसी को कह सुनाई है ॥
ए सुनकर व्यंग अमृत से मुदित मन जीमते प्रियवर ।
निरखि छवि जानकी जीवन न सुख मन में समाई है ॥

❀ पान पद १६६ ❀

दोउन पान खवावति अलियां ।
वीरी देत सुगन्ध लगावत, छवि पर सखि जावे बलियां ।
कनक भवन में राजत दम्पति रूप सुधा वरसनियां ॥
जानकी जीवन अमित निकाई रति पति कोटि लजनियां ।

❀ पान पद १७० ❀

हँसि हँसि पान खवावत अलियां ।
मुख शोभा, अधरन अरुणाई,
मानहु खिली कंज की कलियां ।
पिय प्यारी दोउ पगे परस्पर,
बीड़ा देत सु मुख में अलियां ॥

सखि सब अतर लगावत हर्षत,
चारुशिला रस की करि बतियां ॥
जानकि जीवन छवि को लखिके,
बार बार जायें बलि बलियां ।
हंसि हंसि पान खवावत अलियां ॥

❀ पद १७१ ❀

सुनिये रसिक राय रघुनन्दन प्रीति रीति रुचि गारी जी ।
तव कुल की मर्याद अनोखी वेद पुराण पुकारी जी ॥
एक पिता अगणित महतारी लाज शरम गुनवारी जी ।
परम उदार बहिन है तुमरी अतिशय पर उपकारी जी ॥
रूप उजारी सब गुनवारी तपसिन की प्रिय नारी जी ।
राजघरन की बात अनोखी कहँ लगि कहों पुकारी जी ॥
माता पिता गोर हैं तुमरे गोरी बहिन तुमारी जी ।
तुम कस भये सांवरे लालन यह अचरज अति भारी जी ॥
शान्ता शान्त स्वरूप तुमारी मुनियन की घरवारी जी ।
होत व्याह सम्बन्ध सबन का निज कुल जाति विचारी जी ॥
जीजी तुमरी रूप आगरी जीजा तपसी भारी जी ।
व्यंग वचन सुनि जेंवत रुचि सों रसिकन के हितकारी जी ॥
प्रेम सुधारस भरी गारि सुनि हिय में मोद अपारी जी ।
जानकि जीवन तुमरे कुल की रीति जगत से न्यारी जी ॥

❀ विदाई पद १७२ ❀

छयल दिल, लेके अवध जाते हो ।

सुरति तिहारी हिये में बस गई,
अब क्यों सजन मोहि तरसाते हो ॥छयल॥
कब अइहौ मिथिला रघुनन्दन,
सांची कहो क्यों सकुचाते हो ॥छयल॥
लालन फंसे ननद के फन्दे,
ताते तरस नहिं जिय लाते हो ॥छयल॥
जानकि जीवन प्रेम लगा के,
क्यों विरहिन को तड़पाते हो ॥छयल॥

❀ विदाई पद १७३ ❀

अवध क्यों जाते हो मेरे यार ।
प्रेम लगा के चित को चुरा के अब क्यों तरसाते मेरे यार ॥
सिय स्वामिनि संग मिथिला रहिये, सुन मेरे दिलदार ।
जानकि जीवन सब सखियन का तू ही राजकुमार ॥

❀ वसंत पद १७४ ❀

सजे वसंती साज सिया वर त्रिभुवन के शृङ्गार ॥सि०॥
मणिमय भूषण बसन बसन्ती गले वसंती हार ॥सि०॥
सिया पिया के मन सु वसंती शोभा अमित अपार ॥सि०॥
राजत दोउ वसंत कुञ्ज में सखियन के सरदार ॥सि०॥
जानकि जीवन छवी वसंती लाजत कोटिन मार ॥सि०॥

❀ वसंत पद १७५ ❀

बने बसन्ती आज सिया वर ।
हेय रंग के वसन विभूषण अरु सोहत मणिहार ॥सि०॥

कनकांगी सिय स्वामिनि के संग कनक सिंहासन राज ।
पीत पीत सब सौज लिये सखी पीत चंवर कर ढार ॥
पीत कुञ्ज में जानकि जीवन लाजत कोटिन मार ॥सि०॥

❀ बसंत ध्रुपद १२ मात्रा पद १७६ ❀

गेंदा गुलाब फूले लखि ऋतु अनुकूले ।
बौरे आम सरसों पीत फूल दरसैं ॥
द्रुमन २ पुष्प शोभा लखि परत,
सरन में पीत कञ्ज गूंजत अलि हर्षें ।
हर्षित नाचत मोर सिया पिया छवि लखि,
ललित लता झूमि झूमि सुमन बहु वर्षें ॥
ऋतुपति अवाई जानि त्रिविध समीर बहत,
नवपल्लव सुमन देखि जानकी जीवन हर्षें॥

❀ होली पद १७७ ❀

आली छवि लखु प्रीतम प्यारे की ।
छैल छबीले भरे उमंगन होली के मतवारे की ।
कन्चन की पिचकारी लीने झोली अबिर सुधारे की ॥
लली लाल दोउ फगुआ खेलत प्रेम प्रमोद अपारे की ।
झुन्ड २ मिलि सखी सहेली स्वामिन सिया हमारी की ॥
मलत गुलाल कपोलन हसि २ लपटि झपटि रिझवारे की ।
नाच नचावत हिलमिल गावत रघुवर राज दुलारी जी ॥
दम्पति मोद भरे हर्षावत सुधि नहिं सांझ सकारे की ।

विवुध विमान चढ़े हिय हर्षत वर्षि सुमन जयकारे की ॥
जानकि जीवन छवी अनूपम रति मन्मथ मद हारे की ॥

❀ बसंत पद १७८ ❀

खेलत वसंत सिय रसिक राज ॥
संग शोभित अलिगन को समाज ।
रघुवर संग सोहत सकल भ्रात,
झोलिन अबीर लिये सखा साथ ।
नयनन सयनन सों करत बात,
शोभा अनुपम नहिं वरण जात ।
सहचरि केशर को रंग बनाइ,
कर कञ्चन को पिचवन सुहाय ॥
प्यारी ढिग अलियां चली धाय,
श्रीराम रसिक को धर्‌यो जाय ।
श्री कनक भवन आंगन में लाइ,
सुख सागर को नागर बनाइ ॥
चूमहि कपोल कन्ठन लगाय,
कर गहि लालन को मलि गुलाल ।
छाड़हिं नचाय ताली बजाय,
बिथुरे कच आनन पै सुहाय ॥
लपटहि झपटहि गई लाज भागि,
इतते उतते दोउ समाज ।
बड़ भागिनि सिय स्वामिनि हमार,

पिय हंसत गले में बांह डार,
वर्षत प्रसून सुर चढ़ि विमान,
लखि जानकि जीवन छबि महान ॥

❀ पद १७९ ❀

सिय रघुवर खेलत फाग री ।
दोउ दिशि हौज भरे रंगन के शीशिन अतर गुलाब री ।
उतसे आये छैल छबीले इत सहचरि गुन आगरी ॥
सुखि सुनयनि भरी उमंगनि हरषित गावहिं राग री ।
हो हो होन लगी रंग वर्षत मानहु मघा झरि लाग री ॥
अबीर गुलाल छई नभ ऊपर दर्षत लालहि लाल री ।
लली लाल इक रंग जंग में गये सखा सब भाग री ॥
अलबेलनि नव नागर जू को पकर्यो भरि अनुराग री ।
मुख चूमै हँसि कन्ठ लगावे धरि गालन पर गाल री ॥
मणि मन्डप तर राजत दम्पति लखि मन्मथ रति लाज री ।
जानकि जीवन स्वामिनि पद लखि हृदय सराहत भाग री ॥

❀ वसंत पद १८० ❀

खेलत वसंत सिय कन्त री ।
सिय जू सरस रसाल मंजरी राम भ्रमर गूजन्त री ।
क्रीट चन्द्रिका शिरन मनोहर भूषण वसन लसन्त री ॥
द्रुमन सुमन अरु फूली सरसों दर्सावत हिम अन्त री ।
जानकी जीवन शोभा लखि के मन्मथ कोटि लजन्त री ॥

❀ होली पद १८१ ❀

सिय जू कनक भवन में खेलत पिय संग फाग ।
लैकर कंज हेम पिचकारी रंग सु इतर गुलाल,
भरि भरि रंग लाल पर छांड़त श्याम सराहत भाग ।
रघुवर विहंसि लाड़ली जू को पकर्यो भरि अनुराग,
गल लपटाय गुलाल मलत मुख प्रीति रीति रस पाग ॥
भरी प्रमोद सखी सब निरखत नैन अबीर गुलाल,
अलिगन संग जानकी जीवन सिया चरण चित लाग ।

❀ होली पद १८२ ❀

प्यारी निरखु छबी चित चोर की ।
कनक भवन मणिमय मन्डप तर रविशशि जोति अँजोर की।
खेलत फाग किशोर किशोरी शोभा सखिन की भीर की ॥
लै गुलाल निज निज कर कंजन मलनि सुहाय कठोर की।
सुसकनि चितवनि अङ्ग मरोरनि झकझोरनि बरजोर की ॥
भरि पिचकारी उरोजन मारत उमंग सु मन्मथ जोर की ।
जानकि जीवन पगे प्रेम में सुधि नहिं सांझ सु भोर की ॥

❀ होली पद १८३ ❀

प्यारी होली लखु रघुवीर की ।
खेलत फाग उमंग भरे दोउ सुधि बुधि नाहिं शरीर की ॥
कनक भवन मणिमय अँगनाई अमित सखिन की भीर की ।
केशर रंग भरी पिचकारी हिये लगत जनु तीर की ॥
अति कठोर उर गाहि कर कञ्जन मलन कपोल अबीर की ॥

सहचरि पकरि नचावहिं गावहिं,
नूपुर धुनि अति जोर की ।
तिरछी तकनि मन्द हँसनि,
हेरन हरनि सकल भव पीर की ॥
जानकी जीवन प्रेम भरे दोउ,
चितवनि चित्त अधीर की ॥

❀ होली पद १८४ ❀

रसिया मेरो आज खेलै होरी ।
कञ्चन को पिचका कर लीन्हे ।
अबीर गुलाल भरे झोरी ॥ रसिया० ॥
धरि २ प्रिय कपोल सखियन के ।
हँसि हँसि उमंगि मलै रोरी ॥रसिया०॥
रङ्ग पिचकारी उरोजन मारत ।
सारी सब रङ्ग में बोरी ॥रसिया०॥
अवलोकत मुख चन्द सिया को ।
सुधि बुधि हो गई सब भोरी ॥रसिया०॥
खेलत फाग परस्पर हिल मिल ।
हिय में उमंग नहीं थोरी ॥रसिया०॥
अलिगन लिपटि लाल को कर गहि ।
प्रिय मुख चूमत बरजोरी ॥रसिया०॥
जानकी जीवन हिये में हर्षित ।
होली मिल सब कुछ होली ॥रसिया०॥

❀ होली पद १८५ ❀

लाला को लली बनावो री ।
लहँगा ललित सुरंग रंग सारी चोली उर सु कसावो री ।
कानन कनक फूल नाशामणि गेंदी भाल लगावो री ॥
अलबेली नव नारि बना के गाल गुलाल लगावो री ।
चूमि कपोल दृगन भरि निरखो कन्ठ से कन्ठ मिलावो री ॥
बड़ भागिनि सिय स्वामिनि जू के हंसि २ पांय परावो री ।
जानकी जीवन युग स्वामिनि लखि बार २ बलिजावो री ॥

❀ होली पद १८६ ❀

अवध छैल होली में ऊधम मचाते ।
लिये हाथ पिचका सु रङ्ग को चलाते ॥
जो पाते कहीं पर अकेली सखी को ।
पकड़ कर सु गालों में लाली लगाते ॥
बड़े हैं ए सुन्दर सलोनी है मूरत ।
छबि को निरखि कोटि रति पति लजाते ॥
सिया की सहेली पकड़ती लला को ।
तो बन कर लली नाचते और गाते ॥
फंसे प्रेम फन्दे में जानकि जीवन ।
सिया के चरण में सु मस्तक नवाते ॥

❀ होली पद १८७ ❀

सँवरिया के गाल गुलाल लगी ।
अगणित सखा सखी मदमाती प्रेम प्रमोद पगी ।

ललो लाल दोऊ रंग जंग में भिरत उमगि उमँगी ॥
पकरि लाल के मलत कपोलन सखन की भीर भगी ।
दम्पति प्रेम भरे हिय हर्षत फाग के रङ्ग रङ्गी ॥
कञ्चन की पिचकारी लीन्हे केशर रङ्ग भरी ।
पिय प्यारी को फगुआ निर्खत सुरतिय रूप ठगी ॥
देव विमान चढ़े हिय हर्षात झरी सुमन सु लगी ।
जानकि जीवन रूप विलोकत भूरि बलाय भगी ॥

❀ चैता पद १८८ ❀

अवध नगरिया की बजरिया हो रामा ।
चलुरी सखियाँ, जहँ बिचरत सुख धाम राम,
नित संग श्री अवध दुलरिया हो रामा ।
चौहट सुन्दर परम मनोहर,
मणिमय महल अटरिया हो रामा ॥
धनिक बनिक वर वस्तु अनेकन,
शोभा अमित अपरिया हो रामा ॥
जानकि जीवन वरणि सकै को,
श्री साकेत नगरिया हो रामा ॥

❀ चैता पद १८९ ❀

बिपिन प्रमोद बहरिया हो रामा ।
लखुरी सखियां ललित बितान लता बहु सुन्दर,
लिपटी द्रुमन की डरिया हो रामा ।

बिबिध भांति के सुमन खिले बहु,
भंवर करत गुंजरिया हो रामा ॥
त्रिविधि बयारि बहति अति प्यारी,
दम्पति की सुखकरिया हो रामा ।
जानकी जीवन जहँ नित विहरति,
अगणित सखि मनहरिया हो रामा॥

❀ हनुमान जयन्ती पद १६० ❀

मारुत नन्दन जन्म महोत्सव आयो अति सुखदाई ।
गृह गृह बन्दन वार पताका, दीप कलश सजाई ॥
परमानन्द मगन सब गावत हनुमत जन्म बधाई ।
रामायण पारायण कीर्तन धुनि चहुं दिशा सुहाई ॥
स्वर्ण शैल समदेह जितेन्द्रिय तेज सु बल अधिकाई ।
रामदूत सिय के सुखदायक त्रिभुवन विदित बड़ाई ॥
जानकि जीवन शरन दरस करि आनन्द उर न समाई ॥

❀ बधाई पद १६१ ❀

आंगनवां में खेलि रहे हैं रघुवर संग सब भइया ।
भरत शत्रुहन लछमण संग में बालक विपुल सुहइया ॥
नील पीत झंगुली तन शोभित नाशामणि झलकइया ।
किलकनि नटनि हरत मुनि मन को बोली प्रिय तोतरिया ॥
मातु मुदित मन लेति बलइयां आनन्द उर न समइया ।
८८ पटात पुनि गिरत अवनि पर उठि नाचत ताथेइया ॥

ताकी शोभा को कवि वरणे शेषहु मन सकुचइया ।
विबुध विमानन चढ़े हर्षि हिय सुमन बृष्टि झरि लइया ॥

❀ बधाई पद १६२ ❀

सखि गावो बधाई सब मिलि के ।
परब्रह्म अवतार मनोहर आयो नरतन धरि के ।
सुमुखि सुनैनी करति आरती आनन्द चल्यो उमड़ि के ॥
दर्शन करि लोचन फल लीजै, तन बलिहारी करि के ।
विबुध विमान चढ़े वर्षावत पुष्प सु अंजलि भरि के ॥
जानकी जीवन रूप अनूपम लीजे हिये सु धरि के ॥

❀ बधाई पद १६३ ❀

बधाई बाजि रही घन घोर ।
दशरथ के गृह राम प्रगट भये सुख को ओर न छोर ।
भरत लक्ष्मण रिपुहन भइया सुन्दरता नहिं थोर ॥
भूसुर वृन्द अशीशें बोलत वेद ध्वनि करि शोर ।
राजा दान देत विप्रन को गऊ गज लाख करोर ॥
मृग नैनी पिक बैनी सहचरि गान करत चहुं ओर ।
सुर दुन्दुभी बजावत हर्षत कहि जय अवध किशोर ॥
जानकि जीवन जोड़ी अनुपम दुइ श्यामल दुइ गोर ॥

❀ बधाई पद १६४ ❀

हमारी सिया स्वामिनी जू की गावो बधाई ।

रानी सुनयना की कोख सिरानी, पुर प्रमोद अधिकाई ।
भरि भरि हेम थार मोतिन के युवती जनन लुटाई ॥
बिधु वदनी मृग नयनी गावत कोकिल कन्ठ सुहाई ।
ब्रह्माणी इन्द्राणी आदिक दरस करत मन भाई ॥
अमिय मूर प्रगटी सु जानकी जीवन की सुखदाई ॥

❁ बधाई पद १६५ ❁

बधाई सब मिलि गावो आज ।
दशस्यन्दन जू के राम प्रगट भये अचल भयो कुल राज ।
देत याचकन मुक्ता माणिक विप्रन कहँ गज राज ॥
सुर नर मुनि सबके दुख बीते मुदित सराहत भाग ।
हर्षित देव सुमन बरसावत विपुल दुन्दभी बाज ॥
जानकी जीवन शरन विलोकत उमंगि उमंगि अनुराग ॥

❁ बधाई पद १६६ ❁

बधाई गाइये हिल मिल, हैं जन्मे राम रघुरैया ।
चैत्र सित चारु नौमी आज, दिन सबको है सुखदइया ।
जिन्हें निगु न निरंजन निर्विकार देव हैं कहते ॥
वही दशरथ के गृह जन्मे सु भक्ति प्रेम दरशइया ॥
विवुध जय जय करें प्रमुदित, हो दरसन जानकी जीवन ।
शरन इनकी है सख की खान, भवबंधन की छोरवइया ॥

❁ बधाई पद १६७ ❁

कौशल्या माई सुत जायो अति बांका ।

वदन मयंक ताप त्रय मोचन कोटि काम उपमा का ॥
मृदु मुसकान माधुरी मूरति नहिं कोउ पटतर जाका ।
जानकि जीवन शरन दरस करि लेहु लाभ नयना का ॥

❀ बधाई पद १९८ ❀

हमारी स्वामिनि श्री सीता ।
मातु सुनयना के गृह जन्मी, संग सखी अगणीता ।
बजत बधाई त्रिभुवन माही, सुर मुनि के दुख बीता ॥
महाराज मिथिलेश द्विजन को देत दान मन चीता ।
रिधि सिधि सम्पति निरखि सवन की भये सुरेश लजीता ॥
जुत्थ जुत्थ मिलि कोकिल वयनी गान करत सुपुनीता ।
जानकि जीवन निसिदिन गावत सिय स्वामिनि गुणगीता ॥

❀ बधाई पद १९९ ❀

बधाई बाजि रही घमसान ।
दसस्यन्दन के गृह जग वन्दन, प्रगटेब्रह्म सु राम ।
अति सुन्दर सुकुमार मनोहर चारों सुख के धाम ॥
मातु कौशल्या हरषि हरषि अति देत द्विजन कहँ दान ।
देव सुमन वरसाय मुदित ह्वै करत अप्सरा गान ॥
जानकि जीवन सरस दरस करि पावत सुख सु महान ॥

❀ बधाई पद २०० ❀

चलो सखि देखन चारों भाई ।

ब्रह्म सच्चिदानन्द प्रगट भये दशरथ के गृह आई।
दुइ श्यामल दुइ गौर मनोहर खेलि रहे अंगनाईं॥
यश जाको निगमा गम गावत वर्णत पार न पाईं।
मात कौशल्या गोद खिलावत हर्षित लेत बलाई॥
सुर रंजन त्रैताप विमोचन संतन के सुखदाई।
विप्र धेनु हित प्रगटि अवनि पर प्रेम भक्ति दरशाई॥
जानकि जीवन रूप निरखि के नैनन को फल पाई॥

❀ पद २०१ ❀

किशोरी किशोरी किशोरी जपा कर।
कृपा की बिलोकनि सदा ही तका कर॥
लगा कर रटन नाम की तू अहिर्निश।
सिया जू का पद रज हिये ध्यान लाकर॥
ए कल्याण की खानि स्वामिनि जगत की।
श्री राघव की सब विधि से है ए सुखाकर॥
वो मृदु हास प्यारा सु करुणा दया की।
ए लोचन की चित चोर छवि को लखा कर॥
अमित माधुरी है छटा जानकि जीवन।
न बिसरे कभी लीजिए मन बसा कर॥

❀ पद २०२ ❀

आओ प्यारे मानुष तन का जीवन सफल बनायें।
गुरु कृपा से दिव्य रूप लहि दिव्य भाव में जायें॥

जनक लली के पद पङ्कज दृढ़ अनुराग बढ़ाये ।
निज नयनन लखि प्यारी सूरत मूरत पै बलिजायें ॥
रूप माधुरी छटा निरखि के मन में अति हर्षाये ।
जानकि जीवन शरण सदा ही दम्पति के गुन गाये ॥

❀ पद २०३ ❀

मन्द हंसनि अति प्यारी किशोरी जी की ।
प्यारे रघुवर प्यारी सिय जू शोभा अति सुखकारी ।
भाव भरी रस भरी विलोकनि, निरखत अवध विहारी ॥
अलिगन गावत अति सुख पावत, हिय में मोद अपारी ।
जानकि जीवन झाँकी लखि के, कोटि मदन रति वारी ॥

❀ पद २०४ ❀

श्री राम सुख धाम क्यों न भजे रे ।
फिर यह मनुज देह नाहीं मिले रे ॥
बहु जोनि श्रम आय, मानुष को तन पाय ।
भज ले श्री रघुराय, चिन्ता मिटे रे ॥
भव के तरन हेतु ये नाम है सेतु ।
तारे अजामिल से पापी बड़े रे ॥
गज गीध गणिका को दीन्हो है निज धाम ।
अघखानि मन जानि क्यों तू डरे रे ॥
जानकि जीवन है मुद दानि सुख खानि ।
सब छोड़ पद कंज क्यों न गहे रे ॥

❀ पद २०५ ❀

जुगल छवि लखि दृग नहिं अघात ।
ज्यों २ निरखत रूप अनूपम त्यों त्यों अधिक ललचात ॥
कोटि काम छबि श्याम अङ्ग की, नील कंज दरसात ॥
पीत कंज दुति सिय स्वामिनि की अद्भुत छवि छहरात ।
भीतर बाहर जित देखो तित श्यामा श्याम लखात ॥
नयनन बीच जानकी जीवन छवि झूलत दिन रात ॥

❀ पद २०६ ❀

कैसी झाँकी अजब दिलदार ये प्यारे रघुवर की ।
श्याम सरोज वदन की शोभा,
लाजत कोटिन मार ये प्यारे रघुवर की ।
तिरछी तकनि मन्द हंस हेरनि,
हिय बिच कसकनिहार, ये प्यारे रघुवर की ॥
रूप अनूपम छवि को वरणे,
शोभा अमित अपार, ये प्यारे की ।
लीजे देखि नयनन भरि सजनी,
श्री अवधेश कुमार, ये रघुवर की ॥
जानकी जीवन शरण छटा लखि,
बार बार बलिहार ॥ प्यारे० ॥

❀ पद २०७ ❀

दशा इस दीन की भगवन सम्हालोगे तो क्या होगा ।
मेरी इस दीनता पर कुछ विचारोगे तो क्या होगा ॥

सभी विधि से दुखित हूं मैं व रोगों से कृषित हूं मैं ।
ए मेरे कर्म भोगों को सुधारोगे तो क्या होगा ॥
न आसा और देवों की फकत तेरा सहारा है ।
पकड़ कर अपने चरनों में लगा लोगे तो क्या होगा ॥
अनेकों जन्म में भगवन भटकता ही रहा इत उत ।
दया की इक नजर मुझपे जो डालोगे तो क्या होगा ॥
महा अधर्मी अलायक हूं सभी पतितों का नायक हूँ ।
पतित पावन विरद अपनी सम्हालोगे तो क्या होगा ॥
अजामिल गीध को तारा रिषी पत्नी को उद्धारा ।
उसी रज कण को मुझपे भी जो डारोगे तो क्या होगा ॥
सभी की आस तज करके शरण हूँ जानकी जीवन ।
कृपा करुणा की दृष्टी को प्रसारोगे तो क्या होगा ॥

❋ पद २०८ ❋

जादू सो कछु मोपर कीन्हीं । श्री रघुनन्दन छलिया हे ॥
कोटि मनोज लजावनि हारे, नव सरोज लोचन रतनारे ।
मंद हंसिन तिरछी चितवनि से, मेरो मन वश करिया हे ।
मंगल मय मूरत प्रिय सूरत, निरखि देह सुधि होत विसूरत ।
रूप माधुरी ललित लुनाई, रति पति की छवि हरिया हे ।
जागत सोवत सुधि विसरे ना, विनु देखे जिय धीर धरैना ॥
अमित लुनाई लखि के सखि री, हो गई मैं बावरिया हे ॥
बिना मोल इन ही की होगई लोक लाज कुल कान खोय गई,
जानकि जीवन शरन पाइके हिय में मोद अपरिया हे ॥

❀ पद २०६ ❀

दृगन दृगन की चोट लखोरी ।
प्रेम सुधा रस मय प्रिय अंखिया,
चितवन में कछु खोट लखोरी ॥
तिरछी तकनि मन्द हंस हेरनि ।
सिय घूंघट की ओट लखोरी ॥
जानकी जीवन शरण छवि लखि ।
प्रेम से लोटय पोट लखोरी ॥

❀ पद २१० ❀

तेरा सिया जी करेंगी बेड़ा पार उदास मन काहे को करे ॥
जनकलली हैं जगकी स्वामी अरु घट २ की अन्तर्यामी ।
सिय जग की सिरजन हार उदास मन काहे को करे ॥
श्री आनन्द सिन्धु सुखराशी रघुवर के उर की बासी ।
सिय सम्पति की दातार उदास मन काहे को करे ॥
श्रीजनक नन्दिनी कहिये धन पुत्र आदि सुख लहिये ।
सिय जू कृपा आगार उदास मन काहे को करे ॥
भवपार जो होना चाहो सिय स्वामिन के पग ध्यावो ।
सिया विपति निवारन हार उदास मन काहे को करे ॥
सब सन्तन की हितकार। जानकी जीवन प्राण पियारी ।
सिय वांछित फल दातार उदास मन काहे को करे ॥

❀ पद २११ ❀

सिय जू है इक आस तुमारी ।

साधन हीन मन्द मति कामी मानस मलिन विकारी ।
महा मूढ़ पातक रत निशदिन तव पद कंज बिसारी ॥
अवगुन अमित कहां लगि वर्नौ अपराधी अति भारी ।
शोक शमन दुख दवन विरद तव वेद पुराण पुकारी ॥
दीन दयाल प्रणत जन पालक काहे मोहिं बिसारी ।
कहँ लगि कहौं कुचालि अपनी हिय की जाननि हारी ॥
जानकि जीवन शरण राखिये होय सुयश विस्तारी ॥

❀ पद २१२ ❀

मेरे प्यारे दरश दिखला दे, सिया जू के सांवरिया ।
सुषमा अयन मयन से सौगुन, दिव्य छटा छहरादे ॥सि०
राजीव नैन मनोहर मूरत चितवन से अरुझाले ॥सि०
नीक नखशिख सहज सलोनो सुख सौन्दर्य लुभा रे ॥सि०
मृदु मुसकनि अधरन अरुनाई नासामणि झलकादे ॥सि०
जानकी जीवन तरसत नयना, रूप पियूष पिलादे ॥सि०

❀ पद २१३ ❀

माधुरी मूरति मनोहर दिल में मेरे बस गई ।
देख प्यारे की छटा दृग जाल में मैं फँस गई ॥
क्या करूं किससे कहूं कुछ है कहा जाता नहीं ।
रूप के छवि सिन्धु में ऐसी अचानक फँस गई ॥
है सुहाता कुछ नहीं सखि देख कर उस रूप को ।
प्रेम की जंजीर में तन मन से ऐसी कस गई ॥

रात दिन प्रियवर को लेकर नाम कहती बार बार ।
अब बनाले अपनी रघुवर तेरे हाथों बिक गई ॥
जी चाहे जैसा कहे है सिय की करुना की नजर ।
जानकी जीवन शरन हो मैं तो भव से तर गई ॥

❀ पद २१४ ❀

लखो ए आज की झांकी छटा अद्भुत दिखाती है ।
सुघरता प्रिय जुगलवर की सभी के चित चुराती है ॥
ललित सारी लहरिया की सिया जू के नवल तन पर ।
ए जामा की अनूपम छवि सभी के चित चुराती है ॥
विराजे हैं सिया रघुवर सुमन में रचित झूला पर ।
ए मृग नयनी सु पिक वैनी सखी हँसि २ झुलाती है ॥
खड़ी हैं सहचरी अगणित किये शृङ्गार फूलों का ।
सुमन की मालले सहचरि सु दम्पति को पिन्हाती है ॥
बढ़ाते झोंक हैं प्यारे सिया मुख कंज को लखि कर ।
बिके बिन मोल ही रघुवर खुशी हिय में न माती है ॥
छबी यह जानकी जीवन करेगा क्या कवी वर्णन ।
जो शारद ही दरश करके न वर्णत पार पाती है ॥

❀ पद २१५ ❀

मुसकनि में मन मोहे री सिया जू के सजनवां ।
श्याम शरीर पीत पट धारे, हंसि हंसि मोतन हेरे री ॥
वयस किशोर मनोहर मूरति कोटि मदन छवि छोरे री ।

भृकुटी वंक सरोरुह लोचन चितवन में चित चोरै री ।
मृदु मुसकाय बावरी करि के नेक नजर नहिं फेरै री ॥
जानकी जीवन प्यारी झाँकी, बीच दृगन के झूलै री ॥

❀ पद २१६ ❀

सिया जू के नूपुर मोद भरे ।
रघुनन्दन को सुख उपजावत, प्रियतम धुनि उचरे ।
मन्द मन्द पद धरत धरणि पर, साम को गान करे ॥
मधुर मधुर रव अनुपम सुनके, मुनि जन ध्यान टरे ।
जयति जयति जय भूमि नन्दनी, बोलत विबुध खरे ॥
जानकी जीवन जनक लली की पद रज शीश धरे ॥

❀ एकताला १२ मात्रा पद २१७ ❀

घर घर से पुर बनिता गावत मंगलाचार ।
सेवा सौंज लिये हैं कर कञ्चन को थार ॥
कनक भवन को गवनो, जहँ राजत सरकार ।
दोउ दिसि में सखियाँ, चन्द्र वदनि सुकुमारि ॥
निरखि देव गन हर्षे, वर्षे सुमन अपार ।
जानकि जीवन जोड़ी लाजत कोटिन मार ॥

❀ पद २१८ ❀

तेरी झाँकी अजब दिलदार हो प्यारे सांवरिया ।
बिधु वदनी सिय स्वामिनि मेरी तुम सुषमा के सार ।
मन्द हँसनि चितवनि गर्वीली शोभा अमित अपार ॥
जानकि जीवन छबि को वरणै त्रिभुवन को शृङ्गार ॥

❀ पद २१९ ❀

किशोरी जू के चरण कमल की आस ।
देवी देव न जानो कोई जाऊं किसके पास ॥
अखिल लोक ब्रह्मांड नियन्ता दीन वन्धु रघुनाथ ।
जिनकी कृपा विलोकनि चाहत करत सकल रुख राख ॥
ताते निडर रहूँ मैं जग में गाऊं सिय गुन गाथ ।
जानकि जीवन शरन गहे ते मिटत सुजम की त्रास ॥

❀ पद २२० ❀

मेरी अर्जी सुनलो स्वामिनि सिया हमारी ।
मुझपै दया भी करदो मैं हूं बड़ा दुखारी ॥
मैं करके पाप भारी आया शरण तुम्हारी ।
अघपुञ्ज नाश करदो स्वामिनि सिया हमारी ॥
राघव की प्राण प्यारी क्लेशों के हरण हारी ।
मेरे भी दुख हर दो स्वामिनि सिया हमारी ॥
तव शरण जानकि जीवन चाहत कृपा विलोकन ।
करुणा की दृष्टि कर दो स्वामिनि सिया हमारी ॥

❀ पद २२१ ❀

सिया स्वामिनि की झाँकी करो सजनी ।
करुणा दया कृपा की मूरति,
हिय बिच ध्यान धरो सजनी ।
सुन्दर नैन मनोहर चितवनि,
रूप अनूप लखो सजनी ॥

अरस परस सखियन के संग में,
मृदु मुसकान लखो सजनी ।
जानकि जीवन के जीवन धन,
छबि अवलोकि जियो सजनी ॥

❀ पद २२२ ❀

सांवली सूरत मनोहर नैन भर के देख लो ।
प्रेम की सूरत सु प्यारी मन बसा कर देख लो ॥
क्या अतुल अनुपम छबी लख लाजते कोटिन मनोज,
अति ललित सुन्दर बदन है मन्द मुसकनि देख लो ।
कारे कजरारे सु प्यारे अति ललित सुन्दर सुखद,
ये बड़े लोचन हैं तीखे चोट खाकर देख लो ॥
मन के मोहन हैं सभी के जानकी जीवन शरण,
निरख कर अद्‌भुत छटा चित को गंवा कर देख लो ॥

❀ पद २२३ ❀

श्रीराम प्यारे हैं हम तुम्हारे,
बनो हमारे तो हम भी जाने ।
बड़ा कुटिल हूं कुमति कुजाती,
जगत बिदित हूँ महान पापी ॥
अधम उधारन हो तुम प्रतापी,
हिये में उधारो तो हम भी जाने ।
नरसिंह होकर के खम्भ फारा,

हिरण्य कश्यप उदर बिदारा।
भक्त प्रहलाद को उबारा,
हमें उबारो तो हम भी जाने ॥
जानकी जीवन शरण तुम्हारे,
पड़े हैं आकर के तेरे द्वारे ॥
सबों की बिगड़ी सदा संभारे,
हमें संभारो तो हम भी जाने ॥

❀ पद २२४ ❀

सिय वर की छबि को लखु प्यारी ।
शोभा ऐन मनोहर मूरत,
दम्पति की झाँकी सुखकारी ॥
मन्द हँसन चितवनि प्रिय सुन्दर,
शोभा अमित सु अद्भुत न्यारी ।
सुख के सार रूप के आगर,
छबि पर कोटि मदन रति वारी ॥
जानकी जीवन झाँकी अनुपम,
बरनत शारद हूं हिय हारी ॥

❀ पद २२५ ❀

किशोरी जी के अनुपम सोहत बाल ।
मानहुं अलि अमृत के लोभी, मुख शशि रहे निहार ।
गाथे बिच बिच कुसुम अनूपम शोभा अमित अपार ॥
चिक्कन कच कपोल अवलोकत रघुवर होत निहाल ।

प्रीतम प्यारी को मुख निरखत, फंसे रूप के जाल ।
नयन नयन में अरुझि रहे दोउ सुलझावत बहु बाल ॥
जानकी जीवन जनक लली संग, सुख पावत तिहुँ काल ॥

❀ पद २२६ ❀

रघुनन्दन तेरे द्वार खड़ा, करुणा करके अपना लीजे ।
अति दीन मलीन दुखी हूं बड़ा,
निज भक्ति का दान दिला दीजे ।
हूं पापी दोष को कोष महा,
पद पंकज नाथ को आहि गहा ॥
अब दीन दयाल दया करके,
मम पाप औ ताप मिटा दीजे ।
तन पीन मलीन गरीब महा,
अरु पापिन का शिर मौर महा ॥
तुम अधम उधारन शरण गहा,
भव डूबत मोहि बचा लीजे ।
नहिं तन मन प्रीति प्रतीति कछू,
जप जोग औ ध्यान न जानू कछू ॥
तुम पतित उधारन नाथ महा,
मम अवगुन को बिसरा दीजे ।
जानकि जीवन शरण रहूँ,
पद पंकज की नित भक्ति चहूं ॥

अब नाथ है नाहिन ठौर कहूं,
निज किंकर मोहि बना लीजे ॥

❀ पद २२७ ❀

निहारूं जहाँ मैं वहाँ राम रघुवर,
दिखाता सुबाहर व भीतर वही है ।
अजन्मा गिरा ग्यान गोतीत है जो,
उसे पालना में झुलाता कोई है ॥
जिन्हें बेद बेदान्त निर्गुण बताते,
वो होकर प्रगट घूमता सब कहीं है ।
है तन सांवरो व सलोनी सी मूरत,
व हँस हँस के चित्त को चुराता वही है॥
जो उत्पन्न पालन का बिष्णु विधाता,
व सारे जगत का नियन्ता वही है ।
निराकार साकार हो जानकी जीवन,
लखै कौन उनको लखाता वही है ॥

❀ पद २२८ ❀

नयन तेरे बाँके रे साँवलिया ।
तिरछी तकनि मन्द हंस हेरनि,
कोटि काम लजाके रे साँवलिया ।
सुन्दर वदन मनोहर मूरत,
अतुल स्वरूप सुधा के रे सांवलिया ।

जानकी जीवन छबि अति प्यारी,
वरणत शेषहु थाके रे सांवलिया ॥

❀ पद २२९ ❀

सिय की मृदु मुसकान श्रवत अमृत की धार ।
पान करन हित रघुवर मुख को रहे निहार ॥
प्यारी शशि मुख चकोर अवधेश कुमार ।
एक टक निरख रस बस दोउ सरकार ॥
जानकी जीवन जोड़ी लाजत कोटिन मार ॥

❀ पद २३० ❀

प्रिय को निरखत प्यारी चितवन प्रिय बस कारी ।
भये रस बस बिहारी दीन्ह गले बाँह डारी ॥
लखि मुसकन मनहारी प्रीतम देह सुध बिसारी ।
बरषै सुमन बारंबारी विबुध करि जय २ कारी ॥
सखियाँ हर्षित मन भारी, जानकी जीवन छविनिहारी॥

❀ पद २३१ ❀

सांवरे अनियारे तेरे नैन ।
जाके लगत हृदय सुख उपजत बिन देखे नहिं चैन ।
बिना दाम लै लेत मोल मन दे दे तिरछी सैन ॥
लोचन गड़े दर्द उपजावत, पीर उठत सुख दैन ।
मृदु मुसकान मनोहर मूरत भूलत नहिं दिन रैन ॥
जानकी जीवन रूप अनूपम उपमा देत बनैन ॥

❀ पद २३२ ❀

राघो प्यारे जरा मुसका दो, जिया मेरा माने नहीं ।
अलक अति प्यारी, अजब घुँघरारी,
सुचिक्कन कारी, अहिर्निश भूलै नहीं ।
तकनि बस कारी, वदन छवि न्यारी,
अधर अरुनारी कोउ सम तूले नहीं ॥
नयन कजरारे, गजब छबि वारे,
कतल करि डारै, सुधि अब भूलै नहीं ।
निरखि अति शोभा, मेरा मन छोभा,
जानकी जीवन लोभा जिया अब माने नहीं ॥

❀ पद २३३ ❀

गुनि गावत राग की रानी ।
भैरव भैरवी वेराडी मधु माध सिंधवी,
बंगाल सख की खानी ।
मालकोश टोड़ी गोड़ी गुन कलो,
खेमावती ककुम महामुद दानी ॥
हिंडोल रामकली दे साख ललित,
विलोवली पट मंजरी सुहानी ।
दीपक देसी कामोदी नाट,
केदार कान्हरा है अति ही आनंद दानी ॥
श्री माखा धना श्री वसन्त माल,
श्री आसावरी आस पुरानी ।

मेघ टंकिका मल्लारी गुर्जरी भूपाली देस,
जानकी जीवन वेद बखानी ॥

❀ पद २३४ ❀

दशा इस दीन की भगवन संभालोगे तो क्या होगा ।
दया अति दीन दुखिया पर विचारोगे तो क्या होगा ॥
पड़ा भव सिन्धु में अटका न कोई संग साथी है ।
पकड़ कर बाँह हे भगवन् निकालोगे तो क्या होगा ॥
महा क्रोधी औ कामी हूं सभी पतितन में नामी हूँ ।
अधम उधार हो रघुवर, उधारोगे तो क्या होगा ।
कुकर्मी घोर पापी हूं निलज्जता में प्रतापी हूं ।
पतित पावन विरद अपना, संभालोगे तो क्या होगा ॥
नहीं सुत वन्धु दारा है न कोई का सहारा है ।
शरण में जानकी जीवन लगा लोगे तो क्या होगा ॥

❀ पद २३५ ❀

किशोरी जी से बतरावत रघुनन्द ।
नयन बदन मुख शोभा निरखत, रघुवर आनन्द कन्द ।
बचन सुनत में अति सुख उपजत, पावत अति आनंद ॥
मृदु मुसकन में अमृत झरति है, पीवत सहचरि वृन्द ।
जानकी जीवन ताप नशावत सिय जू को मुख चन्द ॥

❀ पद २३६ ❀

रघुनन्दन दरश दिखादे, निज चरणन मोहि लगा ले ॥

जग सहे दुख बहु तेरे, शुभ कर्म के गयउ न नेरे,
अब अघ मेरे विसरा दे ॥नि०
हूं अधम महा अभिमानी, कुछ सुकृत की नहीं निशानी,
मम करनी नाथ भुलादे ॥ नि०॥
मैं यद्यपि क्रोधी कामी, पद पद्म नमामि नमामी,
पद धूलि शीश भड़का दे ॥ नि० ॥
जानकी जीवन शरण तिहारे, अब आइ पड़े तव द्वारे,
कृपा करके प्रभु अपनाले, निज चरणन मोहिं लगाले ॥

❀ पद २३७ ❀

साँवरे के संग सोहें मेरी सिया स्वामिनी ।
गोरे गोरे गात गोरी सखी मन भावनी ॥
गावती बजावती सरस राग रागनी ।
प्यारे प्यारी शोभा अति मानो घन दामिनो ॥
हेरन हंसन काम रती की लजावनी ।
जानकी जीवन छबि लागत सुहावनी ॥

❀ पद २३८ ❀

किशोरी जी के चरण कल्पतरु छांह ।
भक्तों को चारों फल दाता जोगिन मुक्ति महान ।
अरुणारे पद कंज निरखि के रघुवर भ्रमर लुभान ॥
कोमलता सुन्दरता लखि के रती रमा सु लजान ।
जिनको ध्यान धरत निसि वासर रिषिमुनि संभु सुजान ॥

दास परस अरु ध्यान किए ते मिलत सु भक्ति दान।
जानकि जीवन हृदय बसावो सकल सुकृत की खान॥

❀ पद २३९ ❀

शीश पर शीश फूल चन्द्रिका मुकुट सोहे,
बेंदी भाल छवि अति लागत सुहाई री।
कानन में कुन्डल सु मनि माल उर राजै,
नासामनि प्रिय दमकनि मन भाई री॥
भूषण वसन अङ्ग शोभित हैं विविध रंग,
मृदु मुसकान प्यारी वरणि न जाई री।
जानकी जीवन संग सोहत हैं सखी बृन्द,
उपमा कहत शेष शारद लजाई री॥

❀ पद २४० ❀

क्या अजब सूरत मनोहर सांवरे दिलदार की।
देख कर जिनकी छवि, फीकी परी रति मार की॥
है बदन सुन्दर मनोहर कौन कवि वर्णन करे।
अतुल अनुपम है छटा ये रूप के आगार की॥
सिय तकनि मुसकानि में है वरसती जिनके सुधा,
पान करते हैं रसिक शोभा सु रूप अपार की।
जानकी जीवन की छबि लखि विबुध कहते बार बार,
जयति जय रघुवंश भूषन जय अवध सिरताज की॥

❀ पद २४१ ❀

साँवरे मद के भरे तेरे नयन!

अनियारे चंचल रतनारे प्यारे, अति अरमैन ॥
प्रेमीजन को सुख उपजावत, दृग तिरछो हो सैन ।
जाके लागत हिय बिच कसकत, रात दिना नहीं चैन ॥
सोवत जागत कल न परत तेहि बोल न आवन बैन ।
अति दुस्तर संसार तरन को, ये लोचन सुख दैन ॥
जानकी जीवन रूप निरखि के, लाजत कोटिक मैन ॥

❀ पद २४२ ❀

भव सिन्धु पार कर दो रघुवीर मेरी नैया ।
जग में नहीं है दूजा तुमसा कोई खेवइया ॥
बल करके थक चुका हूं मझधार में रुका हूं ।
अब तक मिला न कोई दीनों की सुधि लेवइया ॥
सुत नात बन्धु दारा जिनका लिया सहारा ।
दे करके भार सारा चाहत मुझे डुबइया ॥
जानकि जीवन शरण तिहारे करते सदा पुकारे,
हम अति अधीर प्यारे तुम धीर के बंधइया ॥

❀ पद २४३ ❀

दोहाः—

जगत विदित पापी महा, अधम नीच मोहि जान ।
जानकी जीवन करि कृपा, दया करो दिन दान ॥
सकल दोष को कोष में, पापी महा मलीन ।
जानकी जीवन दुख हरन, जानि शरण में लीन ॥
काम क्रोध अरु लोभ में, रहत सदा लपटान ।

एकौ पल सुमिरत नहीं, जानकी जीवन राम ॥
अवगुण अमित मलीन मन, हूँ पापन ते पीन ।
जानकि जीवन शरन हों, दुखिया महा मलीन ॥
अवगुण खानि मलीन मन, भक्ति प्रेम से हीन ।
जानकि जीवन शरन लो, तू दयाल मैं दीन ॥
मेरी ओर न हेरिये, हूं सब अघ की खानि ।
जानकि जीवन तव शरन, अधम उधारन बान ॥
विनय करत हा हा करत, मन मलीन हतभाग ।
जानकि जीवन नित चहत, तव चरनन अनुराग ॥
प्रगट करत लाजन मरत, पापिन को शिर मौर ।
जानकि जीवन शरन तजि, और नहीं कछु ठौर ॥

❀ पद २४४ ❀

अरे मन क्यों नहिं राम भजै ।
प्रीति प्रतीति पाप में निश दिन, कबहुँ नाहिं लजै ।
भक्ति ज्ञान वैराग्य नेम व्रत चित्त में नहिं उपजै ॥
अति अपार संसार कठिन है कैसे को तरिजै ।
करु अनुराग राम पद पंकज विषयन सों डरजै ॥
जानकि जीवन शरण गहे बिन, भटकि भटकि मरजै ॥

❀ पद २४५ ❀

जाऊँ तोपै बलिहार, प्यारे मेरे साँवलिया ॥
मृदु मुसकानि माधुरी मूरति, नयना अजब रतनार ।

सुठि सुन्दर सुकुमार मनोहर सुषमा अङ्ग अपार ॥
छवि विलोकत तन सुधि भूली, श्री अवधेश कुमार ।
जानकी जीवन रूप निरखि के लाजत कोटिन मार ॥

❀ पद २४६ ❀

किशोरी जी तेरो ही गुण गाऊँ ।
निश दिन नाम रटूँ सिय स्वामिनि तुम्हरहिं जूठन खाऊँ ।
करि विनती मांगू वर ये ही, तव चरनन चित लाऊँ ॥
जानकि जीवन चरन छांड़ि के, अनत कहीं नहिं जाऊँ ।

❀ पद २४७ ❀

श्री सीते मुझे अपना ले, तू ही मेरी स्वामिनि ।
शील सिन्धु सुख दानि राम की,
परम दया की खानि ॥तू० ही०॥
बिनु तव कृपा द्रवहिं नहिं रघुवर,
कृपा रूप कल्याणि ॥तू ही०॥
तेरे दरशन की मैं प्यासी,
रूप सुधा बरसा दे ॥तू ही०॥
तेरी छबि लखि मस्त रहूं मैं,
माया मोह मिटा दे ॥तू ही०॥
जानकि जीवन शरन तिहारे,
कृपा करि अपना ले ॥तूही मेरी०॥

❀ पद २४८ ❀

साँवरिया के जादू भरे दोउ नैन ।
जाके लगत चैन नहिं पावत, पीर उठत सुख दैन
मद के भरे हिय विच कसकत, बोलि न आवत बैन ॥
अति बाँके चंचल रतनारे, सुन्दरता के ऐन ।
जानकि-जीवन दृग देखे बिन पलक परत नहिं चैन ॥

❀ नवीन पद २४९ ❀

किशोरी तेरे चरन कमल की आस ।
कामी क्रोधी अघ अपराधी सब अवगुण की राश ।
ऐसो निलज लाज नहिं आवत भरमत बारहु मास ॥
मोसे पतित अनेकन तारे है जग में विख्यात ।
तेरी कृपा विलोकनि चाहत छाड़ी जग की आस ॥
शरनागत जिय मानि स्वामिनी कीजे नहिं निरास ॥
तुम हो कृपा दया की मूरति वेद विदित गुन गाथ ।
जानकि जीवन शरण राखिये मेटो भव की त्रास ॥

❀ पद २५० ❀

दया निधि क्यों नहिं दया करो ।
पतित उधारन नाम तुम्हारा सुनि तेरे द्वार परो ।
अधर्मी नीच महा अपराधी अघ अवगुननि भरो ॥
अधम अलायक क्रोधी कामी विषय से पेट भरो ।
गनिका गीध अजामिल तारे सन्तन गान करो ॥
पाप खानि जिय जानि नाथ मोहि काहे को निदरो ।

अगणित पापी जन उद्धारे तिन ते बड़ो चढ़ो ॥
जानकि जीवन कृपा दृष्टि करि भव ते पार करो ॥

❀ पद २५१ ❀

स्वामी अवध विहारी फिकर मोहे काहे की ।
वाम भाग में जिनके राजति सब जग पालनिहारी ।
सिद्धि सिद्धि हैं चेरी जिनकी अरु कुबेर भण्डारी ॥
भरत लषन ते भइया जिनके रिपुसूदन बलकारी ।
तेतीस कोटि देवता निस दिन आयुसु के अधिकारी ॥
अग्नि सुरेश वरुणादि जिनकी आज्ञा सकत न टारी ।
अनुपम सूरत मोहनि मूरति है मुद मंगल कारी ॥
जानकि जीवन सुमिरत जिनको महा शंभु त्रिपुरारी ॥

❀ पद २५२ ❀

रहब जी जनक लली के साथ ।
मंगल मय विधु वदन विलोकव गाउव सिय गुन गाथ ।
पद पङ्कज की सेवा करिके लखि लखि होउ सनाथ ॥
शेष प्रसादी नित ही मिलि है सुर मुनि जाहि ललात ।
सिय जू कृपा दया की मूरति श्रुति पुराण विख्यात ॥
जानकि जीवन महिमा वर्णत शारद हू सकुचात ॥

❀ पद २५३ ❀

जिस मन को तुमने छीन लिया,
उसकी फिर हालत क्या होगी ।

पल छिन पड़ता है चैन नहीं,
फिर और मुसीबत क्या होगी ॥
हंसता रोता है घबराता दर २ की ठोकर खा करके ।
तुम खड़े २ मुसकाते हो,
फिर और मुहब्बत क्या होगी ।
तेरी छबि का दीवाना बन,
जग में है फिरता मस्ताना ।
तुम तो मुसकाना सीखे हो फिर जादू टोना क्या होगी ॥
कुछ तरस नहीं तुम लाते हो,
दिल ले ले कर भग जाते हो ।
दुख ही देना तुम सीखे हो,
फिर और हिफाजत क्या होगी ॥
जानकी जीवन कल्पा कर,
फिर भक्तों को तड़पाते हो ।
गर ऐसा तेरा हाल रहा,
फिर तेरी इबादत क्या होगी ॥

❀ पद २५४ ❀

मन तू क्यों न प्रभु गुण गाये ।
जे मद मत्त कुटिल कायर खल तिनको स्वामि बनाये ॥
कतहुँ न लही बड़ाई जग में बहु तक स्वांग बनाये ।
लोभ पाश में अरुझि २ के जहँ तहँ पेट खलाये ॥

शुद्ध हृदय से हरि चरणन में कबहुं न शीश नवाये।
जानकि जीवन शरण गहे बिन भटकि २ मर जाये॥

❀ पद २५५ ❀

रे मन मान सिखावनि मेरी।
सुर दुर्लभ मानुष तन दीन्हों प्रभु की दया घनेरी।
तजि अधरम करु प्रीति सुकर्मन मन के मलहि निवेरी॥
करु विश्वास नाम जपु सियवर नशै पाप की ढेरी।
जानकि जीवन नाम की महिमा श्रुति पुराण कह टेरी॥

❀ पद २५६ ❀

हमारी सिया सुन्दरता की सींव।
मुख मयंक अवलोकि नयन भरि विधु सकुचात अतीव।
सोह नवन तन ललित लुनाई रति मद की दमनीय॥
लखि तन वारत लेत बलैया जनक लली के पीय।
जानकी जीवन रूप अनूपम नैनन भरि २ पीव॥

जानकी जीवन प्रेम दर्पण

❀ पद २५७ ❀

जहां मैं निहारूं अवध का दुलारा
दिखाता न दुनियां में दूजा कोई है॥
दिशा वे दिशा में जमीं आसमां में।
झलकता चमकता सभी में वही है॥
करै कौन वर्णन अतुल रूप जिसका।

अगम व सुगम जिसकी सीमा नहीं है ।
करे जोग जोगी न पाते पता कुछ ।
करें वेद वर्णन इती ही नहीं है ॥
भक्ती के वश हो वही जानकी जीवन ।
जो निर्गुन सगुन बन रहा सब कहीं है ॥

❀ आड़ा चौताल मात्रा १४ पद २५८ ❀

सुकुमारी सिया प्यारी चन्द्र बदनी ।
रघुवर प्राण प्यारी मन हरनी ॥
संतन की इष्ट देव सिया स्वामिनी ।
जानकी जीवन की सुख करनी ॥

❀ पद २५९ ❀

बन्दौं चित चोरन राम श्याम ।
अङ्ग अङ्ग पर लाजत कोटि काम ॥
राजीव नैन सुषमा निधान ।
आनन्द सिन्धु शोभा के धाम ॥
शोभा अपार छबि के अगार ।
श्री राम चन्द्र करुणा निधान ॥
नख से सिख लौं सुन्दर ललाम ।
छबि को वर्णत शेषहु लजान ॥
भक्तों के पूरण सु काम ।
जानकि जीवन नयनाभिराम ॥

❀ पद २६० ❀

सुख दायक रघुनन्द किशोरी जी के ।
ललित सकल अङ्ग निरखि २ के पावत अति आनन्द ।
हंसत हंसावत पान खवावत अवलोकत मुख चन्द ॥
अनुपम भाव तिरीछे नैनन हेरत मुसकन मन्द ।
सिय सौन्दर्य सुधारस भीगे फंसे रूप के फन्द ॥
गलबाहीं दीने दोउ राजत गान करत सखि वृन्द ।
जानकि जीवन शरण सिया के दरश करत निर्द्वन्द ॥

❀ पद २६१ ❀

रे मन राम के गुण गाव ।
कठिन दुस्तर भव तरन को है एही एक नाव ।
जगत में ना मित्र कोई भूलि जनि पतियाव ॥
बन्धु भ्राता कुटुम सारे लेत आपनो दाव ।
जानकी जीवन शरण प्रभु के सदा ही सुख पाव ॥

❀ पद २६२ ❀

राघव की प्यारी सूरत दिल में मेरे गड़ी है ।
मुख की अतुल सुघरता व्याकुल मुझे करी है ॥
है क्रीट मुकुट सिर पर कुन्डल सु कान में ।
अतरों से सींची अलकें गालों पर जा रही है ॥
ये नैन बान तीखे लागत मयन सरीखे ।
तापर से तिरछी चितवन जादू जहर भरी है ॥

चित को चुरा के प्यारे हंसते हैं देख देख ।
ऐसी कठिन निठुरता इनमें सभी भरी है ॥
ए छबि जानकि जीवन लीजे बसा हिये में ।
स्वामिन सिया हमारी करुणा दया भरी है ॥

❀ पद २६३ ❀

अङ्ग २ राम के मोहनियां ।
सोह नवल तन भूषण अनुपम,
पीत वसन दुति दामिनियां ॥
चारु कपोल चिबुक अति सुन्दर,
मुसकनि मनहिं लोभावनियां ।
नीरज नैन भृकुटि वर बांकी,
चितवन चित ललचावनियां ॥
वयस किशोर मोहनि मूरति,
मन्मथ कोटि लजावनियाँ ।
जानकि जीवन नख सिख नीके,
छवि अमृत वरसावनियाँ ॥

❀ पद २६४ ❀

सखी मेरे जीवन धन सिय पीय ।
बड़ भागिनि सिय स्वामिनि मेरी बसती जिनके हीय ॥
छबि की खानि मनोहर मूरति मन्मथ मद दमनीय ।
चितवनि चित चोरनि मनहारी मुसकनि मधुर अतीव ॥

निरखत भूलत देह गेह सुधि पड़त प्रेम की नींव।
जानकि जीवन रूप सुधा रस अँखियन भरि २ पीव॥

❀ पद २६५ ❀

नैन दोऊ छबि निरखत अटके।
देखि मनोहर मूरति अनुपम लाज सुमग पटके॥
मन में बसी सांवली सूरत हिय के विच खटके।
जानकि जीवन रूप सिन्धु लहि फिर क्यों तू भटके॥

जानकी जीवन दर्पण

❀ पद २६६ ❀

अरे मन क्यों नहिं राम भजै।
प्रीति प्रतीति पाप में निश दिन, कबहुं नाहिं लजै॥
भक्ति ज्ञान वैराग्य नेम व्रत चित्त में नहिं उपजै।
अति अपार संसार कठिन है कैसे को तरिजै॥
करि अनुराग राम पद पंकज विषयन सो डरजै।
जानकि जीवन शरण गहे बिनु भटकि भटकि मरजै॥

❀ पद २६७ ❀

जाऊँ तो पै बलिहार, प्यारे मेरे सांवलियां।
मृदु मुसकान माधुरी मूरति, नयना अजब रतनार॥प्या०
सुठि सुन्दर सुकुमार मनोहर सुषमा अङ्ग अपार॥प्या०
छबी विलोकत तन सुधि भूली, श्री अवधेश कुमार॥प्या०
जानकि जीवन रूप निरखि के लाजत कोटिन मार॥प्या०

❀ पद २६८ ❀

किशोरी जी तेरे ही गुण गाऊँ ।
निश दिन नाम रटूँ सिय स्वामिनि तुम्हरहि झूठन खाऊँ ॥
करि विनती मागूं वर येही तव चरनन चित लाऊँ ।
जानकि जीवन चरन छांड़ि के अनत कहीं नहिं जाऊँ ॥

❀ पद २६९ ❀

सिया जू मेरी सुन्दरता की खानि ।
मुख मयंक अवलोकि अनूपम रमा रति सु लजानि ।
रघुवर निरखि सु लेत बलैया बिनहि मोल बिकानि ॥
हर्षित देव सुमन वर्षावत निरखत छबि महान ।
जानकि जीवन शोभा वर्णत शारदहू सकुचानि ॥

❀ पद २७० ❀

किशोरी जी को राम जपत दिन रैन ।
रूप अनूपम ललित लुनाई अवलोकत भरि नैन ।
जनक दुलारी सखियन प्यारी परम दया की ऐन ॥
कृपा कटाक्ष विलोकत रघुवर बिन देखे नहिं चैन ।
वदन इन्दु लखि रति शत लाजत मुसकनि कहत बनैन ॥
जानकि जीवन चित हरि लीनो चितवनि आनन्द दैन ॥

❀ पद २७१ ❀

सांवलिया के जादू भरे दोउ नैन ।
जाके लगत चैन नहिं पावत पीर उठत सुख दैन ।
मद के भरे हिये विच कसकत बोलि न आवत बैन ॥

अति बांके चञ्चल रतनारे सुन्दरता के ऐन ।
जानकि जीवन दृग देखे बिनु पलक परत नहिं चैन ॥

❀ पद २७२ ❀

दृग बिच बसि गये राजीव नयन ।
नख सिख नीके सहज सलोने लखि लाजत रति मयन ।
मंद हंसनि चितवनि गर्वीली सुन्दरता के अयन ॥
चारु कपोल चिबुक अति सुन्दर नाशामणि झलकैन ।
श्यामल मूरति हिय बिच मेरे बसत सदा दिन रैन ॥
जानकि जीवन छवि अति बाँकी उपमा देत बनैन ॥

❀ पद २७३ ❀

दृगन बिच खटकै री सजनी ।
सांवलि सूरत मनहर मूरति चितवनि चित चोरनी ।
एको पल छबि बिसरत नाहीं मुसकनि मन हरनी ॥
छिन २ दर्द उठत हिय भीतर कसकनि सुख करनी ।
जानकी जीवन ललित लुनाई रति पति मद हरनी ॥

❀ पद २७४ ❀

दोउ को छबि अति सुषमा की सार ।
शोभा की सींव सांवरे अङ्ग पै कोटि मदन बलिहार ॥
ललित नवल तन सिय स्वामिनि की रतिशत लाजन हार ।
मुकुट चन्द्रिका शीशन राजत कोटिन रवि द्युति वार ॥
मृदु मुसकनि चितवनि गर्वीली नैन नवल रतनार ।

भूषन वसन लगे मणि मोती दम २ दमकनि हार ॥
अगणित सहचरि संग में राजत शोभा अमित अपार ।
जानकि जीवन रूप अनूपम रसिकन प्राण अधार ॥

❀ पद २७५ ❀

नाथ मैं सब अपराध भरो ।
चरण कमल विसराइ तिहारे इत उत भटकि फिरो ।
भक्ती हीन कुमारग गामी कछु नहिं सूझ परो ॥
कृपा निधान पतित पावन यश सुनि तव द्वार परो ।
जानकि जीवन शरण लीजिए खोटो होय खरो ॥

❀ पद २७६ ❀

अनुपम झाँकी लखु सजनी ।
मृदु मुसकानि अनोखी चितवनि जात नहिं वरनी ।
मन्मथ कोटि लजावनि हारी मूरति वस करनी ।
जानकि जीवन शरण छवि यह जन्म सुफल करनी ॥

❀ पद २७७ ❀

सिय के चरण में चित को लगाना ।
चारों पदारथ के हैं यह खजाना ॥
योनी भरम के आए अवनि पर,
आवागमन का संकट मिटाना ।
इनकी दया से द्रवते हैं रघुवर,
करके भजन नित्य आनन्द पाना ॥

शरण जानकीजीवन छवि रूप सिंधु,
होकर मगन नित्य गोते लगाना ॥

❁ पद २७८ ❁

चितवनि में चित्त को चुरा लिया सरकार तुमारे नयनों ने ।
इस जग से मन को मोड़ दिया सरकार तुमारे नयनों ने ॥
भृकुटि हैं बंक अरु मंद हंसन त्रेताप हरनि चंचल हेरन ।
कुछ जादू सा है डार दिया सरकार तुम्हारे नयनों ने ॥
मङ्गलमय मूरति ललित बदन हैं छविपर लाजत कोटिमदन ।
पल में पलकों से मार दिया सरकार तुम्हारे नयनों ने ॥
राजीव नैन सुषमा के अयन जानकि जीवन आनन्द दैन ।
बेदाम सभी को मोल लिया सरकार तुम्हारे नयनों ने ॥

❁ पद २७९ ❁

मनोहर सांवली सूरत लगे दिल को सु प्यारी है ।
करूं वर्णन कहां तक मैं छबी अनुपम तुम्हारी है ॥
सु नीरज नैन अति सुन्दर विलोकनि है ललित बांकी ।
सकल अङ्ग २ की शोभा सुघरता ही सु न्यारी है ॥
विहरते हैं सिया के संग करती गान सहचरियां ।
छबि घन विज्जु की अद्भुद सकल सुधि बुधि विसारी है ॥
वदत है बैन अमृत से दिये गलबांह दोउ हर्षें ।
करेगा कौन कवि वर्णन अतुल शोभा जु भारी है ॥
हंसनि हेरनि सु प्यारे की बसी हिय जानकी जीवन ।
विसारें न कभी बिसरे सु मन में मोद भारी है ॥

महर्षि वाल्मीकि शोध ... श्री मांगीराम ... सेवा ट्रस्ट
16885

❀ पद २८० ❀

रसना राम नाम नहिं रटती ।
व्यर्थ वाद बकवाद आदि में निन्दा अस्तुति करती ।
षट रस व्यंजन स्वाद लेन को रैन दिवस तू मरती ॥
दसन ताड़ना देत निरन्तर तद्यपि नाहिं सुधरती ।
अमृत नाम जानकी जीवन पीकर पेट न भरती ॥

❀ पद २८१ ❀

अखियां राम रूप नहिं लखती ।
नारि नैन सर बेंधन के हित तनिक धीर नहिं धरती ।
राम रूप को पलक भांजती विषयन ओर उघरतीं ॥
सियवर छवि सुधा को तजि के विष पीवे को लरतीं ।
जानकी जीवन दर्शन करि के भव दुस्तर नहिं तरती ॥

❀ पद २८२ ❀

जाऊं मैं तोपै बलिहार सजनवा ।
श्याम वदन सुकुमार मनोहर लाजत कोटिन मार ॥स०
भृकुटी बंक नैन रतनारे मुसकनि मोहनि डार ॥स०
माधुरि मूरति लखि सुर मोहत वर्षत सुमन अपार ॥स०
भूषन वसन ललित अति सुन्दर शोभा अमित अपार ॥स०
जानकि जीवन छवि को वर्णे पावत शेष न पार ॥स०

❀ पद २८३ ❀

सांवरी सांवरे के मन बसत ।

मन्द मन्द मुसकानि मनोहर मुख मयंक छबि लसत ।
हँसत हँसावत पान पवावत कोटि मदन रति लजत ॥
कोटिक मृग नयनी पिक वयनी गान करत बहु नचत ।
जानकि जीवन सुख को वर्णे छबि समुद्र में धसत ॥

जानकी जीवन रस माधुरी

❀ पद २८४ ❀

श्री रघुवर सारंग पांणी तू ही मेरा स्वामी है ।
आनन्द सिन्ध त्राप त्रै मोचन प्रणत पाल सुखदानी ।
करतब कलिमल पीन हीन मति मैं विषयी अति कामी ॥
भवभय मोचन सोच विमोचन सबके अन्तरयामी ।
महिमा अमित कौन कवि वर्णे शारद हू सकुचानी ॥
जानकि जीवन शरण तिहारी सकल सुकृत की खानी ॥

❀ पद २८५ ❀

प्रभु मैं पतितन को सिर मौर ॥
दूषन कोष अघो अपराधी पाप किये नहिं थोर ।
राग द्वेष परिताप धाप ते हृदय दहत नित मोर ॥
आरत हरन विरद सुनि राघव आयो तुमरी दौर ।
कीजे कृपा जानकी जीवन नहीं और कहुं ठौर ॥

❀ पद २८६ ❀

अगर आप हो दीन बन्धू कहाते,
मेरी ओर कुछ ध्यान क्यों कर न लाते ।

मैं आरत दुखी दीन दुखिया महा हूं।
दुसह दुख दूषन को क्यों न मिटाते ॥
दयालू कहा कर दया को न करना।
ये अन्याय कैसा नहीं कुछ बताते ॥
जीवन समर्पण किया जानकी को।
उन्हीं की दया दृष्टि हिये में हैं लाते ॥

❀ पद २८७ ❀

दशरथ राज कुमार हमारी गली आया करो।
भृकुटी वंक तिरीछे नयनन,
भाव अनूपम बांकी सयनन।
घायल करि दिलदार नहिं तरसाया करो ॥ द० ॥
मृदु मुसकानि मनोहर मूरत,
चित चोरन सांवल पिय सूरत।
हँसि हँसि मोहनि डार, सुसखिन रिझाया करो ॥ द० ॥
जानकि जीवन अतुल रूप वर,
लाजत कोटि काम छबि ऊपर।
मन मोहन सरकार मन बस जाया करो ॥ द० ॥

❀ पद २८८ ❀

सांवरी सांवरे मन बसी।
मन्द मन्द मुसकानि मनोहर मुख मयंक छवि लसी।
हंसत हंसावत पान खवावत निरखि रति विहंसी ॥

बोलनि मिलनि अनूपम निरखत रघुनन्दन हर्षी।
अलिगन गावत अति सुख पावत सियजू हिय हुलसी ॥
जानकि जीवन जय जय उचरत देव सुमन वर्षी ॥

❀ पद २८९ ❀

प्रसादी पावो हनुमत लाल।
मोहन भोग तस्मई मोदक, मेवा और रसाल ॥
पंचामृत और पान पाइ के भक्तन करो निहाल।
जानकि जीवन को अभीष्ट दै मेटो भव के जाल ॥

❀ पद २९० ❀

शृङ्गार पुष्पन कीन्हो सु प्यारो,
प्यारी के अङ्ग २ प्यारो साँवारो।
सुमन की सखि संग छत्र चंवर लीन्हे।
सांवरी के संग सोहे श्याम तन वारो ॥
जानकी जीवन छबि को कहै आज,
कोटि मदन रति बार बार वारों ॥

❀ पद २९१ ❀

किशोरी मेरी सांवरिया की प्रान।
चन्द्र वदन चितवन चित्त चोरन मन्द मन्द मुसकान।
एकौ पल सुधि बिसरत नाहीं, निरखत छबि सुमहान।
भृकुटी बंक नयन कजरारे, नासामणि झलकान।
तड़ित बदन दामिनि दुति वारी, लखि सुरतिय सकुचान ॥

ललित सकल अङ्ग निरखि २ के करत सुधा रस पान ।
जानकी जीवन छवि अति प्यारी शेषहुं वरणि थकान ॥

❀ पद २६२ ❀

किशोरी तेरे चरनन की इक आस ।
तू मेरी अरु मैं हूं तेरी, यह जग की उपहास ।
बाहर भीतर अन्तरयामी तेरे बस रघुनाथ ॥
तेउ कृपा विलोकनि चाहत रूप सुधा की प्यास ।
कृपा कोर से मोहि अपनावो होऊ तुरत सनाथ ॥
जानकि जीवन शरण गहे बिन, जीवन व्यर्थहि जात ॥

❀ पद २६३ ❀

रघुनन्दन प्यारे की प्यारी जाल फंद से बचियो री ॥
मन्त्र तन्त्र ए जाननि हारे सन्मुख नाहिं निकसियो री ।
श्याम सरोज बदन अति सुन्दर मनहुं श्याम सु लखियोरी ॥
मृदु मुसकानि मनोहर मूरत चितवनि में जनु फंसियो री ।
नयन वान से घायल होकर नहिं घर बैठ सिसकियो री ॥
सिय की कृपा कटाच्छ पाइ कैं मन में मौन बिहँसियो री ।
जानकि जीवन रूप सिन्धु ५ आनन्द पाइ हुलसियो री ॥

❀ पद २६४ ❀

सांवलिया के तीखे बड़े नैना बान ।
सन्मुख होत पीर उपजावत लागत सुख सु महान ।
पुनि २ दर्द उठत हिय भीतर निखंत होत विराम ॥

जानकि जीवन छबि के ऊपर बिनहि मोल बिकान ॥

❀ पद २९५ ❀

सांवलिया को देखे बिना नहिं चैन ॥
श्याम शरीर सहज अति सुन्दर शोभा कहत बनै न ।
मृदु मुसकानि तकनि तिरछी है भृकुटि बंक सु नैन ॥
निरखत देह गेह सुधि भूलत लागत अति प्रिय बैन ।
जानकि जीवन झाँकी बांकी भक्तन को सुख दैन ॥

❀ पद २९६ ❀

जनक लली के भजन करत ही तुरत प्रभु अपनायेंगे ।
अगणित अवगुण यद्यपि तुम्हारे एकहुं चित न लायेंगे ॥
सिया की कृपा विलोकनि करके बार बार हर्षायेंगे ।
मन की भावनि छबि दिखला के तीनों ताप मिटायेंगे ॥
जानकी जीवन शरण में रहि के मन वांछित फल पायेंगे ॥

❀ विनय पद २९७ ❀

सिया जू मेरी अर्ज सुनो चित लाय ।
कृपा रूपणी नाम तिहारो देदहु तव यश गाय ।
मैं अति अधम महा अपराधी कीने पाप अघाय ॥
भव विधि डूबत कर गहि लीजे करुणा कृपा दिखाय ॥
प्राण प्रिया प्यारे की प्यारी सब बिधि तू सुखदाय ।
मेरी विनय सुना दो स्वामिनि कबहुं अवसर पाय ॥

अति दुस्तर संसार तरन को नाहिन और उपाय ।
जानकि जीवन शरण सिया के बिगड़ी सब बन जाय ॥

❀ पद २६८ ❀

तन मन सब अर्पण करता हूं,
सरकार तुम्हारे चरणों में ।
अपना लो विनती करता हूं,
सरकार तुम्हारे चरणों में ॥
हम अधमी सब से बढ़े चढ़े,
तुम पतित तारना प्रण पकड़े ।
तारो या बोरो तुम जानो,
सरकार तुम्हारे चरणों में ॥
मैं प्रवल पातकी पतित महा,
तुम अधम उधारन नाथ महा ।
यह विरद जान कुछ करता हूं,
सरकार तुम्हारे चरणों में ॥
पापी से पापी नीच महा,
अब जानकी जीवन शरण गहा ।
करुणा करके अपना लीजे,
सरकार तुम्हारे चरणों में ॥

❀ पद २६६ ❀

सांवरी सूरत नैना बसी ।
माधुरि मूरत घन दामिनि तन,

छवि मन्द हंसन हेरन कसी ॥
शोभा के ऐन लाजे कोटि मैन,
मणिन माल उर में लसी ।
जानकि जीवन देह की न सुधि,
मति छवि सिन्धु में धंसी ॥

❀ धमार १४ मात्रा पद ३०० ❀

सुन्दर नयन तिहारे ॥
रतनारे अनियारे रूप वारे गुण वारे ।
मन वारे वशकारे घायल करनि हारे ॥
जानकि जीवन प्यारे मन्मथ के मदहारे ।
रसिकन प्राण अधारे ॥

❀ पद ३०१ ❀

लखन तेरी लागत प्रिय मुसकानि ॥
वदन मयंक ताप त्रै मोचन नाशामणि झलकानि ।
अधर अरुण रद कान्ति मनोहर शोभा ललित महान ॥
राजिव नैन माधुरी मूरति लखि २ मदन लजान ।
जानकि जीवन छबि को वर्णे शारदा सकुचानि ॥

❀ पद ३०२ ❀

सिया जू स्वामिनी मेरी हैं राघव जी की पटरानी ।
सकल सुर वाम आकर के बनी हैं जिनकी सेवकानी ॥
उमा ब्रह्माणि आदिक जे लिये कर सौज मुख निरखें ।

रमा रुख देखि पल परसें खड़ी कर जोर इन्द्राणी ॥
रती शृङ्गार करती हैं अतुल अनुपम बदन लखि के ।
दियां है वारि तन मन धन सुघरता देखि मन मानी ॥
वसन भूषण नवल तन में जगामग जोति करते हैं ।
करेगा कौन छवि वर्णन यही है जग की छबि खानी ॥
दिवस निसि नैन निरखत हैं श्री रघुवर जानकी जीवन ।
बने मुख कंज के मधुकर इन्हीं की हैं ये सुखदानी ॥

❀ पद २०३ ❀

ललन हँसि हेरो हमरी ओर ।

चितवन जादू भरी मनोहर गर्वीली नहिं थोर ।
छवि दिखलाय चुरावत चित को ऐसा हृदय कठोर ॥
बिन ही मोल बिकी हम प्यारे चहति कृपा की कोर ।
जानकि जीवन रूप विलोकत सुधि नहिं सांझ की भोर ॥

❀ पद २०४ ❀

जाऊँ मैं तोपे बलिहार साँवलिया ।

शोभा शील ज्ञान गुन मन्दिर दशरथ राजकुमार ॥सं०
नख शिख नीके रूप अनूपम लाजत कोटिन मार ॥सं०
भृकुटि बंक सरोरुह लोचन त्रिभुवन के शृङ्गार ॥सं०
हेरनि हंसनि विलोकनि प्यारी हिय विच कसकनिहार ॥सं०
जानकि जीवन छबि अवलोकत रहत न देह सम्हार ॥सं०

❀ पद २०५ ❀

किशोरी जी मैं पतितन शिर मौर ।
भक्ती हीन मलीन हीन मति पातक पीन कठोर ।
हँसि हँसि पाप करन को निश दिन हिय में उठत हिलोर ।
सिय जू कृपा रावरी चाहत और नहिं कहुं ठौर ।
जानकि जीवन शरण राखिये भव वन्धन से छोर ॥

❀ पद २०६ ❀

श्री राम को रूप विलोकत ही,
नहिं नेक सुधार रहे तन के ।
भृकुटी सु सरोरुह लोचन में,
अंखियां ललचाय फंसे जिनके ॥
मुख कंज सुधारस वर्षत है,
सखियां नित पान करें हँसि के ।
छबि जानकी जीवन नैन बसी,
फिर कौन की चाह रही उनके ॥

❀ पद २०७ ❀

सिया जू मेरी करनी चित न धरो ॥
जन्म २ को मैं अपराधी पापी बहुत बड़ो ।
कृपा रूपणी नाम तिहारो ताहि ते पार करो ॥
मोसे दोष कोष को तुम बिन जग में नहिं दुसरो ।
पातक पीन मलीन पतित अति राग अरु दोष भरो॥

कृपा कोर से मम दिशि हेरो खोटो होय खरो ।
जानकि जीवन द्वार आपने दीजे रहन परो ॥

❀ पद ३०८ ❀

छबि लखियो राज किशोर की ।
श्याम शरीर बदन अति सुन्दर,
चितवनि चित के चोर की ।
भूषण वसन मनोहर राजत,
जगमग जोति उंजोर की ॥
जन्त्र मन्त्र कछु मोपर कीन्ही,
मुसकनि मदन मरोर की ।
जानकि जीवन छटा अनूपम,
रति मन्मथ मद छोर की ॥

❀ पद ३०९ ❀

सुन्दर राम शरीर सु श्याम,
हैं लाजत काम छबी अति नीकी ।
भौंह कमान सु नैनन बान,
हैं वेधति प्रान विलोकनि तीखी ॥
मन्द हंसानि सुधा वर्षानि,
करें अलि पान सु प्यास अमीकी ।
श्री जानकि जान लखे सुजान,
तो जग की छटायें लगे सब फीकी ॥

❀ पद ३१० ❀

किशोरी लीनो राघव को मन छोर ।
मृदु मुसकानि विलोकत छिन २ अवध छैल चित चोर ।
हिय हर्षित मुख कंज निहारत बाढ़त प्रीति न थोर ॥
हंसत हंसावत पान खवावत बंधे प्रेम की डोर ।
जानकि जीवन छबि अनूपम लाजत काम करोर ॥

❀ पद ३११ ❀

किशोरी तेरी चहत कृपा की कोर ।
तुमरी मया दया रघुवर की यही आस इक मोर ।
हूं मैं मलिन अघी अति कामी क्रोधी कुटिल कठोर ॥
भरि २ उदर विषय रस पीवत पापिन को शिर मोर ।
तुम हो कृपा क्षमा की मूरति हंसि हेरो मम ओर ।
जानकि जीवन शरण छांड़ि के दूजी और न ठौर ॥

❀ पद ३१२ ❀

जुलुम करै राम तेरी छबि मोहनियां ।
अधर अरुण मुख कन्ज मनोहर दसनन की दमकनियां ।
भृकुटी बंक सरोरुह लोचन चितवन कहर मचनियां ॥
अङ्ग २ राजत अमित निकाई रति पति कोटि लजनियां ।
जानकि जीवन मन को मोहत नाशा मणि लटकनियां ॥

❀ पद ३१३ ❀

नवेली अलबेली सिया जू हमारी ।
वदन मयंक बिलोकत रघुवर सुन्दरता अति प्यारी ।

कोटिक मृगनैनी पिक वैनी लखि तन छबि बलिहारी ।
सोह नवल तन ललित लुनाई कोटिन रति मदहारी ॥
मृदु मुसकानि विलोकनि प्यारी प्यारे की सुखकारी ।
जानकि जीवन रूप निरखि के बोलत सुर जयकारी ॥

❀ पद ३१४ ❀

लखोरी सखि सांवरिया चित चोर ॥
भौंह कमान नैन रतनारे चितवनि में कछु और ।
तन घन श्याम पीत पट राजत लाजत काम करोर ॥
मृदु मुसकानि मनोहर मूरति हर लीनो मन मोर ।
जानकि जीवन छबि को वर्णें शारद मति भई भोर ॥

❀ दादरा पद ३१५ ❀

श्याम तेरो नजरिया जुलुम कीनो ।
नव राजीव कमल दल लोचन चितवत ही चित छीनो ।
वदन मयंक अधर अरुणारे नासामणि मन लीनो ॥
विनहि मोल बिकानी सजनी लोक लाज तज दीनो ।
जानकि जीवन छबी दिखा के देह गेह सुधि हर लीनो ॥

❀ पद ३१६ ❀

जुलुम करे राम तेरी टेढ़ी चितवनियां ।
श्याम शरीर नयन रतनारे भौंहें मनहुं कमनियां ॥जु०
कल कपोल श्रुति कुण्डल प्यारे चमकनि जिमि दामिनियां॥जु

सुन्दर बदन मनोहर मूरति तापर मृदु मुसकनियां ॥जु०
जानकि जीवन छबि अति प्यारी रति पति कोटि लजनियां॥

❀ पद ११७ ❀

किशोरी जू की चितवनि ललित महान् ।
अनियारे लोचन अति तीखे सुन्दरता की खान ।
रघुनन्दन के वस करिबे को हेरनि मृदु मुसकान ॥
कृपा कटाच्छ विलोकनि लखि के रति पति कोटि लजान ।
जानकि जीवन छबि अति अनुपम को कवि करे बखान ॥

❀ पद ११८ ❀

ए हो मेरे दिलदार हमारी गली आया करो ।
अवध छैल सिय स्वामिनि प्यारे,
नव सरोज लोचन रतनारे ।
सखियन प्राण अधार,
कनि मुसकाया करो ॥ए हो०॥
अति सुन्दर सुकुमार मनोहर,
लाजत कोटि काम छबि ऊपर ।
नयनन सयननि मारि,
नहिं तरसाया करो ॥ए हो०॥
हेरनि चंचल मन वश करनी,
लखि ललचे कोटिक मृग नयनी ।
हँसि हँसि मोहनि डार,

गले लग जाया करो ॥ए हो०॥
नख शिख नीके सहज सलोने,
दूजा जग में है नहिं होने ।
छबि मन्मथ मद मार,
मोहि दिखलाया करो ॥ए हो०॥
जानकि जीवन अमित निकाई,
वर्णत शारद पार न पाई ।
दोउ सुषमा के सार,
मन बसि जाया करो ॥ए हो०॥

❀ पद ३१८ ❀

सिया स्वामिनि विरद अपना संभालोगी तो क्या होगा ।
जगत को मातु करुणा तुम प्रसारोगी तो क्या होगा ॥
महा मति मन्द कामी हूं सभी पतितों में नामी हूं ।
विनय मेरी ए राघव से सुना दोगी तो क्या होगा ॥
नहीं शुभ कर्म कछु मेरे गया नहिं भक्ति के नेरे ।
अधम उद्धारिणी स्वामिनि उधारोगी तो क्या होगा ॥
सभी परिवार स्वारथ के दिखाते हैं बने हित के ।
पड़ा भव सिन्धु में अटका निकालोगी तो क्या होगा ॥
महा अधमी अलायक हूँ कुकर्मों का कमायक हूं ।
शरण में जानकी जीवन लगा लोगी तो क्या होगा ॥

❀ पद ३२० ❀

प्रभु दर्शन करने को तेरे अति भक्ति हृदय से आया हूँ ।
मद क्रोध लोभ अरु माया के जालों में फँसि उरझाया हूं ॥
शरणागत पाल कहाते हो मुझ पापी से घबराते हो ।
कितने पतितों को तारा है मैं पावन होने आया हूं ॥
पातकी जनों का मुखिया हूं है मन मलीन बहु दुखिया हूँ ।
तुम दीन दयाल पतित पावन विश्वास हृदय बैठाया हूं ॥
जानकि जीवन तव शरण अड़े बहु दिन से तेरे द्वार पड़े ।
कितनों को शीश झुकाया हूं, विश्राम कहीं नहिं पाया हूं ॥

❀ पद ३२१ ❀

बिनु देखे पियरवा जिया तरसे ।
श्याम सरोज बदन अति सुन्दर बैननि में अमृत बरसे ।
मृदु मुसकानि मनोहर मूरति नासामणि अधरन परसे ॥
भृकुटी बंक सरोरुह लोचन चितवनि में चित आकर्षे ।
एकौ पल सुधि बिसरत नाहीं प्रेम से छिनहि छिन सरसे ॥
जानकि जीवन तन सुधि नाहीं घायल करि मन्मथ सरसे ॥

❀ पद ३२२ ❀

सखी मेरे जीवन धन सिया राम ॥
नील पीत पाथोज बरन तन शोभा सुख के धाम ।
करुणा कृपा दया की मूरति एक से एक ललाम ॥
मन मोहनी साँवली सूरत लाजत कोटिन काम ।
जानकी जीवन शरण में रहि के निरखों आठों याम ॥

❀ पद ३२३ ❀

मनुज तन को पाय के मन, कुछ तो करना चाहिये ।
बाद अरु अपवाद में नहिं दिन को खोना चाहिये ॥
लाख चौरासी भटकते आ गये इस अवनि पर ।
ऐसी दुर्लभ देह को नहिं व्यर्थ खोना चाहिये ॥
बालापन यों ही गया आई जवानी जोर की ।
मस्त हो विषयों में प्रभु को नहिं भुलाना चाहिये ॥
प्रौढ़ तन के बाद बूढ़ा पन न कोई चाहता ।
बाल से बाबा बने अब तो सम्हलना चाहिये ॥
छोड़ कर जंजाल सारे कीजिए हरि का भजन ।
जानकी जीवन शरण हो भव से तरना चाहिये ॥

❀ पद ३२४ ❀

पिय दर्शन के माते नैनवां ।
कृपा विलोकनि निश दिन चाहत छिन पल नहिं बिसराते ।
सांवरि सूरत माधुरि मूरति एको पल न भुलाते ।
युगल रूप की नेह नजर से आनन्द सिन्धु समाते ॥
देखे बिना मनोहर मूरति मन ही मन पछताते ।
जानकि जीवन छवि को वर्णत शेषहु पार न पाते ॥

❀ पद ३२५ ❀

पिय प्यारी छबी से लगे नीके ।

चपला दुति से घन की शोभा कारी घटा यों लगे फीके ॥
सोह नवल तन ललित लुनाई मर्दत मान रती के पती के ।
सिया जू कृपा करें इक पल में पाप ताप करि रीते ॥
रघुवर नाम जपे से तारत वेद पुराण बदत गीते ।
जानकि जीवन छवि को वर्णे न दोउ बढ़ी चढ़ी के ॥

❀ पद ३२६ ❀

भई सांवरि सूरत पर बावरी ।
वयस किशोर वदन अति सुन्दर,
चितवन में चित लाग री ।
अतुल अनूपम रूप मनोहर,
वर्णत शेष न पाव री ॥
राजिव नैन मोहनी मूरत,
रति पति कोटि लजाव री ।
जानकि जीवन झाँकी प्यारी,
निरखो भरि अनुराग री ॥

❀ पद ३२७ ❀

रघुवर की मुसकान लखोरी ।
चितवन जादू भरी मनोहर तीखे नैना बान ।
अधरन की अरुणाई सुन्दर मन्द २ मुसकान ॥
जब से लखी सांवरी सूरत देह गेह बिसरान ।
जानकि जीवन छवि के ऊपर मन्मथ कोटि लजान ॥

❀ पद ३२८ ❀

तेरे नैना हैं तीखे बड़े नीके ।
जाके लागत चैन न पावत नेम अरु धर्म लगे फीके ।
एको पल सुधि बिसरे नाहीं दृगन की नोंक गड़ी नीके ॥
अँखियां जादू भरी मनोहर मानो मंत्र मोहनी सीखे ।
जानकि जीवन छवि अति प्यारी मर्दन मान रतिके पतिके ॥

❀ पद ३२९ ❀

रसिकन के सिरताज सांवरे ।
सकल शिरोमणि सिया हमारी वाम भाग में भ्राज ।
नवल किशोरी प्यारी अद्भुद् रूप रसाल विराज ॥
मुक्ती खड़ी रहत कर जोरे प्रेम करत निज राज ।
जानकि जीवन दम्पति के संग अगणित सखी समाज ॥

❀ पद ३३० ❀

तोहि देखे पियरवा जिया हर्षे ॥
मन मोहनी सांवरी सूरत देखन को नैना तरसे ।
जुल्फे कारी छुटा कपोलन नाशामणि अधरन पर्सें ॥
कोशल राज किशोर दरस हित रात दिना नैना वर्षे ।
जानकि जोवन जोड़ी लखि के दसो दिशा आनंद वरसे ॥

❀ पद ३३१ ❀

तेरे नयना के घायल परे लाखो ।
कोउ विहंसत कोउ हिसकत प्रेम सिन्धु को मग ताके ।

निश दिन चाह रहत हिय भीतर रघुनन्दन हँसिके झाँखे ॥
मोहनि मूरति बसो हिये में लोक की लाज धरी ताखे ।
जानकि जीवन वस कर लीनो दृगन की सैन चला के ॥

❀ पद ३३२ ❀

युगल वर राजत कर शृङ्गार ।
मुकुट चन्द्रिका शीश बिराजत रवि दुति लाजन हार ।
विविध भाँति के वसन विभूषण दम दम दमकनि हार ॥
दोउ दिशि खड़ी अली अलबेली सुमन गुच्छ कर धार ।
कनक भवन शृङ्गार कुञ्ज में सखिन की भीड़ अपार ॥
जानकि जीवन बने ठने दोउ लाजत कोटिन मार ॥

❀ पद ३३३ ❀

सिया जू मेरे अवगुण चित न धरो ।
यद्यपि मलिन महा अपराधी दोष को कोष भरो ।
कृपा रूपणी नाम तिहारो वेदन गान करो ॥
कृपा कटाक्ष विलोकनि चाहत पद पंकज में पर्यो ।
कीजे दया स्वामिनि मोपे हूँ मैं पतित खरो ॥
जानकि जीवन सकल आस तजि तेरे द्वार परो ॥

❀ पद ३३४ ❀

अनूपम सिय जू के पद कंज ।
जिनको ध्यान धरत ब्रह्मादिक रहत सदा निर्द्वन्द ।
सकल काम दायक सब लायक भक्तन को सुखकंद ॥

जन्म २ के पाप दूरि करि काटत जम के फन्द ।
जानकि जीवन शरण सिया के पावत अति आनंद ॥

❀ पद ३२५ ❀

सिया मेरी रघुनन्दन की जान ।
मुख मयंक अवलोकत छिन छिन पावत सुख सु महान ।
अधरन की अरुणाई निरखत मन्द मन्द मुसकान ॥
पान खवावत अति सुख पावत अतर करावत घ्रान ।
निरखि नवल तन की सुघराई करत सुधारस पान ॥
जानकि जीवन छवि को वर्णे शारदहु सकुचान ॥

❀ पद ३२६ ❀

नैना भरि २ निरखो आली प्यारा सिया सजनवा है ।
श्याम अङ्ग की अनुपम शोभा तापर पीत बसनवा है ॥
भृकुटि वंक नयन रतनारे चितवनि डारत टोनवा है ।
छीनि लियो मन मेरो सजनी नाशामणि बुलकनवा है ॥
जब से लखी माधुरी मूरत देह गेह बिसरनवां है ।
मन्मथ कोटि लजावत सखिरी कौशल्या नन्दनवा है ॥
देखन में अति भोले भाले मन्त्र सिखे मोहनवा है ।
प्यारी सूरत हिये में बसाकर फांसो प्रेम फसनवा है ॥
जनक लली के नाते इनके गहि लीजे चरणनवा है ।
जानकि जीवन बलि २ जैये करि तन मन अर्पणवा है ॥

❁ पद ३३७ ❁

अनुपम दूलह लखु सजनी ।
लाजत कोटि काम छबि ऊपर चितवन वश करनी ।
तन घन श्याम पीत पट की दुति विद्युत छबि हरनी ॥
मन्द हंसन में जादू टोना मन्त्र सिद्ध करनी ।
जानकि जीवन झाँकी प्यारी जात नहिं वरनी ॥

❁ पद ३३८ ❁

जादू भरे दोउ नैन किशोरी जी के ।
अति सुन्दर हैं मन्त्र वसी करन रतनारे अरुझैन ॥
प्यारी छबि में पगे सांवरे इकटक पलक टरैन ।
दृगन २ में अरुझि रहे दोउ सखियन के मन चैन ॥
निशदिन कृपा विलोकनि चाहत रघुवर आनंद देन ।
जानकि जीवन रूप लखे विन मनुवां धीर धरैन ॥

❁ पद ३३९ ❁

सिया जू के नैनन में कछु टोना ।
अति छलिया छैला रघुनन्दन तिनको वश करि लीना ॥
प्यारी रूप विलोकत निश दिन सुन्दर श्याम सलोना ।
रूप सुधा रस अमृत पीवत २ कबहु छकैना ॥
दम्पति प्रेम सों दे गलबाहीं बोलत हैं प्रिय वैना ।
जानकि जीवन छबि के ऊपर तन मन अर्पन कीना ॥

❀ पद ३४० ❀

किशोरी जी हौं पतितन शिर मौर ।
अगणित पाप करत निसि वासर ताको ओर न छोर ।
विषय वासना से लपटाने भक्त बनत कर शोर ॥
जो करनो समझहु सिय मोरी तो नर्कहुँ नहिं ठौर ।
विरद तिहारो वेदन में सुनि चहत कृपा की कोर ।
अधम उधारन जानकि जीवन ऐसा नहिं कोउ और ॥

❀ पद ३४१ ❀

रे मन सिय जू के गुण गावो ।
विषय वासना दूरि हटा के चरणन में चित लावो ।
रघुपति भक्ति हिये में उपजे अघ के पुञ्ज नसावो ॥
युगल रूप की झाँकी करके मन वांछित फल पावो ।
जानकि जीवन शरण में रहि के भव दुस्तर तरिजावो ॥

❀ पद ३४२ ❀

आरती रसिक विहारी की स्वामिनि सिया हमारी की ।
वदन छवि मन्मथ रति लाजे ।
मुकुट कुन्डल की छवि छाजै ॥
चन्द्रिका रवि शशि दुति लाजे ।
स जगमग जोति उजारी की ॥आरती रसिक
वदन है दामिनि दुति वाला ।
गले विच मुक्ता की माला ॥

अधरन पर लटकन झमकाला ।
मन्द मुसकनि पिया प्यारी की ॥आरती०।
कोउ सखि सुन्दर छवि निरखें ।
निछावरि करें हिये हर्षें ॥
व्योम से देव सुमन वर्षें ।
छवि लखि प्रीतम प्यारी की ॥आरती०।
लिये कोउ छत्र चंवर ठाढ़ी ।
बजावत कोउ कोउ कर तारी ।
सु पीवत रूप सुधा प्याली ॥
अतुल छबि युगल बिहारी की ॥आरती०॥
जानकी जीवन यह जोड़ी ।
निरखि के विवश भई गोरी ॥
हिये में हर्ष नहिं थोरी ।
मुदित मन जय जयकारी की ॥आरती०॥

❀ पद ३४३ ❀

वारूँ मैं तोपे जीवन प्राण हो रघुवंशी छैला ॥
भौंहे कमान चढ़ी, अंखियां कजरारी प्यारी ।
जादू भरे हैं नैनावान, हो रघुवंशी छैला ॥
श्याम शरीर पर, पीत वसनवा सोहे ।
लाजत तड़ित महान, हो रघुवंशी छैला ॥
चारु कपोल पर, अलकें सु मन को मोहे ।

ऊपर से मृदु मुसकान, हो रघुवंशी छैला ॥
जानकि जीवन प्यारे, होवो न दृग से न्यारे ।
बिनहा मोल बिकान, हो रघुवंशी छैला ॥

❀ पद ३४४ ❀

आरती राम लला की कीजै सुन्दर रूप दृगन लखि लीजै ॥
वदन मयंक तिलक सोहत है ।
कुन्डल मुकुट सु मन मोहत है ॥
पीत वसन दामिनि दुति मोहै ।
अतुल छबि हिये में रखि लीजे ॥आरती०॥
मुनिजन के मन बसने वाले ।
दशरथ जी के प्राण प्यारे ॥
विकट भृकुटि लोचन रतनारे ।
अति सुन्दर उपमा क्या दीजे ॥आरती०॥
शिवजी के हिय माहि बसैया ।
मातु कौशल्या गोद खेलइया ॥
आनन्द कन्द भरत के भइया ।
रूप निरखि नैनन फल लीजे ॥आरती०॥
ललित कपोल मनोहर नासा ।
अधर अरुण तापर मृदु हासा ॥
जानकि जीवन के सुख दाता ।
तन मन धन सब अर्पण कीजे ॥आरती०॥

❀ पद ३४५ ❀

श्री रघुनन्दन हो, राउर चितवन मदन कटार ॥
जाके लगत चैन नहिं पावत भूलि जात घरबार ॥श्रीर०
नख सिख नीके सहज सलोने लाजत कोटिन मार ॥श्रीर०
जानकी जीवन प्यारी मूरत सूरत पै बलिहार ॥श्रीर०

❀ पद ३४६ ❀

बना बनी की छबी लखु प्यारी ॥
श्याम बदन पर पीत बसनवा ।
चपला दुति सम जोति उजारी ॥
मौरे मौरि की शोभा अद्भुद ।
कुन्डल नाशामणि झलकारी ॥
सांवलि सूरत माधुरि मूरति ।
अधर अरुण मुसकन मन हारी ॥
राजिव नैन अनूपम चितवन ।
सैनन जनु जादू पढ़ि डारी ॥
जानकि जीवन शोभा वर्णत ।
शेष शारदाहूँ हिय हारी ॥

❀ पद ३४७ ❀

सिय स्वामिनि का अनूपम दूल्हा कैसा सुघर सलोना है ।
श्याम अङ्ग पर वसन विभूषण जनु दामिनि दमकौना है ॥
राजिव नैन मनोहर मूरति कोटि काम छवि छीना है ।

मंद हंसनि तिरछी चितवनि से सबका मन हर लीना है।
जानकि जीवन इनकी पटतर है कोऊ नहिं होना है ॥

❀ पद २४८ ❀

कुछ ध्यान जरा सा रहता है,
सरकार तुम्हारे चरनों में।
अविचल भक्ती की आशा है,
सरकार तुम्हारे चरणों में ॥
मति हीन मलीन अघी हूं महाँ,
पद पंकज की रज चाहि रहा।
पुनि २ मैं शीश नवाता हूँ,
सरकार तुम्हारे चरणों में ॥
गुण शील सिन्धु करुणा के ऐन,
शरणागत वत्सल जलज नैन।
कर जोर के हा हा खाता हूं,
सरकार तुम्हारे चरनों में ॥
निज कर्म देखि चुप साधी हूँ,
जग विदित महा अपराधी हूं।
अघ नाशक है यह उत्तम रज,
सरकार तुम्हारे चरनों में ॥
जानकी जीवन अपना लीजे,
मम पापों को बिसरा दीजे।

प्रति दिन बढ़ता अनुराग रहे,
सरकार तुम्हारे चरनों में ॥

❀ पद ३४९ ❀

सांवलि सूरत पै बिकान हो मन मोहन छैला ।
सुन्दर कपोल तापे जुल्फै घुंघरारी कारी ।
प्यारे हैं तीखे नैना बान हो मन मोहन छैला ॥१॥
क्रीट मुकुट सोहे कुन्डल की शोभा न्यारी ।
गहनन की झमकान हो मन मोहन छैला ॥२॥
गावत हैं कोकिल बैनी दम्पति की झाँकी निरखै ।
तन को सुधि बिसरान हो मन मोहन छैला ॥३॥
प्रीतम की छबि को निरखें देव सुमन वर्षे ।
आनन्द उर अधिकान हो मन मोहन छैला ॥४॥
जानकी जीवन यह जोरी लाजत है काम करोरी ।
है जानहु की जान हो मन मोहन छैला ॥५॥

❀ पद ३५० ❀

प्रभु जी हौं पतितन में नामी ।
कपटी कुटिल महा अपराधी विषई लोलुप कामी ।
पर निन्दक लोभी और क्रोधी विश्व विदित अभिमानी ॥
हँसि २ पाप करत निसि वासर भक्त बनत अति ज्ञानी ।
तुमरी कृपा मनुज तन पायो जो सब सुख की खानी ॥
भूलिहु राम नाम नहिं लीन्हो ऐसो नमक हरामी ।

अवगुण अमित कहां लगि वर्णों तुम सब अन्तर्यामी ।
जानकि जीवन शरण तिहारी मेटत नर्क निशानी ॥

❀ पद ३५१ ❀

मनुवा क्यों नहिं गुण गाता ।
सुर दुर्लभ मानुष तन पायो ताको व्यर्थ गंवाता ।
माता पिता बन्धु सुत दारा यह सब जग का नाता ॥
माया मोह जाल में फँसि के दुख सहि २ पछताता ।
राम नाम सुमिरन नहिं करता जो है सब सुख दाता ॥
जानकि जीवन शरण छांड़ि के इत उत ठोकर खाता ।

❀ भैरवी पद ३५२ ❀

किशोरी जी की सूरत पै बलिहारी ।
चारु चिबुक अधरन अरुणाई नाशामणि अति प्यारी ।
भृकुटि कुटिल नैन अति सुन्दर चितवनि प्रिय वशकारी ॥
चन्द्र वदनि मुसकानि मनोहर शोभा अति सुखकारी ।
रघुनन्दन को वश करिवे को हँसनि सुधारस वारी ॥
करुणा कृपा दया की मूरति स्वामिनि सीय हमारी ॥
जानकि जीवन छबि को बर्णो शारद हू हिय हारी ॥

❀ पद ३५३ ❀

आओ प्यारे मेरे दिलदार वारि जाऊँ सूरत पै ।
श्याम शरीर काम शत लाजत शोभा अमित अपार ।

चारु चिबुक नाशा अति सुन्दर चितवनि जादू हार ॥
कीट मुकुट मकराकृत कुन्डल उर मोतिन के हार ।
वदन मयंक अधर अरुनारे मुसकनि अमिय की धार ॥
जानकि जीवन वश करि लीनो हंसि २ मोहनि डार ॥

❀ पद ३५४ ❀

प्रभुजी मैं पतितन सरदार ॥
झूठ प्रपन्ची दम्भा लोलुप पापों का भंडार ।
अति कामी क्रोधी अरु लोभी ऊपर से दातार ॥
भरि २ उदर विषय रस पीवत मानत नहिं हिय हार ।
प्रथम भक्त में नाम लिखावत भीतर भरा भंगार ॥
दीन दयाल प्रणात जन पालक आया तेरे द्वार ।
जानकि जीवन शरण लीजिये करुणा के आगार ॥

❀ पद ३५५ ❀

हमारो स्वामिनि पै रघुवर बलि २ जावें ।
शरद चन्द्र सम मुख छवि लखि के कोटिन रति लजावें ॥
प्यारी की मुसकानि को निरखत आनन्द उर न समावें ।
सुन्दर भृकुटि मनोहर चितवन लखि हिय में हर्षावें ॥
कृपा रूपाणी प्राण प्रिया कहि बार बार गुण गावें ॥
उमा रमा ब्रह्माणी आदिक नित प्रति शीश नवावें ।
ताकी शोभा को कवि वर्णे शारदहुं सकुचावें ॥
आगम निगम पुराण आदि सब नेति नेति कहि गावें ।

जानकि जीवन दर्शन करिके देव सुमन भरि लावें ॥

❀ पद ३५६ ❀

किशोरी जी एक अरज सुनि लीजे ।
विषई मलिन मन्द अति कामी सो हिय में नहिं दीजे ॥
गनिका गीध अजामिल तारे तिनही में गनि लीजै ।
हूं मैं तव चरणों की चेरी करुणा दया सु कीजै ॥
विमल भक्ति रघुपति की देकर जीवन सफल करीजै ।
जानकि जीवन विनय करत हूं अपने कर गहि लीजे ॥

❀ पद ३५७ ❀

अवध के छैल छलिया रघुनन्दन जादू सो कछु कीनारी ॥
मृदु मुसका के सैन चला के मो मन को वश कीनारी ।
भृकुटि बंक सरोरुह लोचन चितवन में है टोनारी ॥
निर्खत हो गई बावरी लोक लाज हर लीनारी ।
जित देखों तित श्यामहि दीखत नैनन में घर कीनारी ॥
सांवरि सूरत माधुरि मूरति कोटि काम छबि छीनारी ।
जानकि जीवन रूप निरखि के विबुध सुमन झरि कीनारी ॥

❀ पद ३५८ ❀

लखो सखि युगल रूप की झाँकी ।
सजत भाल तिलक केशर को नाशामणि प्रिय बांकी ॥
वदन मयंक सरोरुह लोचन मुसकनि वश करि राखी ।

अङ्ग अङ्ग प्रति अति सुघराई कोटि मदन समता की ॥
कृपा कटाक्ष विलोकनि बांको मेटत जम की फाँसी ।
जानकि जीवन छबि को वर्णो शारद की सुधि थाकी ॥

❀ पद ३५६ ❀

सांवरे के नैनन में कछु टोना ।
मन्द मन्द हसि जा तन हेरत,
भूलत खान पान अरु सोना ।
दृगन की चोट लगे जाके उर,
कल न परे दिन रैना ॥
रुकि २ पीर उठत हिय भीतर,
बिन देखे नहिं चयना ।
कजरारी अंखियन के देखत,
बिन ही मोल बिकैना ॥
जानकि जीवन रूप निरखि के,
भया चहत अब मौना ।

❀ पद ३६० ❀

नाम जपत रघुनन्दन किशोरी जी को ।
श्री सिय सीते रटत निरन्तर निरखत रूप अनन्द ।
मुख सुन्दरता निरखि मनहि मन पावत अति आनन्द ॥
अति प्यारी स्वामिनि सखियन की मेरे मुख को कन्द ।
जानकि जीवन दरश किये ते होत दूर दुख द्वन्द ॥

❀ पद ३६१ ❀

प्यारी री तेरी तिरछी नजरिया ।
ललित सकल अङ्ग छबि को वर्णौं,
कोटि मदन रति वारी री ।।तेरी०।।
रघुनन्दन चित चोर संवलिया,
चित के चोरन हारी री ।।तेरी०।।
दामिनि वरण श्याम घन हिये में,
सुघर रूप उजियारी री ।।तेरी०।।
सन्त जनन की इष्ट देवता,
सखियन की सुखकारी री ।।तेरी०।।
जानकि जीवन वदत मुदित ह्वै,
जीवन प्राण हमारी री ।।तेरी०।।

❀ पद ३६२ ❀

छयल चितवनियां अजब दिलदार ।
मृदु मुसक्याय तिरीछे नयनन मारत मदन कटार ।
केकि कंठ द्युति श्यामल अङ्ग पर लाजत कोटिन मार ।
जानकि जीवन रूप निरखि के रहत न देह सम्हार ।।

❀ पद ३६३ ❀

ललन तेरी मुसकनि जुलुम करे ।
मन्द २ हँसि जेहि तन हेरत ताको प्राण हरे ।
चितवन चारु जहर जादू की, निरखत कतल करे ।।

जानकि जीवन शरण सिया पद गहि भव सिन्धु तरे ॥

❀ पद ३६४ ❀

नयन तेरे बांके रे सांवलिया।

तिरछी तकनि मन्द हँसि हेरनि,
कोटिन काम लजाके रे सांवलिया।

सुन्दर वदन मनोहर मूरति,
अतुल सरूप सुधाके रे सांवलिया॥

जानकि जीवन छवि अति प्यारी,
वरणत शेषहु थाके रे सांवलिया॥

❀ पद ३६५ ❀

प्यारे रे तेरे नयना रसीले।
भृकुटि बंक सरोरुह लोचन मन्द हँसनि गर्वीले रे।
कोटि मनोज लजावनि हारे, सिय छवि सों शरमीले रे॥
सिय सुन्दरता निरखि अनूपम, तन मन की सुधि भूले रे।
घन दामिनि वर वरण युगल छवि रति पति कोटि लजीले रे॥
जानकि जीवन दरस करत ही, सकल सुकृत फल मीले रे॥

❀ पद ३६६ ❀

देखो झाँकी ये बांकी कैसी बनी।
बैठे दोनों सरकार, छवि छाई अपार,
नहिं तन की सम्हार, ऐसी रस में सनी॥देखो०॥

कीन्हे अनुपम शृङ्गार, अली अमित अपार,
सिया स्वामिनि हमार, सुख माने घनी ॥देखो०॥
प्यारी बदन निहार, प्यारे करैं अति प्यार,
दीन्हो तन मन को वार, रघुकुल के मणी ॥देखो०॥
जानकी जीवन शरण, सब दुख के हरण,
नभ बरसै सुमन बहु सुर रमणी ॥देखो०॥

❀ झांकी पद ३६७ ❀

युगल छबि बांकी आज बनी ।
शोभा अयन मयन से सौ गुन, सुन्दर छबि छवनी ।
जलज नयन सुन्दर सुमनोहर चितवनि मन हरनी ॥
मृदु मुसकानि माधुरि सूरत घन दामिनि वरनी ।
जानकि जीवन छबि को वर्णै सुन्दरता सु घनी ॥

❀ विनय पद ३६८ ❀

दीन दयाल प्रणति आरति हर,
अब करते क्यों नहिं दाया ।
आरति हरण प्रणत जन पालक,
वेद तिहारो यश गाया ॥
हौं लालची लवार प्रपंची,
शरण तिहारी आया हूं ।
पाप पीनता देखि दया निधि,
क्यों डरते हो रघुराया ॥

पाहन पशु पतंग गणकादिक,
इनको कैसे अपनाया ।
कीजे कृपा जानकी जीवन,
त्रिभुवन तेरो यश छाया ॥

❀ विनय पद १६९ ❀

पतित पतित-पावन के आगे, बार बार कर जोरि रहा ।
काम क्रोध मद लोभ भरो मैं, शरण तिहारी आय गहा ॥
अति विषयी क्रोधी अरु कामी, सकल दोष का कोष महा ।
त्रिविध ताप संताप व्यथित हो हारि हहर करि खात रहा ॥
अवगुण अमित अधम अपराधी मन मलीनता कहूं कहा ।
प्रणत पाल शरणागत वत्सल, कृपा रावरी चाह रहा ॥
सब सुख खानि जानकि जीवन शरण चरण तव आइ गहा ॥

❀ विनय पद १७० ❀

विनय हमारी सुनो दयानिधि,
दीन बन्धु कहलाते हो ।
सकल दोष को कोष जानि मोहि,
कृपा करत सकुचाते हो ॥
गीध अजामिल आदिक,
इनको तो अपनाया है ।
अवगुण अमित जानि प्रभु मेरे,
पापों से घबराते हो ॥

आरति हरण पतित पावन यश,
निगम नेति कर गाते हैं ।
पाप खान मोहि जान प्रणत हर,
विरदावलि भुलाते हो ॥
जानकि जीवन शरण लीजिये,
करुणा कर कीजे दाया ।
शरणागत वत्सल रघुनन्दन
निज मुख ते तुम गाते हो ॥

❀ विनय पद ३७१ ❀

रे मन शरण सिया जू की गहिये ।
अमृत नाम सुधा रस पीजे, सीते सीते कहिये ।
सिय वर चरण कमल रति उपजै विमल भक्ति को लहिये ॥
युगल माधुरी रूप निरखि के, त्रिविधि ताप नहिं दहिये ।
जानकि जीवन शरण में रहिके, सुख समुद्र में बहिये ॥

❀ पद ३७२ ❀

दशरथ जी के आंगनवां में, खेलत चारो भइया हे ।
राम लखन अरु भरत शत्रुहन,
शोभा वरणि न जइया हे ॥
पीत झीन झंगुली तनु शोभित,
अद्भुत छबि दरशइया हे ।
किलकनि नटनि हरत मुनि मन को,

नूपुर की बजनइया हे ॥
पारब्रह्म ह्वै महि में विचरत,
भक्तन को सुख दइया हे ।
कौशल्यादिक मातु मुदित मन,
पुनि पुनि लेत बलइया हे ॥
जानकि जीवन मुदित विलोकत,
आनन्द उर न समइया हे ॥

❀ विनय पद ३७३ ❀

शरण तेरी आयो जानकि नाथ ।
दीन दयाल प्रणात आरत हर, कृपा सिन्धु रघुनाथ ।
विनु तव कृपा न बनै कोटि युग, धुनत रहो मैं माथ ॥
तुम पल माहिं सुधारत रघुवर, वेद विदित गुण गाथ ।
काम क्रोध मद लोभ भरो मैं, ज्यों क्रम नासा पाथ ॥
जानकि जीवन तव पद सुरसरि गहि के होव सनाथ ॥

❀ विनय पद ३७४ ❀

जनक किशोरी कृपा अब कीजै ।
निज कर्मनि भव सिन्धु परो मैं, कीजे कृपा बांह गहि लीजै ।
हौं तव कृपा रूप की प्यासी दर्शन दै सुख दीजै ॥
तव चरणन की हूं मैं दासी, जस चाहो तस कीजै ।
जानकि जीवन दरश दिखाके निज सेवा में लीजै ॥

❀ पद ३७५ ❀

करो रे मन गुरु चरणन की आस ।
जिनको ध्यान करत अघ नाशत, मिटत सु जम की त्रास ।
सियवर भक्ति बढ़त सुमिरन ते, करत कृपा रघुनाथ ॥
जानकि जीवन शरण में रहि के गावो सिय गुण गाथ ॥

❀ विनय पद ३७६ ❀

करते नहीं दया तो दयानिधि न कहावो ।
निर्दय बनो तो आप और नाम न धरावो ॥
शवरी व गीध आदि से पाया जो नाम था ।
मुझसे अघी को त्याग नहीं नाम गमावो ॥
तारो चहे न तारो इच्छा है आपकी ।
मुद्दत से पड़ा नाम नाथ इसको बचावो ॥
सृष्टि स्थिति लय कारिणी सिय स्वामिनि जू हैं ।
उनकी कृपा से जानकी जीवन ही कहावो ॥

❀ झांकी पद ३७७ ❀

कैसी है अनुपम ए झांकी, बांकी झांकी देख लो ।
करके तन मन धन निछावर मन के भावन देख लो ।
सांवरी सूरत मनोहर सिय मुख द्युति में पगी ।
मन्द मुसकनि चारु चितवनि नयन भर कर देख लो ।
रूप दोनों का मनोहर कौन कवि वर्णन करे ।
सिय की छबि पिय से अधिक दोउ परस्पर देख लो ॥

जानकि जीवन की जोड़ी नयन मग हिय में बसा।
मगन हो सुख सिन्धु में छवि सिन्धु प्यारा देख लो॥

❀ पद ३७८ ❀

देखु री मोरी गुइयां जुगल वर।
विधु वदनी सिया स्वामिनि मोरी, केकि कंठ द्यु ति सइयां॥
दम्पति वदन अनूपम झांकी, चितवन चित चोरइयां।
जानकि जीवन छवि वर्णों किमि रति पति कोटि लजइयां॥

❀ पद ३७९ ❀

हमारी सिया स्वामिनि संग राजत राघव प्यारे।
सुमन श्रृङ्गार किये दोउ अनुपम,
सुमन गुच्छ उर धारे॥हमारी०॥
सुमन चन्द्रिका मुकुट मनोहर,
मन्द हँसन रुचि कारे॥हमारी०॥
चितवनि चारु मोहनी मूरति,
शोभा अमित अपारे॥हमारी०॥
सुमन महल में राजत दोउ,
सखियन प्राण अधारे॥हमारी०॥
जानकि जीवन की झांकी लखि,
रति पति तन मन वारे॥हमारी०॥
सुर प्रमुदित ह्वै सुमन वृष्टि कर,
बोलत जय जय कारे॥हमारी०॥

❀ विनय पद ३८० ❀

जुगल रूप को ध्यान करो रे मन ।
शरद चन्द सम जनक नन्दनी, रघुनन्दन घनश्याम ।
पीताम्बर रघुवर तन शोभित, सिय तन सारी श्याम ॥
निज कर पान खवावत प्यारे, सिय जू के सुख दान ।
जानकि जीवन के यहि रस को, रसिक बिना को जान ॥

❀ पद ३८१ ❀

सिया वर के चरणों में चित्त लगा ले जिसका जी चाहे ।
अनेकों जन्म की बिगड़ी बना ले जिसका जी चाहे ॥
विविध जप योग व्रत करके, हैं धरते ध्यान सुर नर मुनि ।
उन्हीं दम्पति की अनुपम छवि निरख ले जिसका जी चाहे ॥
है सुर दुर्लभ मनुज का तन, जो पाया सिय की करुणा से ।
सदा संतन की संगत कर, समझ ले जिसका जी चाहे ॥
जो सूक्ष्म स्थूल कारण से परे वय हैं उसी में जा ।
जुगल रस रूप की झांकी, को कर ले जिसका जी चाहे ॥
कठिन माया प्रभु की है, न कोई पार पाता है ।
शरण जा जानकी जीवन को तर ले जिसका जी चाहे ॥

❀ झांकी पद ३८२ ❀

बधा आज की प्यारी प्यारी मुबारक,
सदा रस के ये विहारी मुबारक ॥
झांकी अनूपम करे कौन वर्णन ।

सिया राम की युगल जोड़ी मुबारक ॥
विविध भांति के वस्त्र भूषण विभूषित ।
सिया सिर हो जरतारी सारी मुबारक ॥
निछावर करें प्राण धन दम्पति पर ।
सदा सुर करें जय जय कारी मुबारक ॥
शरण जानकि जीवन छवि को निरख कर ।
करें अप्सरा नृत्य कारी मुबारक ॥

❀ झांकी पद १८२ ❀

मैं तोपै बलिहारी जाऊं सिया रघुरैया ।
शरद चन्द्र सम मुख छवि शोभित,
मुसकनि वर्णि न जइया ।
नीरज नयन ललित चितवनि प्रिय,
भृकुटि मनोज लजइया ॥मैं०॥
राजत भाल तिलक केशरि को,
नाशामणि सुख दइया ।
मुकुट चन्द्रिका की छवि अद्भुत,
कुन्डल की झलकैया ।
उर मणि माल पीतपट राजत,
दामिनि दुति हरइया ॥मैं०॥
बैठे कनक भवन सिंहासन,
नित प्रति रास रचइया ।

कोटिन सुर प्रमदा बनि आवत,
दम्पति छबि निरखइया ।
बिनु सिय कृपा मिलै नहिं यह सुख,
कोटिन करो उपइया ॥मैं०॥
अगणित सहचरि नाचत गावत,
कोकिल कन्ठ सुहइया ।
ताकी शोभा को कवि वर्णों,
शेषहु मन सकुचइया ॥मैं०॥
शरण जानकी जीवन जू की,
है भव फन्द छुड़इया ।
अति दुस्तर संसार तरन को,
चरन कमल सुखदइया ॥मैं०॥

❀ पद ३८४ ❀

छवि लखि रघुवर मन्द हँसन की,
मन्द हंसन की कांति दसन की ।
भृकुटि बंक सरोरुह लोचन ।
निरखि रहत सुधि नाहिं बदन की ।
सुर पुर तुच्छ सुरेशहि लागत,
निरखि जुगल छबि कनक भवन की ।
जानकि जीवन छबि अवलोकत,
रहत नाहिं सुधि अपने सदन की ॥

❀ पद ३८५ ❀

प्यारे राघव से नयना लगाय आई ।
जुगल माधुरी मूरति लखि के, बिन ही मोल बिकाय आई ।
लोक और परलोक की लज्जा प्रीतम पग लपटाय आई ॥
कहा करौं सखि कल न परत मोहि बिनु देखे प्रीतम रघुराई ।
जानकि जीवन शरण जाइके भव की त्रास मिटाय आई ॥

❀ पद ३८६ ❀

जोड़ी जुगल मनोहर सजनी, निरखहु भरि २ नयना हे ।
जनक नन्दनी अरु रघुनन्दन, हैं सब सुख के अयना हे ॥
रघुवर की छबि नील कंज सम, सिय छवि की नहिं उपमा हे ।
स्वामिनि के सिर सारी शोभित, रघुवर पीत वसनमा हे ॥
दोउन के सिर मुकुट चन्द्रिका, रवि शशि द्यु ति हरनमा हे ।
विविध भांति के वसन विभूषण जगमग करत नगनमा हे ॥
दम्पति शोभा को कवि वरणे, शेषहु मन सकुचनमा हे ।
भव बंधन की छोरन हारी जानकि जीवन शरणमा हे ॥

❀ पद ३८७ ❀

लोक लोचन की सुख देनी युगल सरकार की झांकी ।
सकल अघ पुन्ज की हरणी जुगल सरकार की झांकी ॥
लजाते कोटि रति पति हैं निरखि छबि दम्पति की अनुपम ।
हंसनि हेरनि में बस करनी, युगल सरकार की झांकी ॥
अतुल अनुपम मनोहर है, ए राजीव नयन के दर्शन ।

कठिन भव सिन्धु की तरणी युगल सरकार की झांकी ॥
मुकुट और चंद्रिका सिर पर, तिलक है भाल में सुन्दर ।
रवि शशि की प्रभा हरणी, युगल सरकार की झांकी ॥
किये हैं सोलहों शृङ्गार, अनुपम जानकी जीवन ।
जनन को इच्छित फल देनी, युगल सरकार की झांकी ॥

❀ पद २८८ ❀

दीन दयाल दया करि के,
इस दीन को ओर निहारिये जू ।
बहु पाप की खानि प्रभु मोहि जानि,
कृपा की न बानि बिसारिये जू ॥
मद क्रोध अरु लोभ की सेन महा,
हूं अनाथ सहारे तिहारे ही जू ।
जानकि जीवन कीजे कृपा,
तिहुं लोक सुयश विस्तारिये जू ॥

❀ पद १८९ ❀

पिया प्यारे की छबि पर मैं वारी ।
श्याम सरोज बदन की शोभा अलकैं प्यारी घुंघरारी ।
क्रीट मुकुट मकराकृत कुन्डल, नाशामणि की दुति न्यारी ॥
बिन देखे सखि कल न परत है, कोटि जतन कर मैं हारी ।
जानकि जीवन शरण लेहु अब, हरहु वियोग व्यथा सारी ॥

❀ पद ३९० ❀

हे रघुनन्दन कृपा अब कीजै ।
योनि अनेक भटक भटक कर,
डूबत भवनिधि कर गहि लीजै ।
अति मलीन पापी अपराधी
निज दिसि देखि अभय मोहि कीजै ॥
पतित उधारन नाम तिहारो,
जानि पतित पावन कर दीजै ।
दीन दयाल प्रणत जन पालक,
करि दाया निज विरद रखीजै ॥
जानकि जीवन शरण तिहारी,
द्वार पड़े चाहे जस कीजै ॥

❀ पद ३९१ ❀

सियवर की ये अनुपम झांकी निरखो री सहेलियां ।
मन्द २ मुसक्यात मनोहर, दोउ गात ललित अति सुन्दर ।
अवलोकहु भरि नयन युगल छबि, प्यारी री मन हरियाँ ॥
कोटि मनोज लजावनि हारी सुन्दरता अतिशय सुखकारी ।
दृग चकोर मुख चन्द्र सु लखि के बार बार बलि हरियां ॥
लाजत कोटिकाम छबिऊपर, दोउदिसि अलिगन गावत मनहर
विविध भाँति की सौंज लिये कर, सेवा की सुख करियाँ ॥
जानकि जीवन माधुरी मूरति, लखिके भूलजात तन सूरति।

नभ प्रसून वर्षत सुर हर्षत, बोलत जय जय करियां ॥

❀ पद ३६२ ❀

रघुनन्दन घनश्याम भजो रे मन ।

श्याम शरीर सुभाय सलोने, शोभा छबि के धाम ।
बाम भाग शोभित सिय सुन्दर लखि रति पति सु लजानि ।
क्रीट चन्द्रिका मुकुट मनोहर, भूषण बसन महान ॥
अरस परस दोउ पान खवावत, मन्द मन्द मुसकान ।
दम्पति की शोभा अति प्यारी घन दामिनि लपटान ॥
जानकि जीवन के यहि रस को, रसिक बिना को जान ॥

❀ पद ३६३ ❀

युगल छबि बांकी आज बनी ।
नील पीत पाथोज वर्ण वपु सुन्दरता जु घनी ॥
हास विलास प्रेम रस भीने, रसिकन के शिरमणी ।
मुकुट चन्द्रिका की छबि अद्भुत भूषण जटित मणी ॥
जानकि जीवन रूप निरखि के देवन जय २ भनी ॥

❀ पद ३६४ ❀

सिया राम की अनुपम झांकी, निरखत ही बन जाये रे ।
क्रीट मुकुट की चमकन दमकन छबि अद्भुत दर्शाये रे ॥
उर मणिहार अनूपम शोभा, निरखि २ लोचन मन लोभा ।
प्रभु दर्शन की शोभा न्यारी, वरनी कापे जाये रे ॥क्रीट॥

नीरज नैन मनोहर चितवन, प्यारो प्यारी की तन हेरन।
मन वानी बुद्धि से परे, दम्पति भाव लखाये रे। क्रीट।
कोटिन काम लजावन हारी, जोड़ी सुन्दर प्यारी प्यारी।
जानकि जीवन दरस करत ही, जन्म सुफल हो जाये रे॥

❀ पद ३९५ ❀

किशोरी जी की छबि निरखत रघुनन्द।
हिय विच ध्यान धरत अवलोकत, पावत अति आनन्द।
चन्द्र बदन सुखमारि मनोहर द्युति दामिनि से दुचंद॥
ललित सकल अङ्ग को छबि बरनै चितवनि मुसकनि मंद।
जानकि जीवन शरन पिया के निरखत युग पद कन्ज॥

❀ पद ३९६ ❀

संवलिया के नयना बड़े रतनार।
अति प्यारे अनियारे तीखे वेधत मनहुं कटार॥
चितवनि चारु जहर की बोरी, घायल करत अपार।
जानकि जीवन लोचन निरखत होत तुरत भवपार॥

❀ पद ३९७ ❀

किशोरी जी के लागत प्यारे नैन।
अरुनारे अनियारे चंचल, सुन्दरता की ऐन,
खंजन की उपमा क्या दीजे पङ्कज हू सम हैन।
लखि लाजत कोटिन मृग नयना उपमा देत बनैन॥

प्यारी प्यारी प्यारी अँखियां प्यारी प्यारी सैन ।
रघुनन्दन के बस करिवे को तिर्छी तकन सुखदैन ॥
कजरारे लोचन बिन देखे, पलक परत नहिं चैन ।
जानकि जीवन शरन सिया के दरस करत दिन रैन ॥

❀ पद ३९८ ❀

बसो मेरे हिय में सिय रघुलाल ।
कनक भवन में अनुपम झांकी, सुन्दर रूप विशाल ।
शील रूप आगार अमित छबि लखि लाजत रति मार ॥
वाम भाग श्री जनक किशोरी सन्तन की प्रतिपाल ॥
सहज सलौनी सुठि सुकुमारी, दोउ दिसि अगनित बाल ।
जानकि जीवन शरन सिया के सुख पावत तिहुं काल ॥

❀ पद ३९९ ❀

लखो छवि प्यारी बारम्बार ।
दामिनि बरन सिया सकुमारी, श्याम बरन सुकुमार ।
हंसत हंसावत अरस परस दोउ शोभा अमित अपार ॥
बरसत फूल विबुध हिय हरषत, करत सु जय जयकार ।
जानकि जीवन की यह छवि पर लाजत कोटिन मार ॥

❀ पद ४०० ❀

भजो रे मन सिया रमन सुख धाम ।
सभी हों मन के पूरन काम ॥

मनोहर सुन्दर है जोरी, सुचितवन चित को है चोरी ।
छबी रति मन्मथ मद भोरी, युगल वर दोउ ललित ललाम ॥
जनक जा सीता सीताराम, मैथिली जनक सुता शुभ नाम ।
जपो नित सिया सिया सियाराम ॥ सभी० ॥
कहो अवधेश सुरेश रमेश, रघुकुल भूषण श्री परमेश ।
सुव्यापक ब्रह्म विरज विश्वेश जानकि जीवन जग अभिराम

❀ पद ४०१ ❀

किशोरी जी की, कृपा करत दुख दूर ।
मृदु मुसकान मनोहर मूरति, अमिय सजीवन मूरि ।
चितवनि ललित ताप त्रय मोचन, सुखदायक भरि पूरि ॥
दर्शन ध्यान करत अघ नाशत, होत पाप सब चूर ।
जानकि जीवन शरण सिया को भव बन्दन दे तूरि ॥

❀ पद ४०२ ❀

राघव निरखत नयन किशोरी जी के ।
मुख मयंक बिन देखे पिय को, पलक परत नहिं चैन ।
आयसु कहा कहो किन प्यारी वदत सु मधुरे बैन ॥
कृपा कटाक्ष विलोकनि अद्भुत हृदय बसत दिन रैन ।
जानकि जीवन की सिय स्वामिनि सन्तन को सुख दैन ॥

❀ पद ४०३ ❀

सिय सुकुमारी जनन सुख दैनी ।
सुन्दरता सुख खानि मनोहर, मूरति मन हर लैनी ॥

सकल पाप सन्ताप दूरि करि, मन की आस पुरैनी ।
जानकि जीवन झांकी लखि लखि गान करहि पिक बयनी ॥

❀ पद ४०४ ❀

जानकी नाथ कृपा अब कीजे ॥
लख चौरासी योनि भरम के आयो,
शरण बांहि गहि लीजे ॥
भक्ति हीन आलसी, अलायक,
हूं सब बिधि अपराधी ।
मैं हूं पतित पतित पावन तुम,
अपनो विरद रखीजे ॥
दीन बन्धु सुख सिन्धु दयानिधि,
जगत विदित अघ हारी ।
गणिका गीध अजामिल तारे,
मेरी भी सुधि लीजे ॥
चाहत निशि दिन तुमरे दर्शन,
इतनी विनय सुनी जैं ।
जानकि जीवन अपनो करि के,
सेवा में रख लीजे ॥

❀ पद ४०५ ❀

मन्द हंसनि अति प्यारी किशोरी जी की ।
मुख सु मयंक छबी अति नीकी अधरन की अरुनारी ।

ललित कपोल छबि को वर्णे नाशामणि अति न्यारी ॥
चमकनि दमकनि कांति दसन की अति अद्भुत सुख कारी ।
जानकि जीवन सिय मुख छबि पर कोटिन रति बलिहारी ॥

❀ पद ४०६ ❀

ललकि लखु प्यारी हो चारों ललना ।
दुइ श्यामल दुइ गौर मनोहर चितवन चित हरना हो ॥
मुसकन मन्द अमिय रस बोरी किलकन मन हरना हो ।
मात कौशल्या लेत बलैया तन मन वारी ना हो ॥
देत दान विप्रन कहं राजा बहु मुक्ता मणि ना हो ।
जाचक जन जांचत सोइ पावत जो २ मन भावे ना हो ॥
प्रमदा प्रमुदित गान करत बहु निरतत ता थेई ना हो ।
जानकि जीवन शरण दरश करि नयना नाहिं भरे ना हो ॥

❀ पद ४०७ ❀

किशोरी जी के नयनन की बलिहारी ।
विकट भृकुटि सुन्दरि चितवनि पर कोटि मदन रतिवारी ॥
बिधु बदनी सुकुमारि मनोहर रघुवर राज दुलारी ।
जाकी कृपा बिलोकनि चाहत निस दिन अवध विहारी ॥
सन्त जनन की इष्ट देवता, सखियन प्राण पियारी ।
दर्शन दे दुख हरत जानकी जीवन की हितकारी ॥

❀ लावनी पद ४०८ ❀

श्री रघुवर राज किशोर प्रणत हित कारी ।

अब कृपा करौ रघुनाथ भगत भयहारी ॥
दुख बहुत सहे नहिं कहे हो जानत प्यारे ।
तव पद कञ्जन विसराय सहे दुख भारे ।
ये दीना नाथ अनाथ सलिल अघहारी ॥अब०॥
मोहि दीजे यह वरदान जपूं तव नाम न बिसरूं कबही,
निज कर्मनि जाऊं कहीं न भूलूं तुमहीं ।
हे पतित उधारन नाथ दीन हितकारी ॥अब०॥
गई बाल अवस्था खेल करत बहु युवा भये मद माते,
कीन्हे मन माने कर्म, सकल रंग राते ।
जब बूढ़े भये बल गये न पूछै कोउ घर वारी ॥अब०॥
सकल कुटुम्ब परिवार देत बिसराय सहत दुख भारी ।
तुम बिन कोउ नहिं नाथ, श्रीअवध विहारी ।
अब जानकि जीवन शरण गये तव चरण हिये में हारी ॥

जानकी जीवन प्रेम दर्पण

❀ पद ४०९ ❀

लाल लली की छवि निरखु सहेली आज ।
बरबस मेरो चित चोरी लियो री ॥
राम सु घनश्याम छवि कोटि शत काम,
दामिनि वदन सिया स्वामिनि लखो री ।
मन्द हंसनि प्यारी प्यारी विलोकनि,
बैन वदत में सु अमृत भरे री ॥

अङ्ग अङ्ग अनुपम छवि जाके शोभित,
उपमा कहत शेष शारद लजै री।
जानकि जीवन हिय में बसा के,
नयनन सुधा रूप भरि भरि पिये री॥

❀ पद ४१० ❀

किशोरी जी की लागत प्रिय मुसकानि।
अधरन की अरुणाई सुन्दर दसनन कांति महान।
कृपा कटाक्ष विलोकनि बांकी रघुवर की सुखदानि।
मंद हंसन में अमृत वर्षत, देखत रति सु लजानि॥
अमित निकाई को कवि वर्णौं शारदहुँ सकुचानि।
जानकि जीवन शरण सिया की, सफल सुकृत की खानि॥

❀ पद ४११ ❀

प्यारी छबि लखु श्री रघुवीर की।
क्रीट मुकुट कुन्डल की चमकन, दमकन भूषण चीर की॥
वदन मयंक ताप त्रय मोचन मन्द हंसनि रणधीर की।
शोभा निरखि काम शत लाजत, बोलनि वचन गम्भीर की॥
जानकी जीवन माधुरी मूरति, सुन्दर श्याम शरीर की॥

❀ पद ४१२ ❀

किशोरी जी शरण मोहि रख लीजे।
जन जननी करुणा मय मूरति कृपा दया अब कीजे।
धर्म प्रतीति न प्रीति सुकर्मन, करनी चित न दीजे॥

लोक और वेद में सुयश तिहारो अपनो विरद रखीजे ॥
तव पद कंजन में चित लाऊं इतना वर मोहि दीजे ।
जानकि जीवन शरण तुम्हारो, मोहि अपनो कर लीजे ॥

❀ पद ४१३ ❀

वारी जाऊं अनेक बार प्यारे तेरी सूरत पै ।
अवध छैल चित चोर संवलिया दशरथ राजकुमार ॥
श्याम सरोज बदन अति सुन्दर लखि लाजत रति मार ।
चितवनि चारु भृकुटि वर बांकी झाँकी परम उदार ॥
सहज सलोने नख शिख नीके शोभा अमित अपार ।
जानकि शीवन शरण छबि लखि, दीन्ह सु तन मन वार ॥

❀ पद ४१४ ❀

रघुवर तुमही सांचो मीता ।
गयो बालपन प्रौढ़ होत ही बढ़ी अधिक उर चिन्ता ।
मात पिता उपदेश करत नित द्रव्य उपार्जन गीता ॥
भाई बन्धु सभी स्वारथ के, बिनु स्वारथ बिपरीता ॥
सुत बित दारा सन्निपात में फंसि के भयो सभीता ।
जानकि जीवन शरण गहे ते भये सुखी दुख बीता ॥

❀ पद ४१५ ❀

भजु मन राम नाम सुख दाता ।
शिव सनकादि जाहि जपत है ध्यान सु धरत विधाता ।

सुमिरत जाके भव भय नाशत जमहु निकट नहिं आता ॥
खल कामादिक नाशत क्षण में तीनों ताप दबाता ।
सियबर चरण भक्ति हिय उपजत जन्म मरन मिट जाता ॥
विधिना लिखे कुअंक भाल के सो दुख सकल नशाता ।
जानकि जीवन नाम कल्प तरु चारिउ फल को दाता ॥

❀ पद ४१६ ❀

छबि लखियो री मन भावन की ।
श्याम शरीर सुभाय सलोने,
रति पति कोटि लजावन की ॥
सुन्दर वदन मनोहर मूरति,
मन्द मन्द मुसक्कावन की ।
ललित कपोल नयन अति बांके,
चितवन चित चोरावन की ॥
जानकि जीवन झाँकी अनुपम,
रूप सुधा वरसावन की ॥

❀ पद ४१७ ❀

छबि लखियो री सिय स्वामिनि की ।
करुणा दया कृपा की मूरति, प्रेम सुधा बरसावन की ।
मुख सरोज नयना अति प्यारे रघुवर चितहि लुभावन की ॥
अगणित सहचरि नाचत गावत, कोकिल कंठ सुहावनि की ।
जानकि जीवन रूप सुधा में डूबे थाह न पावन की ॥

❀ पद ४१८ ❀

सुमिर मन नाम शिरोमणि राम ।
गिरा गनेश सु सुमिरै राम सु नाम प्रधान ।
मुनि मन मानस रूप सदा हो निर्गुन सगुन समान ॥
पूरन राम सरूप सुधा रस, परम प्रेम गुण धाम ।
रस २ राम नाम रस पीना सरस साम गुन गान ॥

❀ पद ४१९ ❀

आनन्द कन्द राम ने चित को चुरा लिया,
जाने न मन्त्र कौन सा मुझ पै घला दिया ॥
होकर के मौन बैठी सुधि है न देह की,
सूरत दिखा के प्यारी बौरी बना दिया ॥
शोभा अमित है जिनकी, वरनन करेगा कौन ।
प्यारे अनुपम रूप से मुझको लुभा लिया ।
है चाल मत्त गज की चितवन मनोहरी,
जब तक लखूं न सूरत तड़पै मेरा जिया ।
सब बिधि हुई मैं तेरी सुनिये जानकी जीवन,
हो करके मेरे प्रियवर, बसिये मेरे हिया ॥

❀ पद ४२० ❀

ललन तेरी जुलफैं नागिन कारी ।
विषधर हूं से अधिक विषैली, देखन में अति प्यारी ।
निरखत ही विष चढ़त सकल अङ्ग होत व्यथा अति भारी ।

करि डारत बेहोश तुरत ही लहर उठत सुख कारी ।
जानकि जीवन हैं प्रिय मूरति, भव दुख मेटन हारी ॥

❀ पद ४२१ ❀

अवध छैल छलिया है ए री ।
भृकुटि बंक अम्भोरुह लोचन, चितवन से चित को बंधेरी।
बाहर भीतर श्याम मनोहर, वैन वदत में रस बरसें री ।
सुषमासागर रूपअनूपम, छबि लखि रतिपति कोटि लजैरी ॥
जानकि जीवन बांकी भाँकी वरनत शारदहु सकुचै री ॥

❀ पद ४२२ ❀

अवलोकहु भरि नयन सखी री,
सिय रघुवर की अनुपम भाँकी ।
अति सुन्दर सुकुमार मनोहर,
शोभा अतुल न समता जाकी ॥
पीत वरण जामा तन शोभित,
छबि दरसत ज्यों घन चपला की ।
भाव भरे रस भरे नयन दोउ,
चितवनि प्रिय विहंसनि अति बांकी ॥
सहज सलोने अमित निकाई,
वरनत शारद की बुधि थाकी ॥
सिय स्वामिनि संग बढ़ी सुघरता,
अवध छैल रघुनाथ लला की ।

जानकिजीवन प्यारी मूरति सुषमा सिंधु सनेह सुधा की ॥

❀ पद ४२३ ❀

सदा मुझ को रघुवर रुलाता रहेगा ।
मेरे मन को कब तक जलाता रहेगा ॥
विरह अग्नि तेरी भड़कती रहेगी,
दरश देन उसको बुझाता रहेगा ।
सभी दीन दुखियों के बन्धु कहा कर,
बचाओ तभी तो यह नाता रहेगा ॥
मरूं या जीऊं कुछ नहीं सोच मेरे,
दयालु तेरा नाम जाता रहेगा ।
आकर के जल्दी मिलो जानकी जीवन,
सुयश तेरा संसार गाता रहेगा ।

❀ पद ४२४ ❀

नहिं कोउ प्रभु समान उपकारी ।
पातक पीन मलीन अघी अति, शिला भई रिषि नारी ॥
पद रज डारि ताहि गति दीन्ही अघ अवगुनहिं विसारी ।
यवन व्याध गनिका औ अजामिल पाप किये बहु भारी ॥
दूषण दुख दूर करि तिनको, कियो धाम अधिकारी ।
अधम जाति भीलनी जोषिता भक्ति करी हिय कारी ॥
प्रेम सहित फल ताके खाये करी सरहना भारी ।
अधम उधारन नाम श्रवण सुनि, मन में मोद अपारी ॥

दीजे भक्ती जानकी जीवन आए शरण तुम्हारी ॥

❀ पद ४२५ ❀

जनक की किशोरी जपा जपाकर,
सदा ध्यान पद कंज में तू लगाकर ।
जलज नैनि गुन ऐनि स्वामिनि जगत की,
कृपालु दयालु हैं बुद्धि के आकर ॥
इन्हीं की कृपा को लला जी ललाते,
सु चितवन में चितचोर चित को गंवाकर ।
भजोगे सिया को मिलेंगे सिया वर,
सभी प्रेमियों के हैं दम्पति सुखाकर ॥
अहर्निशि रहो जानकि जीवन शरण में,
इन्हीं के चरण में सु तन मन लगा कर ॥

❀ पद ४२६ ❀

रघुवर शरण मोहिं रख लीजै ।
कलिमल करतव पीन जानि मम करनी चित नहिं दीजै ॥
पाप खानि जिय जानि नाथ मोहिं पतितन में गनि लीजे ।
अधम उधारन नाम तिहारो अपनो विरद रखी जै ॥
दीन दयाल प्रणत जन पालक करुणा दया करी जै ।
जानकि जीवन पद पंकज की भक्ती को वर दीजे ॥

❀ पद ४२७ ❀

किशोरी जी मोहिं अपनो कर लीजे ।

सब बिध हूं चरणन की चेरी कृपा दया अब कीजै ॥
पूजा पाठ कछू नहिं जानू सो मन में न धरी जै ।
कृपा रूपिणी नाम तिहारो अपनो पन रख लीजै ॥
जानकि जीवन शरण तिहारे महल खवासी दीजै ॥

❀ पद ४२८ ❀

सांवरी सूरत छबि की खानि ।
चारु कपोल चिबुक अति सुन्दर मन्द मन्द मुसकान ॥
वयस किशोर माधुरी मूरति हेरनि हंसनि महान् ।
शोभा अयन वदन अति सुन्दर लखि मन्मथ सु लजान ॥
रूप अनूपम को कवि वर्णो शेषहु मन सकुचान ।
जानकि जीवन हिये बसा कर निरखो आठों याम ॥

जानकी जीवन सुधा

❀ पद ४२९ ❀

दया निधि क्यों नहिं दया करो ।
पतित उधारन नाम श्रवन सुनि हूँ तब द्वार परो ।
यदपि मलीन महा अपराधी सब अवगुननि भरो ॥
अधम अलायक क्रोधी कामी विषयन पेट भरो ।
गनिका गीध अजामिल तारे तिनते बढ़ो चढ़ो ॥
पाप खानि जिय जानि नाथ मोहिं काहे को निदरो !
पतित से पतित अनेकन तारे त्रिभुमन यश वगरो ॥

जानकि जीवन सकल आस तजि तव चरणन पकरो ॥

❀ पद ४३० ❀

किशोरी तेरे चरन कमल की आस ।
कामी कुटिल महा अपराधी अघ अवगुण की राशि ।
पाप खानि जिय जानि स्वामिनी कीजे नहीं निरास ॥
पतित से पतित अनेकन तारे है यह दृढ़ विश्वास ।
सिय जू कृपा दया की मूरति श्रुति पुराण विख्यात ॥
तुमरी समता को या जग में नाहिन और दिखात ।
कृपा रूपिणी नाम तिहारो वेद विदित गुन गाथ ॥
जानकि जीवन शरण राखि के मेटो भव की त्रास ॥

❀ शोभा पद ४३१ ❀

संवरिया के नयनों में जादू भरी ।
भृकुटी बंक सरोरुह लोचन चितवनि चित्त हरी ।
ललित कपोल नासिका सुन्दर मुसकनि मोद भरी ॥
अनियारी अंखियां कजरारी तीखी शान धरी ।
जाके लगे चैन नहिं पावे तड़पे घरी घरी ॥
नवल माधुरी छवि निरखें बिन मन नहिं धीर धरी ।
जानकि जीवन रूप अनूपम कोटि मार मद हरी ॥

❀ विनय पद ४३२ ❀

नाथ मैं हूं पापिन सरदार ।
कपटी कुटिल महा अपराधी अभिमानी बदकार ।

भरि २ उदर विषय रस पीवत शरम लाज दी डार ॥
मम समता को है नहिं जग में खोजो चहे हजार ।
अधम उधारन नाम श्रवण सुनि आयो तेरे द्वार ॥
अति लालची लवाह प्रपन्ची अरु अघ को भंडार ।
ऊपर से तव भक्त बनो मैं भीतर भरे विकार ।
जानकि जीवन कृपा दया करि करदो भव से पार ॥

❀ बनरा पद ४३३ ❀

सिय दुलहे की छबि लखु आली ।
श्याम अङ्ग पर वसन विभूषन,
हे दमकनि दामिनि दुति वाली ।
लाजत कोटि मदन छबि ऊपर, गति मयंद मतवाली ॥
टोना जादू मन्त्र सिखे हैं प्रिय मूरति भोली भाली ।
हँसि २ नैनन सैन चलावत जुल्फे जनु नागिन काली ॥
जिनके डसे लहरि नहिं आवत हारे बहुतक बंगाली ।
मौर मौरि की छटा अनूपम कुन्डल छटा सुजोति निराली ॥
जादू टोना मन्त्र सिखे ए दीन्ही अगणित घर घाली ।
जानकि जीवन रूप देखि के बिन ही मोल बिकी आली ॥

❀ पद ४३४ ❀

रक्षक सिया हमारी फिकर मोहि काहे की ।
जगत जननि जग पालनि हारी रिधि सिधि की भंडारी ।
जिनके परम दुलारे प्यारे महाबीर बल कारी ॥

देव दनुज मुनि नाग मनुज सब आयसु के अधिकारी ॥
ए ही भुक्ति मुक्ति की दाता वेद पुराण पुकारी ।
आठौ सिद्धि खड़ी कर जोरे रिधि सिद्धि हैं दरबारी ॥
बिन ही हेतु कृपा करि स्वामिनि भव ते देत उबारी ।
जानकि जीवन शरण में रहि के मन में मोद अपारी ॥

❀ झांकी पद ४३५ ❀

छबीली छबी पर छबीले रंगे ।
मृदु मुसकानि विलोकि अनूपम रूप सरूप ठगे ।
भरे उमंग दिये गलबाहीं प्रेम प्रमोद पगे ॥
हँसत हँसावत पान खवावत नैन सैन उरझे ।
भृकुटी बंक सरोरुह लोचन केशर तिलक लगे ॥
दम्पति की झांकी अवलोकत रति पति कोटि लजे ।
अतुल अनूपम छबी विलोकत भूरि वलाय भगे ॥
नैन सैन सों दोउ बतरावत उर अनुराग जगे ।
जानकि जीवन छबि को वर्णत शारद शेष लजे ।

❀ पद ४३६ ❀

सिया मुख चन्द के ऊपर श्री राघव जी लुभाने हैं ।
अतुल अनुपम सुघरता लखि भये छवि पर दिवाने हैं ॥
बदन सुन्दर मनोहर है सु पूरन शशि के अभा का ।
वसन भूषन नवल तन पर लगत सुन्दर सुहाने हैं ॥

अमित सखियां खड़ी इत उत लिये कर सौंज सेवा की ।
प्रिया प्रीतम के भावों को रसिक जन ही पिछाने हैं ॥
किये शृङ्गार बैठे हैं सु दम्पति रूप के आगार ।
छटा अनुपम निरखि करके स्वयं रति पति बिकाने हैं ॥
करेगा कौन कवि वर्णन छटा ए जानकी जीवन ।
न कोई इनकी समता का दूसरा है जमाने में ॥

❀ पद ४३७ ❀

मंगल मोद निधनवा सिरी सिय जू के सजनवां ।
बंगला सुमन मध्य दोउ राजत रसिकन के सुखदनवां ॥
श्याम अङ्ग सुकुमार मनोहर तापर मृदु मुसकनवां ।
पुष्पन के सिर क्रीट चन्द्रिका कुन्डल छवि छलकनवां ॥
दम्पति को शृङ्गार अनूपम उड़त सुगन्ध सुमनवां ।
दोउ दिशि खड़ी अली अलबेली दोउन की सुखदनवां ॥
प्यारी प्रीतम पगे प्रेम में राजत कनक भवनवां ।
देव सुमन वर्षावत हर्षत जय २ धुनि उचरनवां ॥
जानकि जीवन मूरति प्यारी मन की आस पुरनवां ॥

❀ बनरा पद ४३८ ❀

सिय वनरी का दुलहा निरखो सुन्दर श्याम सलोना री ।
सोहत मौर मनोहर माथे कुन्डल छवि छलकौना री ॥
मृदु मुसकानि मोहनी मूरति चितवनि डारत टोना री
छबि निरखत मैं भई बावरी लाज धरी इक कोना री ॥

अतुल छटा लखि भई दिवानी ना जाने का होना री।
रात दिना सखि कल न परत मोहि बैठी होकर मौनारी॥
रूप अनूपम कहँ लगि वर्णौं चितवनि में चित छीना री।
जानकि जीवन इनकी पटतर है ना कोई होना री॥

❀ वनरा पद ४३६ ❀

रंगीला बना मन्द मन्द मुसकात।
सुन्दर श्याम शरीर मनोहर मन्मथ कोटि लजात।
प्यारी चितवनि मन को मोहत पान खात बतरात।
ललित लुनाई सुन्दरताई शोभा किमि कहि जात।
सुमुखि सुनयनी कोकिल वयनी विवश भई लखि गात॥
छबि निरखत सब भई बावरी सुख नहिं वरणि सिरात।
निरखि निकाई अरु सुघराई देह गेह बिसरात।
जानकि जीवन वश कर लीनो जादूगर बिख्यात॥

❀ वनरा पद ४५० ❀

तेरी मुसकनि मन लागा रे वनरा।
श्याम अङ्ग पर पीत बसनवा,
दामिनि दुति की आभा रे वनरा॥
मौर मौरि की शोभा अनुपम,
लखि हिय में अनुरागा रे वनरा।
बना से बनी रूप में सौ गुन,
लखि रति पति मद भागा रे वनरा॥

चितवनि चारु लली की लखि के,
लाल सराहत भागा रे वनरा ।
जानकि जीवन छबि अवलोकत,
जग से होत विरागा रे वनरा ॥

❀ बनरा पद ४४१ ❀

बना तेरी अखियन में कछु टोना ।
चितवत ही मैं भई बावरी लाज धरी इक कोना ।
अतुल सुघरता श्याम अङ्ग की मन्मथ कोटि लजौना ॥
मणिमय मौर मनोहर शोभित सेहरा छबि छलकौना ।
अति सुन्दरता निरखि २ सखि वारत राई लोना ॥
इनकी समता का इस जग में हुवा न कोई होना ।
पुण्य प्रभाव प्रगट भये सखिरी आये अपने भवना ॥
सिय स्वामिनि संग परी भावरी भाग्य सराहि सकौंना ।
एको पल सुधि बिसरत नाहीं ना जाने का होना ॥
जानकि जीवन अवध छाड़ि के मिथिला के मन मोहना ॥

❀ वनरा पद ४४२ ❀

मन्द मन्द मुसकान बना तेरी ।
नैन विशाल भृकुटि प्रिय बांकी चितवनि ललित महान ।
अधर अरुण प्रिय कान्ति दसन की को करि सकै बखान ॥
बिन ही मोल बिकी हम इन पै सुधि बुधि सब बिसरान ।
प्रमुदित जनक नगर की अलियां वारत तन मन प्रान ॥

अतुल अनूपम छबि के ऊपर मन्मथ कोटि लजान ॥
छवि निरखत हो गई बावरी बिसरी कुल की कान ।
जानकि जीवन छबी अनूपम है सब सुख की खान ॥

❀ झांकी पद ४४३ ❀

रघुवर श्याम सुजान लखो सखि ।
सबगुन खानि सिया सुकुमारी रघुनन्दन सुख दानि ।
चंपक वर्णी जनक नन्दिनी कृपा दया की खानि ॥
प्यारे सिय को मुख अवलोकत पावत सुख सु महान ।
रूप शील गुण धाम सांवरे को करि सकै बखान ॥
प्रेम सुधा रस पगे परस्पर लाजत कोटिन काम ।
कोउ सखि राई लोन उतारति वारति तन मन प्रान ॥
जानकि जीवन हँसि २ दोउन अतर करावत घ्रान ॥

❀ बनरा पद ४४४ ❀

बनि आया बना दिलदार यार मेरा सांवलिया ।
मुख मयंक सरसीरुह लोचन रूप अनूप अपार ।
मार मद को हरिया ॥
प्राणहु ते प्रिय लागत सजनी लीजे दृगन निहार ।
छबी के आगरिया ॥
पीत वसन भूषण छबि अद्भुत जगमग जोति अपार ।
तड़ित द्युति लाजरिया ॥

धन्य २ जे छबि अवलोकत दशरथ राजकुमार ।

ज्ञान गुन सागरिया ॥

प्रमदा प्रमुदित रूप निहारत करि तन मन बलिहार ।

भई सब बावरिया ॥

सिय को दूलह देखि मगन सब जनकपुरी नरनारि ।

सु रूप उजागरिया ॥

जानकि जीवन छबि के ऊपर कोटि मदन रति ।

बार बार बलिहरिया ॥

❀ बनरा पद ४४५ ❀

सिय बनरी का बना अति बांका ।

मनिमय मौर मनोहर शोभित कोटिन काम लजाका ।

वसन विभूषण को छबि अद्भुत मिले न उपमा जाका ॥

प्रेम मगन सब भई अलीगन छबि विलोकि दुलहा का

विन ही मोल विकानी सखि सब जातन हँसि २ ताका ॥

जानकि जीवन रूप अनूपम शेशहु वर्णत थाका ॥

❀ बनरा पद ४४६ ❀

लाल तेरी मृदु मुसकनि में टोना ।

बांकी भौंह अनोखी चितवन अति प्यारी तिरछोना ।

बावरि भई छबी अवलोकत लोक लाज धरि कोना ॥

रैन दिवस सुधि बिसरत नाहीं भूल्यो निशि का सोना ।

श्याम सरोज वदन अति सुन्दर रतिपति को मद छीना ॥
मधुर मनोहर छबी दिखा के युवतिन चित्त चोरौना ।
जानकि जीवन रूप लुभाके भूल गई निज भवना ॥

❀ बन्ना पद ४४७ ❀

आज दोउ व्याह उमंग भरे ।
मौर मौरि की शोभा अनुपम जगमग जोति करे ।
श्याम अङ्ग पर पीत बसनवां द्युति दामिनि निदरे ॥
कुन्डल ललित कपोलन परसत मोतिन माल गरे ।
मृदु मुसकानि माधुरी मूरति वर्णन कौन करे ॥
विबुध सुमन वर्षावत हर्षत जय जय ध्वनि उचरे ।
जानकि वल्लभ जनक लली संग रति पति मान हरे ॥
जानकि जीवन रूप लखे बिन मन नहिं धीर धरे ॥

❀ झांकी पद ४४८ ❀

दोउन की छबि पर बलि बलि जइये ।
युगल रूप की ललित लुनाई निरखत ही नैनन फल पइये ।
नवल माधुरी छटा निरखि के दम्पति ऊपर बलि २ जइये ॥
इतर सुगध पान दे मुख में हिय की तपनि बुझइये ।
जानकि जीवन शरण छाड़ि के अनत कतहुँ नहिं जइये ॥

❀ गारी पद ४४९ ❀

सखि सब गावत गारी प्रभु हिय में हर्ष अपारी ।
व्यंजन विविधि परोसत हर्षत कंचन थार संवारी ॥

मालपुआ तस्मई इमर्ती घेवर और सोहारी ।
सोहन पपड़ी पूड़ी कचौड़ी दाल सेव रुचि कारी ॥
कटहल परवल सेम करेला भांति भांति तरकारी ।
षटरस व्यंजन विविधि भांति के स्वाद भेद गुनकारी ॥
जेवत रघुवर स्वामिन के संग हिय में मोद अपारी ।
व्यंग वचन कहि २ सखि पूछत कहिये लाल विचारी ॥
भूपत गोर मातु सब गोरी रूप चन्द्र उजियारी ।
तुम कस भये सांवरे लालन श्री अवधेश विहारी ॥
शान्ता बहिन तुमारी सुनियत नव यौवन मतवारी ।
पर उपकार संत सेवा में बढ़ी चढ़ी अति भारी ॥
शृङ्गी रिषि तपसी के ऊपर दियो सु तन मन वारी ।
बनी नारि नव रंग रंगीली ऐसी हैं गुन वारी ॥
तुम रघुवंश अदागी सुनियत यह अचरज अति भारी ।
मधुर सुधारस भरे व्यंग सुनि हर्षी सिय सुकुमारी ॥
जानकि जीवन सुनि २ हर्षत ससुरारी की गारी ॥

❀ गारी पद ४५० ❀

जेवन बैठे जुगल रूप वर हँसि २ सखी पवाती हैं ।
मन्द २ मुसकाइ विनय करि दम्पति सों बतराती हैं ।
कनक थार में व्यंजन अगणित परसि २ हर्षाती हैं ।
विविधि भांति पकवान मिठाई निजकर कज पवाती हैं ॥
रूप अनूपम निरखि २ के बिन ही मोल बिकाती हैं ।

प्रेम सुधारस भरे व्यंग कहि मन के मोद बढ़ाती हैं ॥
अति गुन वारी मातु तुमारी खीर खाय सुत जाती हैं ।
दुइहैं गौर श्याम दुइ लालन यह अचरज दर्शाती हैं ॥
औरो एक बात अति रुचिकर सुन्दर तुम्हें सुनाती हैं ।
शान्ता बहिन तुमारी सुनियत नित शृङ्गार बनाती हैं ॥
भक्ति भाव में बढ़ी चढ़ी अति तपसिन के घर जाती हैं ।
औरो एक अनोखी उनकी तुमको कथा सुनाती हैं ॥
तुमरे बहनोई शृङ्गी रिषि यह अचरज जिय लाती हैं ।
तुम रघुवंश अदागी रघुवर ताते याद दिलाती हैं ॥
झूठ सांच तुम जानहु प्यारे सुना सो तुमहिं सुनाती हैं ।
जानकि जीवन अवध छैल पर सखि सब बलि २ जाती हैं ॥
श्याम बने की छवि के ऊपर वारि वारि पी जाती हैं ॥

❀ गारी पद ४११ ❀

रघुवर जेंवत जानि महल में हँसि २ सखियां बोली जी ।
सुनहु प्राण धन जीवन सबके बात हमारी थोरी जी ॥
तुम लालन कस भये सांवरे माय बहिन सब गोरी जी ।
सब गुनवारी मातु तुमारी पतिवरता नहिं थोरी जी ॥
औरो बात अनोखो सुनिये पूरी चहै अधूरी जी ।
शांता बहिन तुमारी प्यारी भाव भगति में पूरी जी ॥
बाबा जी के संग में डोलत लाज शरम धरि दूरी जी ।
शृङ्गी रिषि बहनोई तुमरे यह राजन की छोरी जी ॥

तुम रघुवंश अदागी यद्यपि बहिन को नाहिं सबूरी जी ॥
प्रेम सुधारस भरे व्यंग सुनि सिया जू हँसि मुख मोरी जी
जानकि जीवन रुचि सों जीवत हिय में उमंग न थोरी जी ॥

❀ गारी पद ४५२ ❀

सखि सब गावत गारी रघुनाथ कुंवर के ।
जेवन बैठे चारो भइया संग में जनक दुलारी ॥रघु०॥
अलि हर्षाय बुलाय उमंग भरि मधुर सुबैन उचारी ॥रघु०॥
पिता तुमारे दशरथ सुनियत अरु अगणित महतारी ॥रघु०
जनक नगर के भूप अनेकन मइयन के अधिकारी ॥रघु०॥
दीजे एक २ सबही को होय सुयश विस्तारी ॥रघु०॥
औरो बात अनोखी सुनियत अति सुन्दर रुचिकारी ॥रघु०॥
परम मनोहर बहिनी तुमरी शान्ता नाम कुमारी ॥रघु ॥
ज्ञानी ध्यानी मुनी तपस्वी सबको हैं अति प्यारी ॥रघु०।
समय पाय शृङ्गी रिषि के संग बनी है प्रेम पुजारी ॥रघु०॥
तुमरे घर की चाल अनोखी वेद पुरान पुकारी ॥रघु ॥
जानकि जीवन हँसि २ जेंवत विबुध करत जयकारी ॥रघु०।

❀ जेवनार पद ४५३ ❀

जेवत जनक दुलारी रघुनाथ कुंवर संग ।
हेम थार में कनक कटोरन अगणित सौज संवारी ।
बहु मेवा पकवान मिठाई पूरी पुवा सोहारी ॥
साग मुरब्बा खट रस व्यंजन छप्पन भोग सुधारी ।

रुचि सों जेवत लली मिलि सखि सब गावत गारी ॥
सुनिये प्राण प्रिय रघुनन्दन रुचिकर बात हमारी ।
अवधनगर की रीति अनोखी विधि करतब से न्यारी ॥
खीर खाइ पैदा सुत करती तव गुनज्ञ महतारी ।
अलबेली है बहिन तुमारी अतुल रूप गुनवारी ॥
भक्ति भाव में सबसे आगे प्रेम की बनी पुजारी ।
शृङ्गी रिषि की सेवा करती सब प्रकार रुचिकारी ॥
वेद पुराणन गाय २ तब सुयश कियो विस्तारी ।
परम मनोहर मधुर व्यंग सुनि सखी हँसत दे तारी ॥
जानकि जीवन छबि के ऊपर कोटि मदन रति वारी ।
बना बनी की जोड़ी लखि के विबुध करें जयकारी ॥

❀ कलेऊ पद ४५४ ❀

दम्पति कुंवर कलेऊ कीजै ।
ललित सु ओदन मेवा मिश्री,
उड़त सुगन्ध न वरणि सकीजै ।
वासमती केशरिया चावल मन,
भातो घृत बूरा लीजै ॥
कंचन थार कटोरा अगणित,
व्यंजन बहु क्या उपमा दीजै ।
निजकर ग्रास बनाइ हर्षि हिय,
जानकि वल्लभ मुख में दीजै ॥

सखिगन गारी गावत हर्षत,
आनन्द सिन्धु में गोता लीजै ॥
मन्द मन्द मुसकान दोउन की,
परसि कपोल बलइया लीजै ।
जानकि जीवन दर्शन करि के,
मन के सफल मनोरथ कीजै ॥

❀ श्रीहनुमत पद ४५५ ❀

राम प्रसादी पावो पवन सुत ।
जो जो भोग लगो सियवर को सो सबही अपनावो ।
मालपुवा तस्मई इमर्ती मोहन भोग सुहावो ॥
फल मेवा अरु मोदक कुदसों अति सुख सों सरसावो ।
भक्तन को वांछित फल देकर दुख दारिद्र नशावो ॥
जानकी जीवन प्रसाद लेकर मन की आस पुरावो ॥

❀ झूला पद ४५६ ❀

सखियन संग मुसकात हिंडोरा झूलैं ।
गोर श्याम दोउ रूप मनोहर शोभा किमि कहि जात ।
सिय को वदन विलोकत रघुवर आनन्द उर न समात ॥
कनक भवन हिंडोल कुञ्ज की अद्भुत छबि दरसात ।
झोंक बढ़ावत अलिगन गावत कोकिल कन्ठ सुहात ॥
घन दामिन वर वरन जुगल छबि रति पति कोटि लजात ।

जय धुनि पूरि रही नभ ऊपर सुरतिय हिय हुलसात ॥
पुनि २ सुमन बृष्टि भरि लावत सुख नहिं बरनि सिरात ।
जानकी जीवन झाँकी वर्णत शारद हू सकुचात ॥

❀ झूला पद ४५७ ❀

आज दोऊ उमंगि २ झूलैं ।
कदम की डारी परो हिंडोरा सरजू जी के कूलैं ।
जानकि वल्लभ जनक नन्दिनी दोऊ सुख की मूलैं ॥
बिजली चमकत मेहा वर्षत कोयल करत किलोलैं ।
सखि सब गावत झोंक बढ़ावत देह गेह सुधि भूलैं ॥
सोह नवल तन ललित लुनाई सुन्दरता की मूलैं ।
विबुध विमान चढ़े हिय हर्षत पुनि २ वर्षत फूलैं ॥
जानकि जीवन झांकी बांकी हरत हिये की शूलैं ॥

❀ झूला पद ४५८ ❀

निरखो छबि प्यारी सखियन संग,
हिंडोरा में सिया राम विराजे छे ।
बहे त्रिविधि पवन पुरवाई बहु लता वितान सुहाई ।
हँसि २ दोउ गलबहियां डार के झूलन की झोंक बढ़ावे छे ।
तन गोर श्याम छबि छलके ज्यों छन २ दामिन दमके ।
प्यारी मन्द २ मुसकान पै रति पति शरमावे छे ॥
सखियां सब हिल मिल गाती कोकिल को कंठ लजाती ।

मन मोहनि मूरति देखिके सब बिन ही मोल बिकावे छे ।
प्रिय भीने वसन संवारी सिय सोह नवल तन सारी ।
आलिंगन रूप विलोकि के मन में बहु मोद बढ़ावे छे ॥
दम्पति की अमित लुनाई कोऊ वर्णि पार नहिं पाई
जानकि जीवन झांकी देखि के आनन्द नहिं हिये समावे छे॥
हिंडोरा में सिय राम विराजे छे ॥

❀ पद ४५९ ❀

भजु मन सिया सहित रघुवीर ।
क्रीट मुकुट मकराकृत कुन्डल कर सोहै धनु तीर ।
ललित कपोल चिबुक अति प्यारी सुन्दर श्याम शरीर ॥
मृदु मुसकानि छबी दिखला के हरत हिये की पीर ।
जानकि जीवन रूप लखे बिन मनुआ धरत न धीर ॥

❀ फूल बंगला पद ४६० ❀

लखो सुमनों के बंगला में अतुल अनुपम सु जोड़ी है ।
मनोहर मोहनी मूरत सु रति पति की लजोरी है ॥
हैं पुष्पों के वसन भूषन मुकुट अरु चन्द्रिका कुन्डल ।
सुमन की सहचरी सोहें सु सुन्दरता न थोड़ी है ॥
है चलते ललित फव्वारे लतायें हरित लहराती ।
बनी है पुष्प की क्यारी सु कलियां भी खिलोरी है ॥
श्री रघुबर ने प्रिया जू का किया श्रृंगार रचि रचि के ।
अमित सखियां सिया के संग पिया के चित को चोरी है ॥

छबी ए जानकी जीवन करेगा क्या कवी वर्णन ।
छटा अवलोकि शारद की भई सुधि बुधि सो भोरी है ॥

❀ झूला पद ४६१ ❀

हिंडोरे झूलत दोउ सरकार ।
लली लाल दोउ पगे प्रेम में रूप अनूप अपार ।
हँसि २ पेंग बढ़ावत हर्षत गावत राग मलार ॥
विजन लिये ठाढ़ी वनिता बहु सुखमय करत बयार ।
श्याम गोर सुखधाम मनोहर शोभा सुख के सार ॥
मृदु मुसकान माधुरी मूरति नैन नवल रतनार ।
लीजे निरखि नयन भरि जोड़ी करि तन, मन बलिहार ।
जानकि जीवन झांकी अनुपम रतिपति लाजनि हार ॥

❀ फूलबंगला पद ४६२ ❀

किये शृङ्गार पुष्पों के जुगल वर आज बैठे हैं ।
सिया के संग में रघुवर रसिक सिरताज बैठे हैं ॥
बना सुन्दर सुमनि का है सुबंगला मध्य सिंहासन ।
सुसजधज के सखिन के संग दोउ सरकार बैठे हैं ॥
अनूपम माधुरी जोड़ी करेगा क्या कवी वर्णन ।
छटा लखि के सुदम्पति की मदन रति हार बैठे हैं ॥
हरषि कर देवगन हिय में लगाते झरि प्रसूनों की ।
छबी लखि जानकी जीवन मुदित मन आज बैठे हैं ॥

❀ गजल झूलन पद ४६३ ❀

प्रीतम प्रिया की झूलन दिल में समा रही है ।
अद्भुत अनूप झांकी वर्नी न जा रही है ॥
तन गौर श्याम साड़ी शोभा सु अङ्ग की ।
भूषण जड़े नगों की छबि जगमगा रही है ॥
दोउ दिशि खड़ी अलीगन हँसि २ झुलावती ।
मुख कंज को निरखि के आनन्द पा रही हैं ॥
झुक २ लला लली जू झोंका बढ़ावते ।
बरजोरी चित की चोरी बरनो न जा रही है ॥
होवो न दृग से न्यारे ऐ जानकी जीवन ।
करजोर सारी सखियां विधि से मना रही हैं ॥

❀ गजल फूलबंगला पद ४६४ ❀

गजब की झांकी बनी प्रिया की,
सु छबि पै प्रीतम लुभा रहे हैं ।
निरखि २ मुख मयंक शोभा,
न फूले हिय में समा रहे हैं ॥
वसन विभूषण विविधि भांति के,
सु क्रीट अरु चन्द्रिका मनोहर ।
सुमन के बंगला में बैठे प्रियवर,
रती पती को लजा रहे हैं ॥
चलत फुहारे सु इत्र बारे,
त्रिविधि समीरै बहार दारे ।

सखिन के संग में सु प्यारी प्रीतम,
अनोखी शोभा बढ़ा रहे हैं ॥
विवुध सुमन की झरी लगाकर,
हैं जय २ कहते प्रसन्न होकर ।
रसिक जनन के अनन्द दाता,
सभी के चित को चुरा रहे हैं ॥
अतुल अनूपम महान शोभा,
निरखि के शारद ने चुप है साधी ।
ए जानकि जीवन छटा निरखि के,
सभी मुदित मन बिका रहे हैं ॥

❀ विनय पद ४६५ ❀

नाथ मेरी करनी चित न धरो ।
महा मलिन क्रोधी अरु कामी अघ अवगुननि भरो ।
जेते पतित प्रभू तुम तारे सब से बढ़ो चढ़ो ॥
मो समान पापी नहिं जग में नामी निलज खरो ।
दीन दयाल प्रणत जन पालक वेदन गान करो ॥
अधम उधारन नाम तिहारो मोको क्यों निदरो ।
जानकि जीवन सकल आस तजि तेरे द्वार परो ॥
चरण कमल पद पंकज की रज दे भव पार करो ॥

❀ झांकी पद ४६६ ❀

कुछ जादू सा है भरा हुवा सिय प्यारी तेरे नयनों में ।

रघुनन्दन सदा बिकाने हैं इन चञ्चल दृग की सयनों में ॥
अनियारे लोचन रतनारे खंजन दृग के लाजनिहारे ।
मृगनैनी अगणित लाजि रहीं सिय प्यारी तेरे नयनों में ॥
मुखकंज मनोहर सुन्दर है समता का नहिं भू ऊपर है ।
बिन मोल लिया है प्यारे को सिय प्यारी तेरे नयनों ने ॥
करते प्रभु ध्यान सिया जू का लेते हैं नाम सिया जू का ।
तन मन सब अर्पण करते हैं सिय प्यारी तेरे नयनों में ॥
छबि जानकि जीवन प्यारी जीवन धन प्राण हमारी ।
निशदिन प्यारे हैं पगे हुये सिय प्यारी तेरे नयनों में ॥

❀ पद ४६७ ❀

राघव कैसे हैं तेरे नयनवां ।
मद के भरे मनोहर प्यारे अनियारे सोहनवां ।
जाके लगे हिये विच कसके सुधि नहिं रहे भवनवां ॥
वदन मयंक नासिका मोती श्रुति कुन्डल झलकनवां ।
भृकुटि बंक चितवनि मन हारी तापर मंद हँसनवां ॥
अङ्ग अङ्ग की अनुपम शोभा शेष न वरणि सकनवां ।
सुखदायक श्री सिय स्वामिन के मंगल मोद निधनवां ॥
जानकि जीवन छबी के ऊपर लाजत कोटि मदनवां ॥

❀ झांकी पद ४६८ ❀

लखो प्यारी सखिन के संग सिय प्यारी हमारी हैं ।
कि जिनका कंज मुख लखि के बिके राघव बिहारी हैं ॥

नवल तन गोर सारी श्याम की शोभा अनूपम है ।
वसन भूषण छबी न्यारी जगामग जोति भारी है ॥
करोड़ों काम लज्जित हैं सुघरता देखि प्यारे की ।
सिया समता में नहिं कोई जगत में खोजि हारी है ॥
वदन सुन्दर मनोहर है सु श्यामा श्याम दोउन का ।
अजब घन दामिनी जोड़ी स्वयं विधि ने संवारी है ॥
करेगा क्या कवी वर्णन छटा बांकी सु झाँको की ।
कि जिनके गुन को गा गाकर स्वयं शारद ही हारी है ॥
मनोहर माधुरी मूरति निरख लो जानकी जीवन ।
विवुध चढ़ चढ़ विमानों से सु जय की धुनि उचारी है ॥

❀ विनय पद ४६६ ❀

श्रीराम प्यारे नयनों के तारे बनो हमारे तो हम भी जाने ।
अनेक जोनी में भटकता व देव देवी के सर पटकता ।
तेरे ही द्वारे पड़ा हूं आकर हमें उधारो तो हम भी जाने ॥
न हममें साधन न हममें भक्ती है सिर्फ विषयों में अनुरक्ती ।
दया दिखाकर अनेक तारे हमें भी तारो तो हम भी जाने ॥
रिषी की नारी को तुमने तारा व गीध गनिका को ही उबारा ।
अब हमसे करते हो क्यों किनारा हमे उबारो तो हम भी जाने
हो भक्त वत्सल तुम्हीं कहाते व दीनजन के हो काम आते ।
है पाप पुंजों को तुमने जारा हमें सुधारो तो हम भी जाने ॥
सु करम धरमों से थक चुका हूं तुमारे पनको भी सुन चुका हूं ।

हे जानकी जीवन दुखों के हारी,
हमे निवारो तो हम भी जाने ॥

❀ झांकी पद ४७० ❀

घुसा है आके दिल अन्दर जो खुद दिलवर कहाता है ।
न कोई जिसकी शानी का जमाने में दिखाता है ॥
नजर जिसकी अनूठी है दिवाना ही बना देता ।
लगाता चोट चश्मों की न दिल में दर्द आता है ॥
है भृकुटी वंक चितवन भी व मुसकन मन्द मनहारी ।
जरा सा देखता जिसको तुरन्त पागल बनाता है ॥
तड़पता हूँ सिसकता हूं जरा भी गम नहीं उसको ।
मैं रोता हूँ वो हँसता है जरा नहिं तरस आता है ॥
करूं वर्णन कहां तक मैं दशा ए जानकी जीवन ।
किया है बस में जब उसने तो रस्ता अब बताता है ॥

❀ विनय पद ४७१ ❀

प्रभू मेरी विनती क्यों न सुनो ।
भक्ती हीन महा अपराधी दोष को कोष भरो ।
महा पतित अघराशि अलायक सबसे बढ़ो चढ़ो ॥
जगत विदित पातकी प्रपंची मो सम नहिं दुसरो ।
अति लालची लबार अरु लोभी जानत जग सगरो ॥
अवगुन अमित जानि करुणा निधि काहे को निदरो ।
तुम हो कृपा सिन्धु अघ नाशक वेदन गान करो ॥

पतित उधारन नाम श्रवण सुनि तेरे द्वार परो ।
जानकि जीवन अवगुन तजि के अपनी ढरनि ढरो ॥

❀ झांकी पद ४७२ ❀

छबि निर्खत ही बेहाल किया सरकार तुमारे नयनों ने ।
कैसा जादू का काम किया सरकार तुमारे नयनों ने ॥
है भुला दिया घर वार सभी दिखलाते हो अन्दर बाहर ।
बिन देखे पड़ता चैन नहीं बेजार किया है नयनों ने ॥
घुंघराली जुल्फें काली हैं नागिन सी मानो पाली हैं ।
जबरन ही चित को चोर लिया सरकार तुमारे नयनों ने ॥
आसा इक दिलवर मिलने की परवाह नहीं मर जाने की ।
जानकि जीवन बदनाम किया कजरारे तेरे नयनों ने ॥

❀ विनय पद ४७३ ❀

किशोरी जी अर्ज एक सुनि लीजे ।

हूं तव कृपा रूप की प्यासी दे दर्शन सुख दीजे ।
तेरी चरण कमल रज चाहत कृपा दया अब कीजे ॥
हूँ यद्यपि सब भांति अपावन अघ अवगुनहिं हरीजे ।
प्रीति प्रतीत नहीं कछु मेरे सो चित में नहिं दीजे ॥
जानकि जीवन शरण राखि के अपनो विरद रखीजे ॥

❀ पद ४७४ ❀

मन तू क्यों नहिं राम सुमिरता ।

मेरी तेरी करता २ तू दिन रैन भरमता ।
पातक पुंज सभी नस जाते आनन्द सिन्धु उमड़ता ॥
खल कामादि निकट नहिं आते प्रेम प्रमोद उभरता ।
प्रति दिन नाम सुधारस पीकर कालहु ते नहिं डरता ॥
पाप ताप से रीता होकर सुयश सुकृत से भरता ।
जानकि जीवन हिये बसाकर जन्म सुफल तू करता ॥

❀ विनय पद ४७५ ❀

प्रभू मेरे अवगुन चित न धरो ।
तुम अंसी हम अंस तुमारे यह सम्बन्ध बड़ो ।
मैं हूँ मलिन महा अपराधी दोष को कोष भरो ॥
गनिका गीध अजामिल तारे सो कछु ख्याल करो ।
पाप खानि जिय जानि नाथ मोहि काहे दूरि करो ॥
पूजा पाठ ध्यान नहिं जानू तेरो ही आसरो ।
कृपा कटाक्ष विलोकनि चाहत पद पंकज में डरो ॥
पतित उधारन नाम श्रवण सुनि मन कुछु धीर धरो ।
जानकि जीवन शरण राखिये खोटो होय खरो ॥

❀ विनय पद ४७६ ❀

किशोरी तेरो विरद जगत से न्यारो ।
भजन किये से रघुवर तारत तुम छन मांहि उधारो ।
धोखेउ नाम लेइ जो यावर तेहि तुरतहि निर्वारो ॥
करुणा कृपा दया की मूरति मुद मंगल आगारो ।

हमरी बार मौन हुइ बैठी महा अभाग हमारो ॥
आय पड़ा हूँ तेरे दर पर राखो चहै निवारो ।
जानकि जीवन शरण राखिये होय सुयश विस्तारो ॥

❀ झांकी पद ४७७ ❀

छबीले तेरी छबि पर भई मतवारी ।
जब से लखी सांवली सूरत भूल गयो घर वारी ।
अवध छैल छलिया मदमाते निरखि मोहनी डारी ॥
भृकुटी वंक सरोरुह लोचन जुल्फैं कारी प्यारी ।
कोटि मनोज लजावनि हारे प्रिय मूरति रिझवारी ॥
जानकि जीवन संग चलूंगी लोक लाज मग डारी ॥

❀ पद ४७८ ❀

रे मन क्यों न हरी को भजता ।
तजि कुसंग करि संग साधु को दोनों लोक सुधरता ।
बड़े भाग्य मानुष तन पायो व्यर्थ वाद क्यों करता ॥
पाप गठरिया सिर पर लेकर योंहीं मरता फिरता ।
शील सिन्धु गुन धाम राम को एको पल न सुमिरता ॥
जानकि जीवन शरण में रहि के भव सागर नहिं तरता ॥

❀ विनय पद ४७९ ❀

नाथ मोहिं भव से पार करो ।
आगम निगम पंथ बतलायो सो नहि समुझि परो ।

मानी कुटिल मन्द मति कामी अघ अवगुननि भरो ।
काम क्रोध मद लोभ आदि से हृदय विकार भरो ॥
पतित से पतित अनेकन तारे मोते का विगरो ।
जानकि जीवन विरद श्रवण सुनि हिय में धीर धरो ॥

❀ झांकी पद ४८० ❀

लखि बांकी श्याम सुरतिया हो,
नहिं चैन परे दिन रतिया ।
छबि अवलोकत भई बावरी बोलि न आवत बतिया ।हो०
बैठे कनक भवन सिंहासन बाम भाय सिय लसिया ॥हो०
रूप माधुरी मन को मोहत तापर नैन की गंसिया ।हो०
चारु कपोल चिबुक अति सुन्दर मन मोहनी सुरतिया ॥हो०
जानकि जीवन छबि अवलोकत फँसी प्रेम की फंसिया ॥हो०

❀ पद ४८१ ❀

भजु मन राम नाम सुखदाता ।
सुमिरन करत बढ़त सिय पद रति होत भुवन विख्याता ।
दुख दारिद्र निकट नहिं आवत सुख सम्पति अधिकाता ॥
अविरल प्रेम भक्ति को पाकर पातक पुंज नसाता ।
सकल विघ्न दुरिजात तुरत ही आनन्द सिन्धु समाता ॥
जानकि जीवन छटा अनूपम हिय के माहि बसाता ॥

❀ विनय पद ४८२ ❀

प्रभू मैं पतितन का सरदार ।

हंसि २ पाप करत निशि वासर लाज शरम दई डार ।
हरी भजन में मन नहिं लागे अकरम को तैयार ॥
ऐतेहु पर तव दास कहावत ऐसो निपट गँवार ।
अधम उधारन नाम तिहारो कर दो भव से पार ॥
जानकि जीवन निलज जानि के लीजे मोहिं उबार ॥

❀ झांकी पद ४८३ ❀

क्या अद्भुत अनुपम शक्ती है सरकार तुमारे चरनों में ।
इससे मेरी अनुरक्ती है सरकार तुमारे चरनो में ॥
पाषाण कुलिश तर जाता है तव पदरज के लग जाने से ।
हो नारि विनय करने लगती सरकार तुमारे चरनों में ॥
अपराधी अघी अलायक हो पद पंकज का स्पर्श करे ।
वह स्वच्छ तुरत हो जाता है सरकार तुमारे चरनों में ॥
गनिका गजगीध अजामिल को तुमने ही तो अपनाया है ।
मैं पतित हूं उनसे बढ़ा चढ़ा सरकार तुमारे चरनों में ।
तुम मेरे हो मैं तेरा हूँ सम्बन्ध अनेकों जन्मों का ।
जानकि जीवन अपना लीजे सरकार तुमारे चरनों में ॥

❀ विनय पद ४८४ ❀

नाथ मैं अधमन में सरनाम ।

सुर दुर्लभ मानुष तन दीनों सो खोयो बेकाम ।
विषय वासना में लपटानो भये मोहिं विधि बाम ॥

कहं लगि कहौं कुचालि कृपानिधि अन्तर्यामी राम ॥
दीन दयाल प्रणत जन पालक आगम निगम बखान ।
गनिका गीध अजामिल आदिक गये तिहारे धाम ।
पापिन का शिर मौर नाथ मैं ऐसो निपट निकाम ।
जानकि जीवन शरण राखिये तेरा रहूँ गुलाम ॥

❀ विनय पद ४८५ ❀

किशोरी तेरे पदरज की इक आस ।
शिव ब्रह्मादिक ध्यान करत नित जानत सुख की राशि ।
तेरे पद को ध्यान किये ते राम न छोड़त साथ ॥
सिय जू कृपा दया की मूरति श्रुति पुराण विख्यात ।
होत प्रकाश हिये के भीतर तिमिर न आवत पास ॥
चरन कमल स्पर्श किये ते पातक पुंज नशात ।
रिद्धि सिद्धि जी साथ न छांड़त दुख दरिद्र नशि जात ॥
जानकि जीवन शरण में रहि के भवदुस्तर तरि जात ॥

❀ विनय पद ४८६ ❀

कर जोर नाथ तुमसे यह दीन कह रहा है ।
पापों का बोझ सिर पै बेचैन हो रहा है ॥
कपटी कुटिल महा हूँ चरणों में पड़ रहा हूं ।
सुधि लोगे कब हमारी नित बाट जो रहा है ॥
हूं मैं महा अधर्मी कीनी न कुछ भी कर्नी ।

पापों को जान अपने लाचार हो रहा है ॥
अतिशय मलीन मन हूँ लोभी महा कृपन हूं ।
स्वामिन सिया हमारी कुछ धैर्य हो रहा है ॥
पाषाण विटप तारे गजराज को उबारे ।
होगी सुनाई मेरी विश्वाश हो रहा है ॥
जानकि जीवन तिहारे आकर पड़ा हूं द्वारे ।
पद कंज के सहारे निश्चित हो रहा है ॥

❀ पान का पद ४८७ ❀

बैठ पावत पान जुगलवर ।
निज कर देत अली अलबेली दम्पति रूप लुभान ।
मृदु मुसकानि विलोकत छिन २ अतर करावत घ्रान ॥
सेवा सौज लिये सखि ठाढ़ी तन मन वारत प्राण ।
दे गलबांही दोऊ हर्षत एक पे एक बिकान ॥
जानकि जीवन ललित लुनाई लखि लाजत रति काम ॥

❀ विनय पद ४८८ ❀

अधमों को तारते हैं ऐसा जो सुन लिया ।
अगणित अघों को मैंने भर पेट कर लिया ॥
तुम हो अधम, उधारन, आगम निगम कहे ।
तब से हृदय में मैंने विश्वाश कर लिया ॥
शिरमोर पापियों का फिर भी अभी ना कम हूँ ।
पापी से पापियों को भव पार कर दिया ॥

होगा सुयश तुमारा ये जानकी जीवन ।
ऐसे निलज अधम का उद्धार कर दिया ॥

❀ विनय पद ४८९ ❀

तनक हँसि हेरो हो मम जीवन प्राण अधार ।
हम सब सुधा रूप की प्यासी सुनिये श्री सरकार ।
कृपा कोर से अपना लीजैं सिय स्वामिन भर्तार ॥
पूजा पाठ जोग जप संजम सब ही दिया बिसार ।
दीन दयाल प्रणत जन पालक दशरथ राज कुमार ॥
रूप अनूपम निरख तिहारो हम सब भई निसार ।
जानकि जीवन निठुर बनत क्यों मनमोहन सरदार ॥

❀ विनय पद ४९० ❀

सिया जू मेरी अब तो कृपा करो ।
निज कर्मन भव सिन्धु परो मैं इत उत भटकि मरो ।
विषई मलिन महा अपराधी सो उर में न धरो ॥
अधमी अघी अनेकन तारे यश जग में वगरो ।
मेरी समता को नहिं दूजो पापी बढ़ो चढ़ो ॥
पतित उधारन नाम तिहारो सो कछु ख्याल करो ।
पाप खानि जिय जानि स्वामिनी काहे को निदरो ॥
जानकि जीवन शरण राखिये जो हों सो तुमरो ॥

❀ झांकी पद ४९१ ❀

दोऊ की छबि पै जाऊं बलिहार ।

एक तो श्याम काम शत लाजत दूजे शुठि सुकुमार।
तीजे सिया बनी अलबेली रती लजावनि हार॥
मुकुट चन्द्रिका शीशन राजत जगमग जोति अपार।
विविधि भांति के वसन बिभूषण शोभा अमित अपार।
एक से एक छवी दम्पति की सुख के हैं आगार।
जानकि जीवन हिये बसालो मन मोहन सरकार॥

❀ विनय पद ४९२ ❀

जो पापी से रघुवर तू डरता रहेगा।
तेरा नाम फिर कौन लेता रहेगा॥
जो मुझसे अघो को निदरते रहोगे।
तेरे द्वार फिर कौन आता रहेगा॥
तुम्हीं हो हमारे ए संसार कहता।
बना लीजे अपना तो नाता रहेगा॥
गज गीध गनिका अजामिल को तारा।
न मानो सुयश तेरा जाता रहेगा॥
अगर मुझसे अधमी अलायक को तारो।
तो तू दीन बन्धू कहाता रहेगा॥
मैं सभी द्वार तजकर तेरे द्वार आया।
तू दर २ की ठोकर खिलाता रहेगा॥
लीजे शरण जानकि जीवन को जल्दी।
तो तेरा सुयश विश्व गाता रहेगा॥

❀ झांकी पद ४६३ ❀

राधे बिहारी लगी तुमसे यारी ।
सांवलि सूरत माधुरि मूरति जीवन प्राण हमारी ।
ललित कपोल चिबुक अति सुन्दर तापर जुल्फे कारी ॥
भृकुटी बंक नयन रतनारे मृदु मुसकनि वश कारी ।
बिन छबि देखे कल न परत मोहि कोटि जतन करि हारी ॥
बिन ही मोल बिकानी तुमपै लोक लाज तजि डारी ।
रूप दिखा के सैन चला के मोहिं बावरि करि डारी ॥
जानकि जीवन संग लीजिये तुम जीते मैं हारी ॥

❀ झांकी पद ४६४ ❀

झांकी ललित मनोहर वर्नी न जा रही है ।
प्रीतम प्रिया की मुसकनि मन को लुभा रही है ॥
शोभित बसन विभूषण हीरा जड़ित मनी के ।
सुन्दर वदन मनोहर छबि जगमगा रही है ॥
सूरत सलोनी प्यारी अद्भुत छटा की बांकी ।
सिय जू नवल नबेली शोभा बढ़ा रही है ॥
दम्पति सखिन के संग में बैठे प्रमोद बन ।
कोकिल मयूर की धुनि चित को चुरा रही है ॥
छबि यह जानकी जीवन वर्णन करेगा कौन ।
प्यारी अनूप सूरत दिल में समा रही है ॥

❀ आरती पद ४६५ ❀

आरती करो रसिक वर की ।

श्याम सुन्दर की करो रघुवर की करो,
धनुधर की करो सियवर की ।
वदन छबि कोटि मदन मोहे,
वसन दामिनि की दुति सोहै ।
सु मुक्ता माल गले सोहै,
सु जगमग जोती दिनकर की ॥
आरती करो रसिक वर की ॥
कोऊ सखि लिये चंवर दुरती,
मुदित मन नृत्य गान करती ।
कन्ठ कोकिल लज्जित करती,
ध्वनी प्रिय यन्त्र अनेकन की ॥
विबुध तिय मोद हिये भर्ती,
सुमन की बृष्टि करें हर्षी ।
मनोरथ सुफल सभी करती,
कहैं जय जानकि जीवन की ॥

❀ झांकी पद ४९६ ❀

सांवरिया मुसकानि लखो सखि ।
ललित कपोल चिबुक अति सुन्दर अनियारे नैना बान ।
अधर अरुण चितवनि मनहारी शोभा सुख की खानि ॥
श्याम सरोज वदन अति सुन्दर मर्दत मैंन को मान ।
उर मनिमाल पीत पट राजत गहनन की झमकान ॥

घन दामिन वर वरण जुगल छबि मुद मंगल की खानि ।
जानकि जीवन झांकी वर्णत शारद हू सकुचान ॥

❀ झांकी पद ४९७ ❀

शोभा सुख की खानि सिया मोरी ।

खंजन दृग अंजन युत शोभित चितवनि ललित महान ।
निरखि लुनाई सुन्दरताई रमा रती सकुचानि ॥
कोटिन मृग नैनी पिक बैनी करति निछावरि प्रान ।
रूप मनोहर सिय स्वामिन को निर्खत श्याम सुजान ॥
जानकि जीवन वश करि लीनी मन्द मन्द मुसकान ॥

❀ झांकी पद ४९८ ❀

लखो सखि जुगल रूप सुख धाम ।

श्याम गौर सुकुमार मनोहर एक से एक ललाम ।
सुन्दर चिबुक नासिका मोती मन्द मन्द मुसकान ॥
भृकुटी बंक कमल दल लोचन शोभा छबि सु महान ।
अतुल अनूपम सकल अङ्गछबि लखि रतिपति सकुचानि
दर्शन करत सकल अघ नाशत पूरन होत सु काम ।
इनकी समता का इस जग में मिला न कोई आन ॥
जानकि जीवन छबि के ऊपर करो निछावर प्रान ॥

❀ झांकी पद ४९९ ❀

जादू भरी मुसकानि सांवरिया की ।

अधरन की अरुनाई सुन्दर दशनन कान्ति महान ।
अनियारी कजरारी अँखियां धरी मयन की शान ॥
मधुर मनोहर मूरति लखि के तन की सुधि बिसरानि ।
अवध छैल छलिया निर्मोही करत न नेकौ कानि ॥
विवश भई सखि लखि सुघराई सुधि नहिं सांझ बिहान ।
चितवनि में चित चोरत सजनी मन्त्र वशीकर जान ॥
जानकि जीवन छबि के ऊपर बिन ही मोल बिकान ॥

❀ पद ५०० ❀

सिय जू को सजनवां बड़ो रगरी ।
झूलन झोंक बढ़ावत हँसि २ सिर से सरकावत चुनरी ।
वेदर्दी रघुनन्दन छैला अति सुकुमार सिया हमरी ॥
भूषण खसत सखी तब हर्षत लपकि झपकि पिय कर पकरी ।
जानकि जीवन प्रेम भरे दोउ गलबहियां दै अङ्क भरी ॥
देव सुमन वर्षावत हर्षत सुरतिय निरखत मोद भरी ॥

❀ झांकी पद ५०१ ❀

नोकें हैं तीखी जहरीली सरकार तुमारे नैनों की ।
कुछ होश नहीं रह जाता है खा चोटें दृग के सैनों की ॥
दिन रात शिशकता रहता है चश्मो की चोटों का घायल ।
तुम ख्याल नहीं कुछ भी करते मरने या जीते रहने की ॥
दीनों के बन्धु कहा करके फिर दया नहीं कुछ कर सकते ।
मतवारे दीन दिवानों को आदतें मुसीबत सहने की ॥

है शानदार सूरत तेरी छबि दिखला वश में कर लेते हो ।
फिर खबर नहीं कुछ लेते हो बेहोश होश में रहने की ॥
है एक भरोसा तेरा ही तू रहम करी बेरहम बनी ।
प्यारी सी झलक दिखादे तू फिर चाह नहीं कुछ कहने की ॥
जानकि जीवन अंखियां उलझी सुलझाये है ताकत किस की
तू मान करे मैं अर्ज करूं हरदम तेरे खुश रहने की ॥

❀ झांकी पद ५०२ ❀

छबि निरखत ही बेजार किया सरकार तुमारे नयनों ने ।
तीखी नजरों से वार किया सरकार तुमारे नयनों ने ॥
जुल्फे घुंघराली काली है छुटी कपोलन प्यारी है ।
ऊपर से जादू डार दिया सरकार तुमारे नयनों ने ॥
अंखिया कजरारी प्यारी हैं मानो ऐ मदन कटारी है ।
घुस करके दिलमें घाव किया सरकार तुमारे नयनों ने ॥
अनियारे दृग हैं रतनारे कुलकानि लाज को तजि डारे ।
है लाखों को बीमार किया सरकार तुमारे नयनों ने ॥
जानकि जीवन के लोचन ऐ त्रैताप हरन भव मोचन ऐ ।
है कितनो को भव पार किया सरकार तुमारे नयनों ने ॥

❀ विनय पद ५०३ ❀

तेरे मिलने की खातिर जिया तरसे ।
अवध छैल छलिया निर्मोही छिप छिपके चित आकर्षे ।
तू बेपीर पीर क्या जाने रात दिना नैना वर्षे ॥

चारु चिबुक नासिका मनोहर सुन्दरता अङ्ग २ दरसे ।
मृदु मुसकानि माधुरी मूरति वैनन में अमृत वर्षे ॥
जानकि जीवन दर्श किये बिन मानो बीत गयी वरसें॥

❀ गजल पद ५०४ ❀

रघुबर है तूने मुझको क्या खूब सताया ।
मैंने निसार होकर दिल दर्द कमाया ॥
नव माधुरी विलोकि के गाफिल हुआ जो मैं ।
चश्मो की चोट देकर बीमार बनाया ॥
तेरे लिये ही मैंने दर २ की खाक छानी ।
हासिल हुवा न कुछ भी अरमान गंवाया ॥
नाजुक जिगर को तूने शानो गुमान से ।
घुंघुंराली जुल्फ जाल से है खूब फंसाया ॥
आशिक हुआ मैं तुझ पर ऐ जानकी जीवन ।
बांकी अदा के ऊपर बिन मोल बिकाया ॥

❀ झांकी पद ५०५ ❀

लखो सखि सांवरा अलबेला ।
सुन्दर वदन छबी को बर्णो अवध नगर का छैला ।
छबि निर्खत हो गई बावरी तजि धन धाम अकेला ॥
भृकुटि वंक चितवनि गर्वीली मुशकन वशी करैला ।
अङ्ग अङ्ग प्रति ललित लुनाई रति पति कोटि लजैला ॥
बिकी जानकी जीवन छबि पर लाज धरी इक गैला ॥

❀ विनय पद ५०६ ❀

सिया जू तेरे पद पंकज की आस ।
छाड़ि तुमहिं गति दूसर नाहीं सबसों भयी निरास ।
भाई बन्धू कुटुम्ब कबीला बनत हमारे खास ॥
आप बिना कोइ काम न अइहैं यह पक्का बिश्वास ।
हूं मैं कुटिल कुमारग गामी अरु पापन की राश ॥
नेम धरम नहिं कुछ भो कीनो रेन दिवस यों जात ।
तैंतिस कोटि देवता जग में केहि केहि नाऊँ माथ ॥
तन मन वचन कर्म से स्वामिन चाहित सेवा खास ।
जानकि जीवन शरण राखिये कीजै नहीं उदास ॥

❀ झांकी पद ५०७ ❀

नैना बड़े अरुझैन संवरिया के ।
जाके लगत दर्द उपजावत पलक परत नहिं चैन ।
दृगन की नोंक चुभी हिय भीतर कसकत है दिन रैन ॥
बिसरो खान पान सजनी सब बोलि न आवत बैन ।
जापर दृष्टि परै धोखेहु महं सो बिन मोल बिकैन ॥
अनियारी कजरारी अंखिया शान धरी जनु मयन ।
जानकि जीवन छबि के ऊपर लाजत कोटिक मैन ॥

❀ झांकी पद ५०८ ❀

छयलवा के देखे बिना नहिं चैन ।

क्रीट मुकुट मकराकृत कुन्डल सुन्दरता के ऐन ।
मदवारी अखियां कजरारी तापर मीठे बैन ॥
छबि अवलोकत भई बावरी पुलक गात जल नैन ।
रूप सुधा सागर में डूबी तकि तिरछोहीं सैन ॥
चितवत ही घायल करि दीनो देह गेह सुधि हैन ।
जानकि जीवन रूप लखे बिन मनुआ धीर धरैन ॥

❀ गजल पद ५०९ ❀

करजोर विनय कुछ करता हूँ सरकार तुमारे चरनों में ।
निज कर्नी पै कुछ डरता हूं सरकार तुमारे चरनों में ॥
मैं अधम नीच अपराधी हूं तव रूप सुधा का रागी हूं ।
दे दर्शन पाप नशा दीजे सरकार तुमारे चरनों में ॥
रिषि पत्नी को तुम तार दिये कितने अधमी उद्धार किये ।
उस पद रज को मैं भी चहता हूं सरकार तुमारे चरनों में ॥
तुम दीन के बन्धु कहाते हो फिर पापी से घबराते हो ।
निज विरदावली बता दीजे सरकार तुमारे चरनों में ॥
सब अधमी का सरदार बना तव द्वारे पर हूं आइ पड़ा ।
निज भक्ती को बक्शा दीजे सरकार तुमारे चरनों में ॥
जानकि जीवन कहलाते हो कुछ तर्स नहीं जी लाते हो ।
दुख दारिद सकल नशा दीजे सरकार तुमारे चरनों में ॥

❀ झांकी पद ५१० ❀

दिल लेके नयनवां मारि चले ।

सैन चलाके मृदु मुसुकाके अद्भुत जादू डारि चले ।
अवध छैल छलिया निर्मोही वश में करि अब चाल चले ॥
जुल्फ जाल में फंसा २ के विरहिन के जिय शाल चले ।
जानकि जीवन अपना लीजे सब कुछ तुम पर वारि चले ॥

❀ विनय पद ५११ ❀

सिया जू शरण मोहि रख लीजे ।
राम प्रिया जग जननि जानकी कृपा दया अब कीजे ।
महा मन्द विषई अति कामी करनी चित्त न दीजे ॥
कहां लगि कहों कुचालि आपनी पतितन में गनि लीजे ।
कृपा रूपिणी नाम तिहारो वेद पुराण भनीजै ॥
पाप खानि जिय जानि स्वामिनी अपनो विरद रखीजे ।
जानकि जीवन शरण तिहारी जस चाहे तस कीजे ॥

❀ गजल पद ५१२ ❀

तेरी अदा के ऊपर बिन मोल बिक गई ।
बचने को करी कोशिश दृग जाल फँस गई ।
मुख की सुघरता देख के अटका है मेरा दिल ।
तेरी ए जुल्फ काली जंजीर बन गई ॥
जकड़ा हुवा हूं ऐसा ना खुल सकूं कभी ।
था रूप का भिखारी सो भीख मिल गई ॥
तुमने फँसाया मुझको तो खुद ही फँस गये ।
दिल में बसो ही मेरी तकदीर खुल गई ॥

दिन रात बसो हिय में ऐ जानकी जीवन ।
खोई हुई की सम्पति सो आज मिल गई ॥

❀ विनय पद ५१३ ❀

हरी तुम क्यों नहिं कृपा करो ।
पापखानि अति नीच जानि मोहि काहे को निदरो ।
अघी से अघी अनेकन तारे मोसे का विगरो ॥
अधरम कौन छुटो है मोसे जो मैं नाहिं करो ।
पतित उधारन नाम श्रवन सुनि तेरे द्वार परो ॥
जानकि जीवन भव से तारो सब अवगुननि भरो ॥

❀ झांकी पद ५१४ ❀

सखी मेरी जीवन एक सिया ।
सिय की दया मया रघुवर की यह मैं अनुभव किया ।
कृपा रूपिणी अरु कल्याणी प्यारी जनक धिया ॥
सन्तन की यह इष्ट देवता रघुवर प्राण प्रिया ।
चितवनि चारु विलोकनि बांकी लखि लाजें सुरतिया ॥
सदा कृपा करती जन ऊपर वेदन गान किया ॥
जानकि जीवन शरण में रहि के तन मन अर्पण किया ॥

❀ गजल पद ५१५ ❀

बे दाम सभी को मोल लिया सरकार तिहारी मुसकन ने ।
कैसा जादू सा डार दिया सरकार तुमारी मुसकन ने ॥

हैं अधर अरुन सुन्दर कपोल तापर हैं बोलत मधुर बोल ।
बहुतों को है कतलाम किया सरकार तुमारी मुसकन ने ॥
अनियारे नैन नुकीले हैं रसिकन के चित को छीने हैं ।
दिल के अन्दर विश्राम किया सरकार तुमारी मुसकन ने ॥
जानकि जीवन सुख के निधान छबि परहै लाजत कोटि काम
सारे जगमें बदनाम किया सरकार तुमारी मुसकन ने ॥

❀ झांकी पद ५१६ ❀

सखी मेरे एकहि धन श्रीराम ।
जिनकी समता को दूजो नहिं नैनन को अभिराम ।
श्याम बदन सुकुमार मनोहर लाजत है रतिकाम ॥
चितवनि जादू भरी अनूपम मन्द २ मुसकान ।
चारु कपोल चिबुक अति सुन्दर रूप छबी की खानि ॥
अतुल अनूपम छटा कहै को शारद हू शकुचान ।
जानकि जीवन चित चुराके लीन्हा है बेदाम ॥

❀ गजल पद ५१७ ❀

राघव तिहारे रूप पर बिन मोल बिक गई ।
सुध बुध रही न तन की बौरी सी बन गई ॥
सुन्दर ललित मनोहर मुख चन्द आपका ।
देखी छटा अनूपम तबियत मचल गई ॥
गरबीले नैन तेरे प्यारे हैं मद भरे ।

खाकर दृगों की चोट से घूंघट खिसक गई ॥
सिर पै है क्रीट कुन्डल शोभा अतुल महान ।
पटपीत श्याम अङ्ग जनु दामिनि दमक गई ॥
सुन्दर छबी के ऊपर लज्जित है कोटि काम ।
झांकी अनूप लखिके शारद सकुच गई ॥
कहती है सुरवधू सब जय जानकि जीवन ।
प्यारी छटा विलोकि के सुख सिन्धु धँस गई ।

❀ झांकी पद ५१८ ❀

किशोरी तेरी पायल की झनकार ।
सांवरिया के मन को मोहत अति सुखमा की सार ।
शरद चन्द्र चांदनी मनोहर प्यारी को शृङ्गार ॥
प्रीतम प्यारी नृत्य करत दोउ हँसि गलबहियां डार ।
अगणित अली खड़ी अलबेली भूषण वसन संवार ॥
जुत्थ २ मिलि सखी सहेली पिय को रही निहार ।
कनक भवन श्रीराम कुंज में अलिन की भीर अपार ॥
निश दिन वर्णत शेश शारदा तदपि न पावत पार ।
जानकि जीवन अनुपम झांकी मुद मंगल दातार ॥

❀ शरद पद ५१९ ❀

सखि लखु शरद चन्द्र उजियारी ।
शान गुमान भरी पिय प्यारी रास की करत तयारी ।
अरस परस शृङ्गार करत दोउ अनुपम बदन निहारी ।

भरी उमङ्ग सखो सब निर्खत करि तन मन बलिहारी ।
कनक भवन श्रीराम कुन्ज की शोभा अनुपम न्यारी ॥
दम्पति संग अनेक शहचरी नव जोवन मतवारी ।
नाचति गावति ताल गतिन सों उर आनन्द अति भारी ॥
लली लाल की छबि के ऊपर कोटि मदन रति वारी ।
जानकि जीवन के यहि रस को जाने कौन अनारी ॥

❀ गजल पद ५२० ❀

सिया मुख कन्ज के ऊपर भ्रमर रघुवर बने रहते ।
छिनक पल भी बिलग होने की बिरहा को नहीं सहते ॥
प्रिया के प्राण रघुवर हैं व उनकी प्राण प्यारी वो ।
प्रिया के सुख में सुख माने न सुख अपना हैं वो चहते ॥
हैं करती जीव को सन्मुख कृपा की कोर से सिय जू ।
नहीं तो कर्म बन्धन में सदा ही भरमते रहते ॥
सकल गुन की हैं आकर ए कृपालू अरु दयालू हैं ।
न अवगुन मानती जनके भले अघ खानि हो रहते ॥
महा अधमी अलायक भी जो उनकी शरण हो जाता ।
ए कहती यह हमारा है तो जम भी कुछ नहीं कहते ॥
दोऊ सुख सिन्धु हैं जग में विरद भी है पतित पावन ।
भले हो पाप का भाजन उसे पावन ही कर रहते ॥
अनेकों जन्म का पापी शरण हो जानकी जीवन ।
कुकर्मी या अधर्मी हो सभी अघ को हैं ए दहते ॥

❀ झांकी पद ५२१ ❀

लखो सखि लाल की थिरकनियां ।

शरद पूर्णिमा विधु अवलोकत,
प्यारे प्यारी के सुखदनियां ।
तन घनश्याम दिय गलबांही,
सिय की द्युति दमकति दामिनियां ॥
नव सरोज लोचन रतनारे,
भृकुटी वंक सु मनहु कमनियां ॥
अङ्ग २ की अनुपम शोभा,
है रति मन्मथ कोटि लजनियां ।
रास करत दोउ भरे उमंगन,
शोभा नहिं कोउ वर्णि सकनियां ॥
प्रिया अनन्त अनन्तहिं प्रीतम,
अगणित सहचरि संग सोहनियां ।
महा रास की छबि को वर्णत,
शेश शारदा बुद्धि छकनियां ॥
जानकि जीवन हिये बसालो,
जोड़ी रसिकन की सुखदनियां ॥

❀ गजल पद ५२२ ❀

भगवान इस अधम पर दृष्टी को डार देना ।
अवगुन अमित समझकर नहिं नाथ टार देना ॥

ऐसा पतित बड़ा हूं जग में न ठांउ है ।
तुम रूठ करके रघुबर नहिं प्रभु विसार देना ॥
बहु लालची प्रपन्ची लोलुप गंवार हूं ।
पर दास हूँ मैं तेरा सो कुछ विचार लेना ॥
अघ की भरी अहिल्या पदरजसे तारी तुमने ।
उस रज को कृपा करके मुझपर भी डार देना ॥
धर्मों से हीन हूँ मैं पापों से पीन हूं ।
तुम हो अघों के नाशक पापों को जार देना ॥
अतिशय मलीन मन का दोषों का कोष हूं ।
जानकि जीवन तेरा तिसको सम्हार लेना ॥

❀ झांकी पद ५२३ ❀

राघव जी से नयनवां लड़ गये ।
अनियारे कजरारे कारे रतनारे हिय भीतर गड़ गये ।
चितवन जादू भरी मनोहर टुक निर्खत ही कामण करगये ॥
रात दिना मेहा से वर्षत मानत नहिं आपन जिद अड़ गये ।
बहुत कही बर्जी नहिं मानत दृग २ निर्खत मद से भर गये ॥
जानकि जीवन रूप अनूपम देखत ही मोहिं बावरि कर गये ॥

❀ बधाई पद ५२४ ❀

विबुध तिया गावती हैं बधाई ।
परब्रह्म अवतार मनोहर जन्म लियो रघुराई ।
सुर ब्रह्मादि सिहात मनहि मन आनन्द उर न समाई ॥

भरि २ थार सु मुक्ता मानिक हर्षित सबहि लुटाई ।
हम सब भई सुकृत की राशी गावहि गावति हर्षाई ॥
चढ़े विमान देवगन हर्षत सुमन वृष्टि झरि लाई ।
जानकि जीवन रूप विलोकत सुख नहिं बरणि सिराई ॥

❀ बधाई पद ५२५ ❀

बधाई गावती मृगनैनी ।
भरी प्रमोद मातु हिय हर्षत गान करत पिक बैनी ।
मन भावती निछावरि पावति नाऊ भाट नटैनी ॥
विप्र दान ले देत अशीशैं अगणित वर्ष जियैनी ।
जानकि जीवन जन्म बधाई मन की आस पुरैनी ॥

❀ फूलवंगला पद ५२६ ❀

निरखों छवि सजनी फुलबंगला में दोउ आज विराजे छे ।
पिया श्याम शरीर सुहावन छवि मन्मथ कोटि लजावन ।
सिय विधु वदनी अवलोकि के सब विबुध वधू हर्षावे छे ॥
इत कली खिली है बेली उत स्वामिनि सिया नवेली ।
किये पुष्प शृङ्गार मुदित मन सबही गावे छे ॥
दोऊ दिशि चलत फुहारे केवड़ा जल इत्रन वारे ।
शीतल मन्द समीर से हिम रितु दर्शावे छे ॥
हैं किये मलय तन लेपन झीने हैं वसन अनूपम ।
प्रियतम तन उड़त सुगन्ध सों हिय हर्षावे छे ॥
सुमनों की खड़ी अली हैं कर लीने विजन छड़ी हैं ।

दम्पति रूप विलोकि के कोउ वर्णत पार न पावे छे ॥
छबि जानकि जीवन निखें सुर सुमन व्योम से वर्षे ।
प्रिय रूप सुधा अवलोकि के सब जय २ कार सुनावे छे ॥

❀ होली पद ५२७ ❀

श्याम के फागुन में कुछ औरहि भाव लखात ।
कञ्चन की पिचकारी लीने युवतिन सों अठिलात ॥
सिय के संग सु भरी उमंगन अगणित सखी सुहात ।
पकरि लाल को लली बनावो चहुदिशि ध्वनी सुन त ॥
ले गुलाल कर मलहु कपोलन निरखि २ मृदु गात ।
रङ्ग उड़ावति फगुआ गावति कोकिल कन्ठ सुहात ॥
गोर वरन श्री जनक नन्दिनी रघुबर श्याम लखात ।
देव सुमन बर्षावत हर्षत आनन्द उर न समात ॥
जानकि जीवन जनक लली के पग परसत हर्षात ॥

❀ वंसत पद ५२८ ❀

निरखो ए अवध छैल का दरबार बसन्ती ।
दम्पति के अङ्ग अङ्ग में शृङ्गार बसन्ती ॥
साजे वसन विभूषण बैठे बने ठने ।
कुन्डल सु मुकुट सिर पै उर हार बसन्ता ॥
मुद मोद भरे दोऊ बैठे बसन्त कुन्ज ।
लीने सखी सहेली सब सौज बसन्ती ।

छबि जात नहीं वर्णी ए जानकी जीवन ।
वर्षत प्रसून सुरगन हर बार बसन्ती ॥

❀ होली पद ५२९ ❀

सुघर सलोने श्याम ऐसी होली मचाई ।
कन्चन की पिचकारी लीने संग सखा समुदाई ॥
अबिर गुलाल भरे झोलिन में केशर रङ्ग उड़ाई ।
खड़े सब साज सजाई० सुघर सलोने० ॥
सिय के संग अली अलबेली उर उमंग अधिकाई ।
रघुबर ऊपर रंग छांड़ि के देत अबीर उड़ाई ॥
हँस सब ताल बजाई० सुघर सलोने श्याम०॥
उत हैं श्याम लली संग सहचरि होली धूम मचाई ।
पकरि लाल के गालन ऊपर देत सु चिन्ह बनाई ॥
नैन सो नैन मिलाई० सुघर सलोने श्याम०॥
जानकि जीवन अनुपम झांकी छबि वर्नी नहिं जाई ।
मुख अवलोकत लेत बलइया कन्ठ सो कन्ठ मिलाई ॥
मनो नई सम्पति पाई० सुघर सलोने श्याम०॥

❀ होली पद ५३० ❀

अवध छैल रघुराई आज मोसे करत ढिठाई ।
मैं सखियन संग जाति अचानक घेरि लियो मोहि आई ।
मुख पर मलत गुलाल पकरि कर सिर से चुनरि भिजाई ।

खूब झकझोर मचाई- अवध छैल रघुराई०॥
सिय जू सैन दई सखियन को झुन्ड २ उठि धाई ।
पकरि लाल को लली बनावो कटि लहँगा पहिराई ॥
उरन कन्चुकी सुहाई-अवध छैल रघुराई०॥
हँसि हँसि प्यारे नाचत गावत भूलि गई ठकुराई ।
स्वामिन जू के पांयन परि के अमित अशीशैं पाई ॥
नहीं सुख वर्णि सिराई-अवध छैल रघुराई०॥
जानकि जीवन रूप निरखि के रति पति कोटि लजाई ।
देव सुमन वर्षावत हर्षत सुख शोभा अधिकाई ॥
महा मुद मंगल छाई-अवध छैल रघुराई०॥

❀ पद ५३१ ❀

होरी खेलत दोऊ बीर री प्राणन के प्यारे ।
कन्चन की पिचकारी लीने फेंट गुलाल अबीर री ।
जोवन मतवारे-होरी खेलत दोऊ बीर री०॥
रङ्ग भरे नवल किशोर किशोरी हरत हिये की पीर री ।
खंजन दृगवारे-होरी खेलत दोऊ बीर री०॥
कनक भवन में फाग मची है गौर सु श्याम शरीर री ।
रति पति मदहारे-होरी खेलत दोऊ बीर री०॥
मलत गुलाल परस्पर गातन छबि लखि होत अधीर री ।
दृग टरत न टारे-होरी खेलत दोऊ बीर री०॥
मद भरे नैनन सैन चलावत बेधत सकल शरीर री ।

लोचन अनियारे- होरी खेलत दोऊ बीर री०॥
जानकि जीवन छबि अति बांकी रसिक सजीवन मूरि री ।
चित चोरनि हारे-होरी खेलत दोऊ बीर री०॥

❀ होली पद ५३२ ❀

घोरि २ घोरि रंग गोरी २ सखी लिये,
गोरे २ हाथन सुरंग रंग छाड़ती ।
नवल नवेली अलबेली गुन रूप वाली,
अबिर गुलाल लाल गालन लगावती ।
अवध किशोर चित चोरन को धरि सखि,
आली बहु हंसि २ नाच सु नचावती ।
चंचल चपल कर कंजन पै कर धरे,
पूरी मन कामना सहेली गीत गावती ॥
पुलकित गात अति हर्ष न समात हिये,
जानकि जीवन लखि लखि गुन गावती ।

❀ होली पद ५३३ ❀

लाल के गाल गुलाल लगी ।
प्रमदा प्रमुदित रूप विलोकत अतुल अनूप छबी ।
जुगल नवल वर होली खेलत अति अनन्द उमंगी ॥
अरस परस दोउ रंगे जंग में सखी सब प्रेम पगी ।
जानकि जीवन छबि अवलोकत मैन रती सु लजी ॥

❀ होली पद ५२४ ❀

दम्पति खेलत होरी उमंगि दुइ चन्द मनो री ।
शरद मयंक छबी रघुवर की विधु वदनी सिय मोरी ।
लपटत झपटत अबिर लगावत उर में उमङ्ग न थोरी ॥
करते हैं चित की चोरी- दम्पति खेलत होरी० ॥
प्रेम प्रमोद छिनहि छिन बाढ़त नवल रंगीली जोरी ।
केशर रंग भरी पिचकारी अबिर गुलाल की झोरी ॥
सखो संग सोहत गोरी- दम्पति खेलत होरी०॥
कोकिल वैनी सुमुखि सुनयनी लालन कर पकरो री ।
नाच नचावत फगुआ गावत सुख समुद्र उमड़ो री ॥
लाज मर्याद सु तोरी- दम्पति खेलत होरी०॥
जानकि जीवन जुगल रूप पर लाजत काम करोरी ।
लीजे निरखि नैन भरि जोरी अतुल अनूपम जोड़ी ।
प्राण धन जीवन मोरी- दम्पति खेलत होरी०॥

❀ बधाई पद ५२५ ❀

आंगने में बधइया बाजे ।
नृप विदेह अरु रानि सुनयना भूषण बसन लुटावने में ।
बधइया बाजे, आंगने में बधइया बाजे ॥
अगणित मृगनैनी पिकवैनी प्रेम प्रमोद सों गावने में ।
बधइया बाजे, आंगने में बधइया बाजे ॥
न्योछावर ले जनक लली की अति बड़ि भाग सराहने में ।

बधइया बाजे, आंगने में बधइया बाजे ॥
जानकि जीवन हिय में हर्षित देव सुमन वर्षावने में ।
बधइया बाजे, आंगने में बधइया बाजे ॥

❀ होली पद ५३६ ❀

नई सखियां खेलन लागी होरी ।
मृग लोचनि गुन रूप आगरी,
मृदु विहंसनि वय थोरी ।
कर कञ्चन पिचकारी लीने, केशर को
रङ्ग घोरि लाल के ऊपर छोड़ी ॥
सिय अलवेली संग नवेली,
अबिर गुलाल की झोरी ।
पकरि लाल के गालन ऊपर,
मलत गुलाल सु गोरी हिये में उमङ्ग न थोरी ॥
कनक भवन में भीर सखिन की,
चहुँ दिशि रंग मचोरी ।
पगे प्रेम में फगुआ खेलत,
घन दामिनि जोरी सखी संग सहित गोरी ॥
जानकि जीवन लखि सुर मोहे,
उर अनुराग बढ़ोरी ॥
चढ़े विमान पुष्प वर्षावत,
कहि जय जनक किशोरी खड़ी सुरतिय कर जोरी ॥

❀ बधाई पद ५३७ ❀

जन्म लियो रघुरइया अवधपुर बाजै बधाई ।
अति आनन्द उमंगि दशरथ नृप बहु द्विज देव बुलाई ।
धेनु वसन मनि मानिक मुक्ता देत दान मन भाई ।
बढ़्यो उछाह नारि नर हर्षित पुर प्रमोद अधिकाई ।
भरी अनन्द मातु सब निरखत हिय में सुख न समाई ॥
प्रमदा प्रमुदित नाचत गावत सुख नहिं वरनि सिराई ।
विबुध विमान चढ़े अवलोकत सुमन बृष्टि झरि लाई ॥
जानकि जीवन शोभा वर्णत शेशहु मन सकुचाइ ।

❀ झांकी पद ५३८ ❀

गोरी २ गोरी नारि घोरि २ रंग लिये,
चाल मद मतवाले झुन्ड २ झूमती ।
कोई सखी संग लिये गर्व गुमान किये ।
अलिन समाज सुधि बुधि सब भूलती ॥
सखियां उमंग भरी लाल कर कन्ज धरि ।
ललित कपोलन गुलाल है सु छोड़ती ॥
कञ्चन की पिचकारी नवल नवेली लिये ।
जानकि जीवन उमंगि २ गजगामिनी है गावती ॥

❀ झांकी पद ५३९ ❀

किशोरी तेरी समता को नहिं और ।
तव मुख कंज भ्रमर रघुनन्दन बन्धे प्रेम की डोर ।

कृपा विलोकनि निशदिन चाहत ताते करत निहोर ॥
उमा रमा ब्रह्माणी आदिक सभी खड़ी कर जोर ।
सन्त जनन की इष्ट देवता रसिकन की सिर मौर ॥
शरद चन्द्र चांदनी मनोहर छिटकि रही चहुँ ओर ।
प्रेम प्रमोद भरी अलबेली दम्पति के दुहुं ओर ॥
नाचति गावति सुख उपजावत राग रागिनी शोर ।
नूपुर पायल की धुनि प्यारी मुनियन के चितचोर ॥
विवुधतिया नभ चढ़ी विमानन सुमन वर्षि चहुँ ओर ।
जानकि जीवन रूप अनूपम रति मन्मथ मद छोर ॥

❀ पद ५४० ❀

सीते सीते कहिये रे मन ।
जनक सुता जग जननि जानकी पद पङ्कज को गहिये ।
चंपक वर्णी रघुवर प्यारी कृपा दृष्टि नित चहिये ॥
महिमा अमित रूप को वर्णे छबि विलोकि सुख लहिये ।
दुख दरिन्द्र संताप दूर करि सुख समुद्र में बहिये ॥
जानकि जीवन चरण शरण गहि पाप पुंज सब दहिये ॥
रे मन सीते सीते कहिये ॥

❀ पद ५४१ ❀

प्रिया की मन्द मुसकन को सु प्यारे जू निरखते हैं ।
विलोकत कंज मुख हरदम न टारे पलकें टरते हैं ॥
सिया जू के नवल तन पर वसन भूषन की छबि न्यारी ।

करेगा कौन छबि वर्णन जो दम्पति ही विहरते हैं ।
अनेकों शहचरी इतउत खड़ी करजोर मुख निर्खें ॥
दृगन की कोर लखि २ के हिया में मोद भरते हैं ।
वदन सुन्दर मनोहर है मुकुट अरु चन्द्रिका प्यारी ।
मनो दामिन की दमकनि में नवल तन छबि छहरते हैं ॥
बसालो जानकी जीवन अनूपम छबि सुप्यारे की ।
छटा अद्भुत जुगल छबिकी मदन रति को निदरते हैं ॥

❀ पद ५४२ ❀

सीताराम सीताराम सीताराम कहिये,
जाहो विधि राखे प्रभु ताही विधि रहिये ।
सीताराम मुख में तुलसी माला हाथ में,
काहे को तू सोच करे प्रभू तेरे साथ में ।
कर्म को प्रधान जान दुख सुख सहिये,
जाही विधि राखे प्रभु ताही विधि रहिये ॥
दारुण अविद्या में अहंकार आयेगा,
हरिपद विमुख सदा ही दुख पायेगा ।
निज कर्तव्य जानि श्रुति पथ गहिये,
जाही विधि राखे प्रभु ताही विधि रहिये ॥
जीवन का भार सौंपो सीतापति हाथ में,
भवन में राखे चाहे बाहर में वास दें ।
निर्विवाद प्रभुको आनन्द सिन्धु कहिये,

जाही विधि राखे प्रभु ताही विधि रहिये ॥
एक गति रामचन्द्र नाही जानो देवबृन्द,
सतसंग सुखकंद पीजिये पीयूष बुन्द ।
जानकी जीवन सदा पद रति चहिये,
जाही विधि राखे प्रभु ताही विधि रहिये ॥
सीताराम सीताराम सीताराम कहिये,
जाही विधि राखे प्रभु ताही विधि रहिये ॥

❀ पद ५४३ ❀

सीते २ सीते २ सीते २ कहिये ।
जाही विधि राखे सिया ताही विधि रहिये ॥
मुख में किशोरी नाम सेवा सौंज हाथ में ।
प्रमुदित राजें बहु सखी संग साथ में ॥
आपनी स्वामिनी जानि प्रेम पन्थ गहिये ॥जाही विधि०
हुई यदि भूल तो पीछे पछतायेगा ।
आखिर होगा वही जो किशोरीजी को भायेगा ॥
स्वामिनी कृपा के बल सब सुख लहिये । जाही विधि०
जीवन को सौंप दीजै जानकी के हाथ में ।
महल टहल देवे चाहे राखे साथ में ॥
प्रेम सों उमङ्ग भरि सीते २ कहिये ॥जाही विधि०
आसा एक स्वामिनी की दूजी आसा छोड़ दे ।
नाता श्रीकिशोरी जी का दूजा नाता तोड़ दे ॥

सिय जू के नाम से दारिद दुख दहिये ।
जाही विधि राखे सिया ताही विधि रहिये ॥

❋ पद ५४४ ❋

हे स्वामिन जनक लली मेरी,
जरा याद प्रभू को दिला देना ।
तव दर्शन हेत है दर पै पड़ा,
सो कृपा करके बतला देना ॥
अधमी अघराशि अलायक हूं,
पर एक सहारा तेरा है ।
कितने पतितों को तार दिया,
मुझको भी उन्हीं में मिला देना ॥
नहिं आस किसी की दिल में है,
ले नाम उदर को भरता हूँ ।
अगणित अपराधों हूं जो भरा,
सिय स्वामिन सो विसरा देना ॥
गनिका गज गीध को तारा है,
गोतम की नारि उधारा है ।
उन चरनों की रज को,
इस दीन के शीश गिरा देना ॥
सेवरी के फल को खाये हैं,
केवट से पैर धुलाये हैं ।

उस करुणा कृपा दया की नजर,
मुझ पर भी तो दिखला देना ॥
जानकि जीवन पापी हूं बड़ा,
तव विरद जानि द्वारे हूं पड़ा ।
हूँ निलज सभी पतितों से बड़ा,
यह जान नहीं ठुकरा देना ॥

❀ पद ५४५ ❀

पाप से भरा शरीर नाथ मोहि कैसे तारोगे ।
गनिका गीध अजामिल तारे तारे यवन आभीर ।
मैं हूं महा अधम अपराधी सुनिये श्री रघुवीर ॥
नाथ मोहि कैसे तारोगे०॥
जो करनी समुझो प्रभु मोरी पचि पचि मरों सही ।
पतित उधारन नाम श्रवण सुनि हिया कछु धीर धरी ॥
नाथ मोहि कैसे तारोगे०॥
गौतम नारी रही पापमय ह्वै पाषाण परी ।
पद रज परसि छिनक में तारी गई पति लोक हरी ॥
नाथ मोहि कैसे तारोगे०।
कहँ लगि कहौं कुचाल आपनी तुम जानत सबरी ।
जानकि जीवन किरपा कीजे त्रिभुवन यश बगरी ॥
नाथ मोहि कैसे तारोगे०॥

❀ पद ५४६ ❀

सांवरिया के नयना बड़े कजरार ।
प्रेमी जन को सुख उपजावत मदन मोहनी डार ।
चितवनि चारु जहर की बोरी बंक भृकुटि रिझवार ॥
जाके लगत चैन नहिं पावत बहत दृगन से वारि ।
नख सिख सुन्दर मधुर मनोहर रूप अनूप अपार ॥
कृपा कोर से जेहि तन हेरत तुरत करत भव पार ।
जानकि जीवन कहँ लगि वर्णों सब गुन के आगार ॥

❀ पद ५४७ ❀

मेरे मन मृग को मोह लिया सरकार तुमारे नयनों ने ।
कुछ जादू सा है डार दिया सरकार तुमारे नयनों ने ॥
मन मोहनि प्यारी मूरति पे बलिहारी जाऊं सूरत पे ।
वश में करके बेहाल किया सरकार तुमारे नयनों ने ॥
मनिमाल गले में प्यारी अँखियां प्यारी कजरारी ।
तिरछी चितवन से मार दिया सरकार तुमारे नयनों ने ॥
बिन देखे पड़ता चैन नहीं अरु मुख से आते बैन नहीं ।
दिल के अन्दर में घाव किया सरकार तुमारे नयनों में ॥
जानकि जीवन क्यों तरसाते कुछ ध्यान नहीं जिय लाते ।
है कितनों को बेजार किया सरकार तुमारे नयनों में ॥

❀ पद ५४८ ❀

किशोरी मेरी सब सुख की आगार ।

ललित लुनाई सुन्दरताई नयन नवल रतनार ।
करुणा कृपा दया की मूरति सखियन की सरदार ॥
सारे जग की पालनहारी सुख सम्पति दातार ।
मोसे पतित अनेकन तारे वेद पुराण पुकार ॥
देववधूगन छबि अवलोकहि करि तन मन बलिहार ।
जानकि जीवन रूप अनूपम वरणि सके को पार ॥
चरन कमल को हृदय बसाकर हो जाओ भव पार ॥

❀ झपताल १० मात्रा पद ५४९ ❀

गोरी २ गोरा सखि सांवरे के संग सोहै ।
नृत्य गान करे मुनि जनन के मन मोहे ॥
गलबांही दीन्हे प्यारी प्यारे प्यारी मुख जोहै ।
सुकृत सराहै लाल सुख उपजो है ॥
जानकि जीवन छबि वर्णत शेश सकुचो है ॥

❀ पद ५५० ❀

बिन मोल सभी बिक जाते हैं सरकार तुमारे बैनों में ।
क्या मन्त्र वशीकर सीखा है सुन्दर प्रिय मीठे बैनों में ॥
घुंघुराले कच सुन्दर कपोल ऊपर से वदते मधुर बोल ।
बलिहार सभी हो जाते हैं सरकार तुमारे बैनों में ॥
क्या भृकुटि वंक नयना बिशाल उर में शोभित है मणिमाल ।
जुल्फें लखि के बेजार हुआ सरकार तुमारे बैनों में ॥

प्रिय भुज विशाल सुखमा की सीव,
अरु सुन्दरता मुख की अतीव ।
छबि निरखि सभी फँस जाते हैं सरकार तुमारे बैनों में ॥
है श्याम अङ्ग पर बसन पीत,
मन्मथ की छबि को लियो जीत ।
निरखंत पागल बन जाता है सरकार तुमारे बैनों में ॥
हैं फूल वर्षते बिवुध बृन्द,
कहि जय २ दिनकर कुमुद चन्द ।
भव दुस्तर से तर जाते हैं सरकार तुमारे बैनों में ॥
जानकि जीवन महिमा अपार,
वर्णत शारद हू गई हार ।
अद्भुत महिमा बतलाते हैं सरकार तुमारे बैनों में ॥

❀ पद ५५१ ❀

क्यों नाथ इस पतित पर नहिं ध्यान हो रहा है ।
अपनी दशा के ऊपर हर बार रो रहा है ॥
होकर अधम उधारन करना न फिर दया ।
मेरे लिये ए क्यों कर अन्धेर हो रहा है ॥
तव नाम सुन के रघुबर आया हूं द्वार पर ।
सुनते नहीं हो कुछ भी बहु बेर हो रहा है ॥
गज गीध को उधारा आगम निगम कहै ।
कोमल हृदय निठुर क्यों मम ओर हो रहा है ॥

तारो चाहे न तारो इच्छा है आपकी ।
बाना पतित उधारन कमजोर हो रहा है ।।
डरते हैं पापियों से अब जानकी जीवन ।
सारे जगत के अन्दर यह शोर हो रहा है ॥

❀ पद ५५२ ❀

किया ललित शृङ्गार सखिन ने किया ललित शृङ्गार ।
सबके चित चोरन हार सखिन ने किया ललित शृङ्गार ॥
क्रीट चन्द्रिका मुकुट मनोहर मुक्ता मणि को हार ।
भांति २ के वसन विभूषण शोभा अमित अपार ॥
अतुल अनूपम छटा माधुरी मन्मथ लाजनि हार ।।सखि०
भृकुटी वंक नैन रतनारे चितवनि जादू डार ।
सुन्दर चिबुक नासिका मोती दम २ दमकनि हार ॥
जुल्फे प्यारी छुटी कपोलन हिय बिच कसकनि हार ।।सखि०
सखि बहु सुमन माल पहिरावत रूप अनूप निहार ।
कोकिल अरु मृगननी करि तन मन बलिहार ।।
सुखमा सदन वदन अति सुन्दर शोभा छवि आगार ।।सखि०
देव सुमन वर्षावत हर्षत बोलत जय २ कार ।
तन मन वारत लेत बलइया सखि सब रही निहार ।।
जानकि जीवन शोभा वर्णत शेश न पावत पार ।
सखिन ने किया ललित शृङ्गार ।।

❀ पद ५५३ ❀

प्यारे तेरी मुसकनि पै जाऊँ बलिहार ।
तीखे नैना मीठे बैना घूँघर वाले वाल ।प्यारे तेरी०॥
क्रीट मुकुट मकराकृत कुन्डल मुक्ता मणि की माल ।
सुन्दर चिवुक नासिका मोती शोभा अमित अपार ॥
बसन विभूषण भांति २ के जगमग जोति अपार ।
मृदु मुसकात दिये गलबांही लाजत कोटिन मार ॥
सुमुखि सुनयनी नाचति गावति प्रेम को नहीं सम्भार
नख सिख सुन्दर मधुर मनोहर त्रिभुवन के शृङ्गार ॥
जानकि जीवन शोभा वर्णत शेश न पावत पार ।
देव सुमन वर्षावत हर्षत बोलत जय २ कार ॥

❀ पद ५५४ ❀

किशोरी जी की पद रज सब सुख खानि ।
शिव ब्रह्मादि आदि सुर नर मुनि निशदिन करत बखान ।
शेश शारदा वर्णत थाके वेद करत बहु गान ॥
अधमी जन जेहि शीश धारि के पावत पद निर्वान ।
जन्म जन्म के पातक नाशत मङ्गल मोद निधान ॥
अति दुस्तर संसार तरन को चरन कमल सुख दान ।
जानकि जीवन जनक लली को धरत सदा हिय ध्यान ॥

❀ पद ५५५ ❀

क्या जादू सा कुछ भरा हुवा सरकार तुमारी जुल्फों में ।

छबि निरखि तुरत बेजार हुआ,
सरकार तुमारी जुल्फों में ॥

श्री अवध छैल मस्ताना मैं तुम पर हुआ दिवाना ।
हूं सब जग में बदनाम हुआ,
सरकार तुमारी जुल्फों में ॥

छुटी अलक कपोलन न्यारी भृकुटी है वंक निराली ।
छबि रूप सुधा की प्याली है,
सरकार तुमारी जुल्फों में ॥

तुम मन्द मन्द मुसकाते हो दिल के अन्दर घुस जाते हो ।
जहरो अमृत है भरा हुआ,
सरकार तुमारी जुल्फों में ॥

छबि प्यारी प्यारी अनुपम मुझे याद है आती हरदम ।
तन मन सब कुछ है वार दिया,
सरकार तुमारी जुल्फों में ॥

करि कृपा जल्द अपनावो जानकि जीवन नहिं तरसावो ।
सब कुछ है मैंने वार दिया,
सरकार तुमारी जुल्फों में ॥

❋ पद ५५६ ❋

सियराम भजन नहिं करता है,
फिर अन्त समय पछतायेगा ।

भवसागर के इस मोह जाल में फँस २ के मर जावेगा ॥
लड़काई खेल गँवाई मद मस्त जवानी आई ।
मन मानी मौज उड़ाई जो २ तिरिया को भायेगा ॥
कमजोर बुढ़ापा आया जो देख हिये घबराया ।
कुछ काम नहीं कर पाया फिर घर में किस को भायेगा ॥
सिर हिलता काम न करता मुख से अटपट ही निकलता ।
बेटा बबुआ कह कर दिन रात यों ही मर जायेगा ॥
अब भी चेतो हरी भजलो मन से ही सुमिरन करलो ।
प्रभु कृपा दया के सिन्धू हैं सब दुख तेरा मिट जायेगा ॥
लखि दशा है फटती छाती मांगे से मौत न आती ।
दिन रात सोचते रहते हैं जमदूत कभी ले जायेगा ॥
इस जग से मन को मोड़ो दुनिया का नाता तोड़ो ।
जानकि जीवन शरणागत हो भव दुस्तर से तर जायेगा ॥

❀ ध्रुपद पद ५५७ ❀

नौका में विहरत सियवर पावत आनन्द जुगल वर ।
चम्पक वर्णी श्री जानकी श्याम वदन श्री रघुवर ॥
दृगन दृगन सो उरझि रहे हँसि गलबांही दीन्हे प्रियवर ।
जानकि जीवन प्रेम भरे लाजत मद मन्मथ कर ॥

❀ झपताल पद ५५८ ❀

आज जुगल वर नौका में विहरत,
सरजू मुदित मन लहर सु लहरत ।

राम तन श्याम छवि सिया दुति दामिनी ।
मानो घन मध्य चपला सी चमकत ॥
नवल नवेली अलबेली सखि अगणित ।
दम्पति छटा देखि हिय में सु हर्षत ॥
जानकि जीवन विमल विहार लखि ।
विबुध विमान चढ़े सुमन सु वर्षत ॥

❀ ३ ताल पद ५५६ ❀

सरजू मध्य ललित नौका पर दम्पति छबि नहिं थोर री ।
अगणित अली दोउ दिशि शोभित,
गान करत बहु जोर री ॥
वसन विभूषण मनिमय राजत,
जगमग जोति अंजोर री ।
प्राण प्रिया को मुख अवलोकत,
सुधि नहिं सांझ सु भोर री ॥
जानकि जीवन झांकी अनुपम,
लाजत काम करोर री ॥

—❀—

❀ श्रीजानकी जीवन पदावली सम्पूर्ण ❀

16685

पुस्तक प्राप्ति स्थान—

श्री लालसाहब का दरबार

श्री कनक भवन, अयोध्या जी।

मुद्रकः—
श्रीसीताराम प्रेस, अयोध्या।